परस्परोग्रहो जीवानाम्

मेवाड़ के जैन तीर्थ-3

(भीलवाड़ा जिला एवं रणकपुर मंदिर)

Mewar ke Jain Tirth Part III

The Jain Pilgrim Centres of Mewar

संकलन, लेखन एवं सम्पादन
मोहनलाल बोल्या

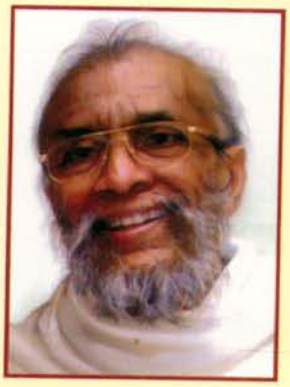

मेवाड़ की धरती शुरवीरों और धर्मवीरों की धरती है..... भामाशाह और राणा प्रताप ने इस धरती की शान बढ़ाई है तो मेवाड़ में स्थापित प्राचीन तीर्थमालाओं, अतिप्राचीन तीर्थो एवं प्रभावक प्रतिमाजीओं ने इस धरती को विश्व की एक अनुठी धरोहर बनाई है...

यह पुस्तक के माध्यम से साधु-साध्वी व यात्रियों को ऐतिहासिक जानकारी मिलेगी, साथ-साथ एक सफल मार्गदर्शिका का भी कार्य करेगी।

आओ, इस ग्रंथ के जरिऐ मेवाड़ के तीर्थस्थलों की भावयात्रा कर जीवन को धन्य धन्य बनाऐं

आचार्य हेमचंद्र सूरि

आचार्य विजयहेमचंद्रसूरीश्वर
जी म.सा.

मेवाड़ के जैन तीर्थ
भाग 3

।। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्री कुकड़ेश्वर पार्श्वनाथाय: नमः ।।

संकलन, लेखन एवं सम्पादन

मोहनलाल बोल्या

37, शांति निकेतन कॉलोनी, बेदला-बड़गांव लिंक रोड़, उदयपुर-313011 (राजस्थान)

फोन : 0294-2450253, मो. 94613 84906, वेबसाईट : www.mewarjaintemple.com

प्रकाशक :
श्री सीमंधर जिन आराधक ट्रस्ट,
अंधेरी, मुम्बई

संकलन, लेखन एवं सम्पादन :
श्री मोहनलाल बोल्या
37, शांति निकेतन कॉलोनी,
बेदला-बड़गांव लिंक रोड़, उदयपुर (राज.)
दूरभाष : 0294-2450253,
मोबाइल : 94613 84906
वेबसाईट : www.mewarjaintemple.com

सह सम्पादक :
श्री हरकलाल पामेचा
देलवाड़ा, जिला राजसमन्द (राज.)
दूरभाष :
मोबाइल : 94685 79070

सर्वाधिकार सुरक्षित :
लेखक के अधीन

संस्करण :
सन् 2012

डिजाईनिंग :
वेव ग्राफिक्स, उदयपुर
मो. 9829244710

मुद्रक :
परम ग्राफीक्स, मुंबई.
मो. 9892045229 / 9222244223

श्री केशरिया जी तीर्थ (ऋषभदेव)

श्री सरस्वती देवी (नेपाल)

समर्पण

सभी आचार्य प्रवर के जीवन को पढ़ा, देखा व सुना उनकी सौम्य मूर्ति को यह ग्रन्थ समर्पण

प.पू. सिद्धान्तमहोदधि आचार्यदेव
श्रीमद् विजयप्रेमसूरीश्वरजी महाराज

प.पू. मोक्ष मार्ग के सच्चे सारथी आचार्यदेव
श्रीमद् विजयभुवनभानु सूरीश्वरजी महाराज

प.पू. समतासागर पन्यास प्रवर
श्री पद्मविजयजी गणिवर्य

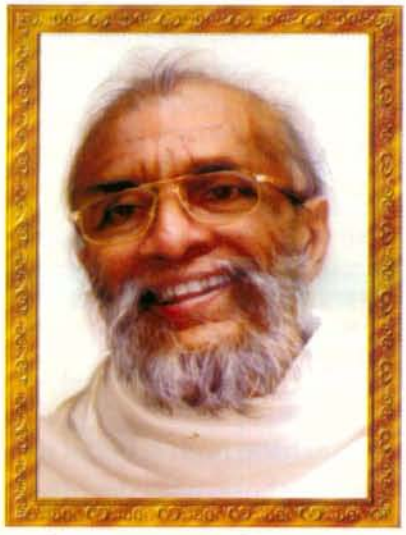

प.पू. प्राचीन आगम शास्त्रोद्धारक आचार्यदेव
श्रीमद् विजय हेमचंद्रसूरीश्वरजी महाराज

PREFACE

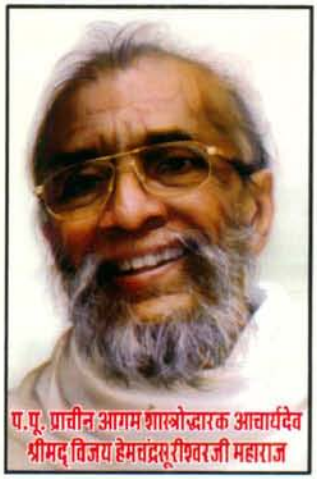
प.पू. प्राचीन आगम शास्त्रोद्धारक आचार्यदेव श्रीमद् विजय हेमचंद्रसूरीश्वरजी महाराज

Dharmalabha....We are A. Hemchandrasuriji M.S. often ask yourself three questions. "Who we are ? Why we are ? Why we are alive ?" We are alive because God has a purpose for us. we all have to perform our duty. Once we decide what our duty is we must do it diligently. Doing our duty gives us tretisamendous satisfaction. After all life is gift from God. What we do this is a gift back to him.

There are two kinds of people in this world. Those who don't do their duty and the others who do only their duty. Every minute is a gift from God. It is a truth so true that life is trust made up of little minutes and it is up to us to make the best use of each minute. By making the best use of minutes. You can make a lot of money. but with all the make that you cannot creat a single minute.

We can't back to go yesterday which has gone for ever. The past can never be regained but the present is in our hand. Every minute belongs to us and if we think of it as a valuable gift. We can make the best of it. Every minute is valuable. so do good deeds & necessary things. Don't waste a single minute doing unnecessary things. Every minute is meant to help us or help others. Spend a minute motivating somebody to live a better life. Minutes cannot be deposited like money in the bank. The only way is to manage time well and use it well.

Man's great tragedy is that he things he has plenty of time. In fact we should have a time management sheet to ensure that we don't waste a single minute. Each day is a gift. Make the best of it. Be faithfull, faith must be uncovering faith gives us power. confidence and courage to take risk. Faith is born out of a strong connection with the super power or the universal power whom we call God. Our belief in God creates faith and this faith gives us strength. Faith enables all things possible and eliminates the word impossible from our vocabulary. Faith brings us closer to God. It strengthens us to face life, to face word, the problems and turbulence that life brings. Faith makes God our partner, we should have faith in our faith and doubt our doubt. some people who talk about faith, They ask for proof, quote to them "When proof is possible then faith is impossible." What it means is that once you have a doubt and you seek proof then there is no place for faith.

Faith is belief – acceptance and acknowledgement of a universal power. Look around you look at he sun, the moon, the stars, the birds, the animals and the flowers. Who made them all ? somebody has made them..... who is that somebody ? he is the master of the universe, we should have faith in this master. It is faith that gives us success and leave no room for doubt.

Build your life on the rock of faith.....

Hence we should have faith & belief in worship of God

Thanks to all those who devote their whole life for the betterment of mankind or humanity.

आचार्य हेमचंद्र सूरि

(Acharya Hemchandra Suri)

ग्रंथ के द्रव्य सहायक

प. पू. प्राचीन आगम शास्त्रोद्धारक
वैराग्य देशना दक्ष आचार्य देव श्रीमद् विजय
हेमचंद्रसूरीश्वरजी महाराज

एवं

आचार्यदेव श्रीमद् विजय
कल्याणबोधि सूरीश्वरजी महाराज

की प्रेरणा से

श्री सीमंधर जिन आराधक ट्रस्ट

अंधेरी (ई, एमरल्ड एपार्टमेन्ट), मुम्बई

ने

ज्ञाननिधि से पूर्ण लाभ लिया।

ट्रस्ट की हम भूरि- भूरि अनुमोदना करते हैं

खूब खूब अनुमोदना

आचार्य विजयकल्याणबोधि सुरीश्वर जी म.सा. की ओर से संदेश

धर्मप्रेमी मोहनलालजी बोल्या

जोग धर्मलाभ ।

सभी महात्माए सुखसाता में है आपने भीलवाड़ा के सभी जिन मंदिरो का सर्वे किया..... कहां कितने मंदिर है ? मंदिर में कितनी प्रतिमाएं है ? कौनसी साल का लेख है ? मंदिर कितना प्राचीन है ? मंदिर की एतिहासिक गरिमा एवं विशेषताएं क्या है ? प्रभावकता क्या है ? आज की परिस्थिति क्या है ?

प्राचीनकाल में राणकपुर तीर्थ भी मेवाड़ का एक अभिन्न अंग था । इसलिए आपके ऐतिहासिक, कलात्मक मंदिर का भी वर्णन कर मेवाड़ के सभी तीर्थो (मंदिरों) का वर्णन कर मेवाड़ के मंदिरों का इतिहास का रचना कार्य किया है।

आपने स्वयं गांव गांव में जाकर सुक्ष्म अवलोकन किया व संशोधन किया। इस उम्र में इस प्रयत्न हेतु साधुवाद के पात्र है जैन धर्म के प्राचीनतम एवं भव्यतम इतिहास के प्रति आपकी जो बहुमुल्य श्रद्धा है उसका ही ये फल है।

आज के दायरे में ये कार्य जरूरी भी है। गाँव खेड़े में जैनियो की बस्ती दिन प्रतिदिन कम होती जा रही है। मंदिरो में चोरी की घटनाएं घटती है धातु की मूर्तियां सोने की समझ कर चोरी हो जाती है ऐसे समय में यदि हमारे पास कोई लेख या कोई प्राचीन पुरावा हो तो हम कार्यवाही कर सकते हैं । अतः हर राज्य के, हर जिले के, हर मंदिर का सुरक्षात्मक संशोधन जरूरी है। यह संशोधन पुस्तक एवं फोटोग्राफी के जरिए, विडियोग्राफी के जरिए, संघ के अनुज ट्रस्टीगण करवा सकते हैं। आज कोई भी मंदिर के प्रमुख या ट्रस्ट को मंदिर में कितनी छोटी बडी प्रतिमाएं है ? ये पूछने पर तुरंत सच्चा जवाब मिल सकता है क्या ? आपके ये प्रयत्न की अंतरमन से अनुमोदन करता हूँ।

कल्याणबोधि सूरि

(आचार्य विजय कल्याण बोधि सुरि)

अभिनंदन, आभार (लेखक की ओर से)

मेवाड़ राज्य का गौरव शाली इतिहास रहा है। जहां पर त्याग, बलिदान, वीरता की गौरव गाथा गाई जाती है। मेवाड़ जैन तीर्थ नामक पुस्तकों की पूर्व में प्रकाशन हो चुका है। केवल मात्र भीलवाड़ा जिला शेष रह जाता है। इतिहास के पन्नों पर रणकपुर नगर भी मेवाड़ का अभिन्न अंग रहा है। जहां पर श्री आदीश्वर भगवान का भव्य कलात्मक व मनमोहक तीर्थ है । चाहे वह वर्तमान में पाली जिले का क्षेत्र हो लेकिन इसके बिना मेवाड़ का इतिहास अधुरा रह जाता ।

ऐसी परिस्थिति में मेवाड़ का इतिहास अधूरा रह जाता इसके लिए प. पू. आचार्यश्री कल्याणबोधि सूरीश्वरजी म.सा. ने प्रेरणा दी और पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया– प्रेरणा सहयोग–उपदेश सुनकर मेरा मन प्रफुल्लित हो गया कि मेवाड़ के जैन तीर्थ जिसमें जिन देवालयों व प्रतिमाओं का वर्णन होगा मैं प. आदरणीय गुरूदेव श्री कल्याणबोधि सूरीश्वर जी मा. सा. का सर्वप्रथम अभिनंदन, वंदन करता हूं कि उन्होंने मुझे इस योग्य समझा। मैं उन सभी आचार्य, पन्यास प्रवर, मुनिराज का आभारी हूं जिन्होंने मुझे हमेशा प्रेरित किया ।

इसके बाद मैं आभार व्यक्त करता हूं जिसने मेरे स्वास्थ्य प्रतिकूल होते हुए भी उसने कभी भी इस कार्य करने के लिए ऋणात्मक रवैया नहीं बताया और यही बार बार कहा कि "भगवान के कार्य के लिए मैं किभी भी इन्कार नहीं करूंगी यह है मेरी धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला बोल्या जिसने हमेशा सकारात्मक विचारधारा रखते हुए सहयोग दिया। बार बार आभार। इसके अतिरिक्त मेरे पुत्रियों व दामाद का भी आभार प्रकट करता हूं कि उन्होंने कभी भी ऋणात्मक विचारधारा नहीं बनाई।

इसके बाद मैं आभार व्यक्त करता नहीं भूल सकता जिन्होंने मेरे कंधे से कंधा मिलाकर सहयोग दिया। वे हमेशा यहीं सोचते कि दिन में ज्यादा से ज्यादा काम किया जाए और औसत में कम होता तो मन में बहुत दुःखी होते कि आज काम कम हुआ। श्री हरकलाल जी पामेचा निवासी देलवाड़ा ये कार्य के प्रति निष्ठावान, समयबद्ध, अनुशासित सलाहकार रहे। मेरे साथ पूर्व में भी सहयोग देते रहे उनका बहुत बहुत आभार।

इसके बाद मैं आभारी हूं जिन्होंने मेरे साथ रहकर मंदिरों के अलग अलग कोण से सुंदर फोटोग्राफ लिये, वे हैं श्री महेश दवे, मौली आर्ट्स, देलवाड़ा। यह जाति के जैन न होते हुए भी देवालयों के प्रति श्रद्धा रखते है। वे भी सौभाग्यशाली है जिन्होंने मेरा सहयोग किया, बार–बार आभार। संकलन कार्य करने के लिए सर्वेक्षण मंदिर से मंदिर–गांव से गांव जाना पड़ता है। श्री दलपतसिंह दोशी ने लेखन शुद्धिकरण में सहयोग दिया । श्री श्रेणिकभाई भीलवाड़ा द्वारा प्रदत्त मंदिरों की सूची हेतु आभार । श्री प्रवीण दक, वेव ग्राफिक्स, उदयपुर ने तय समय पर पुस्तक की सुन्दर डिजाईनिंग का कार्य किया, उनका भी आभार ।

द्रव्य सहयोगी :

(1) श्रीमती सुशीला–पत्नी मोहनलाल बोल्या (लेखक)।

(2) श्री सोहनलाल जी सुराणा नि. सेवाड़ी हाल थाने मुम्बई।

(3) डॉ. विमला दोशी पत्नी डॉ. अर्जुन बाबेल, उदयपुर ।

(4) श्री रूपचंद जी पण्ड्या निवासी चैन्नई

(5) श्रीमती नीरू पत्नी श्री राजेन्द्र जी लोढ़ा (पुत्री लेखक), उदयपुर

(6) श्री पार्श्वनाथ जैन श्वेताम्बर मंदिर ट्रस्ट, बेमाली (भीलवाड़ा)

(7) श्रीमती कमलादेवी पत्नी श्री मिठालाल जी संघवी (पोरवाल), उदयपुर

(8) श्री बी.सी. जरीवाला चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित श्री श्रेयस्कर आदिनाथ जैन संघ, निजामपुरा, बड़ोदा(गुज.)

अंत में **श्री सीमंधर जिन शासन आराधना ट्रस्ट, अंधेरी, मुम्बई** द्वारा ग्रंथ प्रकाशन में सम्पूर्ण व्यय वहन करने हेतु हार्दिक अनुमोदना ज्ञापित करते हैं जिसके फलस्वरूप हम यह ग्रंथ आपश्री के हाथों में सौंप कर हर्ष का अनुभव कर रहे हैं । उनके सहयोग के बिना यह प्रकाशन संभव नहीं था । आपका खूब खूब आभार।

(मोहनलाल बोल्या)

जीवन परिचय

प.पू. आचार्यश्री कल्याणबोधि सुरीश्वर जी म.सा.

सांसारिक नाम	–	श्री केतन कुमार
जन्म तिथी	–	मुम्बई, 6 फरवरी, 1963
जन्म स्थल	–	कांदीवली
शिक्षा	–	FTJC
पिता श्री का नाम	–	श्री प्रवीणचन्द्र
माता श्री का नाम	–	श्रीमती चन्द्रा बहन
दीक्षाभूमि / तिथी	–	कांदीवली (मुम्बई) वि. सं. 2035 ज्येष्ठ सुदि 4
दीक्षा दाता	–	प. पू. आचार्य श्री हेमचंद्र सूरीश्वर जी म.सा.
दीक्षा गुरू	–	प. पू. भुवन भानु सूरीश्वरजी म.सा.
बड़ी दीक्षा तिथी स्थल	–	आषाढ़ शुक्ला 10 लाल बाग, पांजरा पोल, मुम्बई
गणिपद तिथी / स्थल / निश्रा	–	संधाणी, घाटकोपर मुम्बई प.पू. आ. श्री हेमचन्द्र सूरीश्वर जी म.सा.
पन्यास पद तिथी / स्थल	–	वि.सं. 2067 वैशाख शुक्ला 11 समा रोड़, बड़ोदरा
निश्रा	–	प. पू. आ. श्री हेमचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा.
आचार्य पद तिथी / स्थल	–	वि.सं. 2064 मिगसर शुक्ला 3 ऊँझा, गुजरात
निश्रा	–	प. पू. आ. श्री हेमचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा.
स्व शिष्य / सम्पदा	–	प. पू. श्री यश कल्याण विजय जी म.सा. प. पू. श्री भक्तिवर्धन विजय जी म.सा. प. पू. श्री कृपारत्न विजय जी म.सा. प. पू. श्री सौम्यरत्न विजय जी म.सा. प. पू. श्री नय प्रेम विजय जी म.सा. प. पू. श्री जिन प्रेम विजय जी म.सा. प. पू. श्री ज्ञान प्रेम विजय जी म.सा. प. पू. श्री हर्ष प्रेम विजय जी म.सा. प. पू. श्री धर्म प्रेम विजय जी म.सा. प. पू. श्री मुक्ति प्रेम विजय जी म.सा. प. पू. श्री भाव प्रेम विजय जी म.सा. प. पू. श्री राज प्रेम विजय जी म.सा. प.पू. तत्वप्रेम विजय जी म.सा.

प. पू. वीरप्रेम विजय जी म.सा.
प. पू. श्री भव्य प्रेम विजय जी म.सा.
प. पू. श्री निर्मल प्रेम विजय जी म.सा.
प. पू. श्री परम् प्रेम विजय जी म.सा.

विशिष्ठ तप	–	107 वीं ओली का पारणा सं. 2069 में अहमदाबाद में श्रेष्ठ प्रवचनकार, श्रेष्ठ आगम वाचना।
शुभ कार्य	–	1. आडम्बर रहित कार्य– (लाइट, माइक बिना ही धर्म महोत्सव, उद्यापन आदि) 2 मंदिर आदि स्थनों पर जीर्णोद्धार कार्य सम्पन्न कराना। 3. श्री णमोकार मंत्र प्रभाव से अनेक उपद्रवों को शांत करने की क्षमता। 4. सम–शांत–मधुर स्वभाव (क्रोध रहित)
शासन प्रभावना	–	उदयपुर (मेवाड़) में स्थानीय बेदला रोड पर स्थित साईफन चौराहा पर श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिष्ठा आचार्य श्री हेमचन्द्र सूरीश्वर जी म.सा. की निश्रा में सम्पन्न कराई।
विशिष्ठ तप आराधना	–	बाल्यावस्था में आयम्बिल तप की आराधना वर्धमान तप की 100वीं ओली का पारणा सं. 2059 में निजामपुरा बड़ोदरा में सम्पन्न हुआ।

महावीर भगवान के 11 गणधर

13 वीं शताब्दी के हस्तलिखित कल्पसूत्र के ताडपत्र में यह चित्र है।

सम्पादकीय

यह परम पुण्य योग है कि चातुर्मास अवसान पर मेरा पांचवां ग्रन्थ– "मेवाड़ के जैन तीर्थ–भाग 3" लोकार्पण का सौभाग्य प्राप्त कर रहा हूँ। जब धर्म की वाणी हमारे दिलों में वास कर रही है उसको चिरस्मृति के रूप में यह ग्रंथ आपके दिलों–दिमाग में वास करेगा ।

जिनेश्वर प्रभु की कृपामयी प्रेरणा ने ही मुझे इस कृति रचना का वरदायी सम्बल प्रदान किया है। शासकीय सेवा निवृत्ति के बाद मुझ में यह संकल्प जागा कि मैं मेवाड़ के ज्ञात–अज्ञात जैन–तीर्थों की खोज बीन के पावन–पथ पर अग्रसर होऊं और मैं चल पड़ा मेवाड़ के नगरों, कस्बों, गांवों, ढ़ाणियों, सघन वनों, मैदानों, पर्वतीय बस्तियों, नदी नीरों के दुगम स्थलों की ओर, सदियों पुराने तीर्थ क्षेत्रों की खोज में। कई बार ऐसी जगहों की टोह में मुझे मीलों पैदल चलना पड़ा, ऊबड़–खाबड़ आदिवासी क्षेत्रों की ओर जिन खाजा तीन पाइयां गहरे पानी पैठ की कहावत को फलीभूत करने की इस मुहिम को किसी अदृश्य शक्ति ने ही तीर्थ स्थल–स्थलियों तक मुझे असीम धैर्य के साथ पहुंचाया है।

दंग रह गया मैं तीर्थ देव मन्दिर धामों के अचरज भेंट जैन स्थापत्य, शिल्पों से सुसज्जित भवनों, मंडपों, गर्भग्रहों में मुँह बोलते जिन देव–देवियों की मूर्तियों कला को देखकर खोज के सफर में बारबार नमन् कर उठा, मेरा मन उन ज्ञात–अज्ञात काल चितेरों की पाषाणों में प्राण फूंकने वाली अद्‌भुत प्रतिभा मयी वास्तु कला के प्रति श्रद्धाभाव से। तीर्थ देव धामों के आदिम निर्माण, उनके निर्माताओं व शिल्पियों की खोज का यह अभियान बहुत कठिन था। बड़ा दुष्कर था शिलालेखों का पठन–पाठन का अंकन कार्य कृतज्ञ भाव से भरा है मेरा हृदय उन विद्वानों इतिहासकारों एवम् क्षेत्रीय पुराने नए भावनाशील सज्जनों के प्रति, जिनके सहयोग व मार्ग बोध के बिना मैं नहीं साध पाता। इस कृति रचना का संकल्प। इतिहास, शोध, पुरातत्व व प्राचीन लिपि–शिल्पों का ज्ञाता होने का मेरा दावा नहीं है पर अनुभव व लगन के साथ मैं मेरी कृति में जो रचना रच पाया हूँ इसको आगे बढ़ाने का काम विद्वानों का है। यह मौलिक कृति रचना प्रेरक बने भावी पीढ़ी के विद्वानों के लिए– यह मेरी भावना है।

मेवाड़ी तीर्थ स्थलों की हालातों को देख मेरे मन में पीड़ा भरी एक बात उठी जो मैं पाठकों के समक्ष पृथक से रख रहा हूं। बात यह है कि नए तीर्थों के निर्माण से अधिक सांस्कृतिक सम्पदा की रक्षा का तकाजा है कि समय रहते समाज के सुश्रावक साधु संतगण, प्राचीन जैन तीर्थों का जीर्णोद्धार कार्य कृपया हाथ में लें। काल पुकारता है कि मेवाड़ी पौध प्रोजेक्ट का संकल्प शीघ्र फलीभूत हो। प्राचीन कला–शिल्प–वास्तु का वैभव, जीर्णोद्धार काल में बरकरार रहे, तीर्थंकर देव मूर्तियों का उत्पादन (निर्माण) बिना सोचे समझे न हो। तीर्थ हमारे भाव–धर्म के आधार है।

आराधना के इस का धार्मिक उल्लेख मैंने अपनी कृति के पृष्ठ में किया है। तीर्थ देव मूर्ति रूप, शिल्पों, शिलालेखों के मूल आप सचित्र पायेंगे इस ग्रंथ में मैं कृतिकार तो निमित्त हूँ यह भूति है आप की मैं इस शुभ अवसर पर हृदय से आभार प्रकट करता हूँ । ग्रंथ बनने में, प्रकाशित लेख से किसी के मन को ठेस पहुंची हो तो दिल से क्षमा चाहता हूँ।

मोहनलाल बोल्या

सह संपादक के विचार

मेवाड़ राज्य का अपना गौरवशाली इतिहास है। मेवाड़ की धरती धर्मवीरों एवं शुरवीरों की धरती है। इतिहास लेखन एक जटिल कार्य है। भारतीय संस्कृति के चिर शाश्वत आधार स्तम्भ देवालयों, जिनालयों एवं मंदिरों के इतिहास लेखन के पुनित कार्य में परम आदरणीय सुश्रावक ध्येयनिष्ठ समर्पित सृजनधर्मी व्यक्तित्व के धनी माननीय श्री मोहनलाल जी बोल्या ने मुझे सुयोग्य समझकर मेवाड़ संभाग के देलवाड़ा, प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़ एवं भीलवाड़ा जिलों के जैन मन्दिरों के इतिहास लेखन के सह सम्पादक के रूप में चयनित किया, यह मेरा सौभाग्य है।

वस्तुतः इतिहास लेखन के परम पावन कार्य में मैं स्वयं भारतीय इतिहास संकलन समिति चित्तौड़ प्रान्त के संगठन सचिव के नाते आधिकारिक रूप से पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण भाव से सक्रिय भूमिका का निर्वाह कर रहा हूं। जिन शासन का सुसेवक बन इस दैवीय कार्य में सहयोग करना अपना सौभाग्य मानता हूं।

मेवाड़ संभाग के जैन मन्दिरों के एतिहासिक सर्वेक्षण के चुनौती पूर्ण कार्य को माननीय श्री बोल्या जी के साथ करना एक विलक्षण देवीय कार्य पारिवारिक बन्धुओं के सहयोग के बिना संभव नहीं हो सकता था। इस कार्य हेतु प्रेरणा देने हेतु में आभार प्रदर्शित करता हूं। मेरी धर्मपत्नी सुधर्मा श्रीमती प्रेम पामेचा, सुयोग्य पुत्र एवं पुत्रवधु दिनेश, परमेश एवं लाड़ली बिटिया श्रीमती पंकज पोखरना एवं दामाद श्री महेन्द्र जी पोखरना, पुत्रवधुओं श्रीमती अर्चना एवं श्रीमती सीमा पामेचा एवं सुपौत्र–सुपौत्री शुभम, मनन, प्रांजल, प्रियल अर्चित एवं हीना का इस पुनित कार्य को मैं समर्पित करता हूं। अपने स्वर्गीय पौत्र श्री रिषभ पामेचा को जिसका स्मरण एवं मुस्कान मेरी प्रेरणा का स्रोत रहा है।

जैन मन्दिरों के सुरम्य वातावरण में स्थापत्य, तक्षण कला के अद्वितीय अनुपम अतुलनीय, मनमोहक, चिताकर्षक, रम्य सुदर्शन वास्तु का चित्रांकन करने में हमारे प्रिय फोटो ग्राफर श्री महेशजी दवे के योगदान की सराहना करना भी अपना धर्म समझते है। सच्चे कलाकार श्री महेशजी दवे की सेवाएं भी सदैव स्मरण रहेगी।

श्रीमान बोल्या साहब पूर्व में भी कई पुस्तकों का प्रकाशन कर चुके है। आपने भीलवाड़ा जिले के जैन मन्दिरों के सर्वेक्षण कार्य का बीड़ा पूज्य आचार्य भगवंतो की प्रेरणा से उठाया था। मेरे को भी आपके सानिध्य में देलवाड़ा, प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़ के सर्वेक्षण कार्य में आपके साथ कार्य करने का परम पिता परमेश्वर ने प्रदान किया है। आपकी यह दिली तमन्ना थी कि मैं भी भीलवाड़ा जिले के जैन श्वेताम्बर मन्दिरों के कार्य में पूर्व की भांति सहयोग करूं ।

आप के सान्निध्य में कार्य कर मैं भी अपने आपको सोभाग्यशाली मानता हूं। यह जिला बहुत ही विस्तृत है। सर्वेक्षण कार्य में सभी प्रकार का अनुभव हुआ था। कहीं पर अच्छा सहयोग मिला तो कटु अनुभव की भी कोई कमी नहीं रही। मन्दिरों की व्यवस्था एवं रख रखाव कहीं कहीं तो अच्छा मिला तो कई जगह कटु अनुभव भी हुआ। अब यह देवीय कार्य श्रीमान बोल्या साहब के अथक प्रयास से सम्पन्न होने जा रहा है। शिलालेखों के अवलोकन में यदि कोई त्रुटि नजर आवे तो सूचित करें ताकि भविष्य में इसे संशोधित किया जा सके। आप सबके सहयोग से "मेवाड़ के जैन तीर्थ भाग–3" आपकी सेवा में प्रस्तुत है। आवश्यक सुझाव व सहयोग की अपेक्षा से एक बार पुनः सभी का आभार। फोटोग्राफी के कार्य हेतु हमें कई बने 60 मन्दिरों का दुबारा भ्रमण करना पड़ा। मुशी व घरटा गांवों का भ्रमण तो बहुत ही कष्टदायक रहा।

मानव की पहचान उसकी संस्कृति से और संस्कृति की पहचान उसके इतिहास, साहित्य, कला, धर्म, शिलालेख से। यदि हमें अपनी पहचान सुरक्षित रखनी है तो हमें हमारे इतिहास का संरक्षण करना होगा।

(हरकलाल पामेचा)
निवासी देलवाड़ा (मेवाड़)

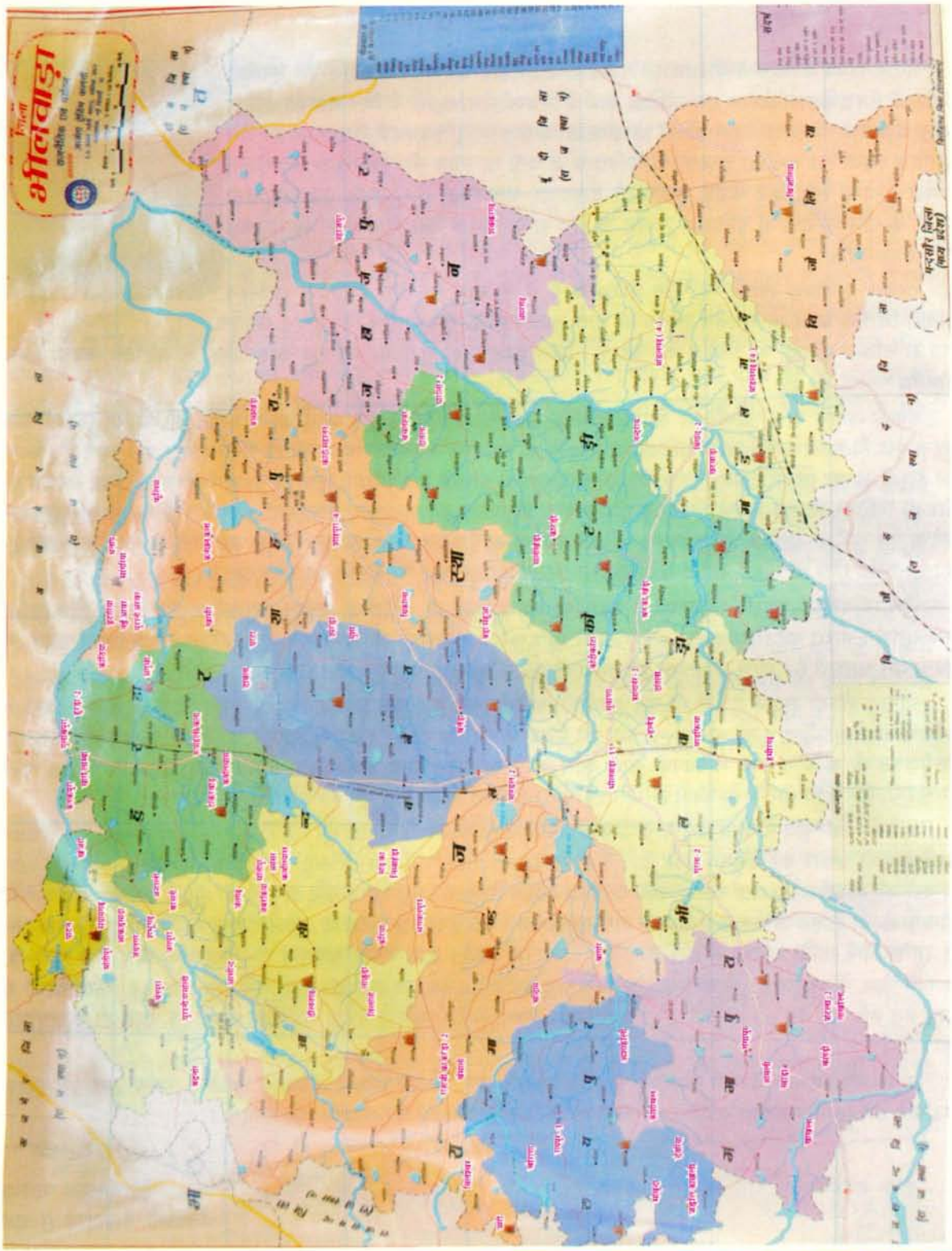
मेवाड़

लेखक की अन्तःमन की बात

मेवाड़ और जैन धर्म के प्रति विस्तृत लेखन पूर्व पुस्तकों में दिया जा चुका है। पुनरावृति नहीं कर अपना लेखन वंदना से प्रारम्भ करता हूँ।

राग–द्वेष को जीतने वाले, सकल वस्तु के ज्ञाता देव–देवेन्द्र द्वारा पूज्य वाणी के स्वामी, तीर्थपति को अपनी स्मृतियों (पुस्तक) में स्थापित कर वंदना करता हूं।

जिस प्रकार दिन के उदय के साथ ही पक्षियों की मधुर ध्वनि (चहचहाट) को सुनकर मंत्रमुग्ध हो जाते है उसी प्रकार मेवाड़ के जिन शासन के जिन किलो की सुरक्षा, संरक्षकता से सम्पूर्ण क्षेत्र जिनालय के घंटनाद सुनकर मंत्र मुग्ध करा देते थे लेकिन समय काल परिस्थिति से बिखराव आ गया है।

इसका मूल कारण :

मूर्तिपूजक समाज के साधु संतों का विचरण का अभाव, मुगलों का आक्रमण व प्राकृतिक आपदाओं के कारण तथा संरक्षकता में विफल होने के कारण मंदिरों की प्राचीनता व मंदिर संस्कृति में बिखराव अधिक हुआ है। इसी बीच आचार्य श्री जितेन्द्र सूरीश्वर जी म.सा. ने कई कठिनाईयों का सामना करते हुए जिर्णोद्धार कराने का बीड़ा उठाया और जिर्णोद्धार कार्य में सफलता प्राप्त होने के कारण मंदिर संस्कृति को पुनः जीवनदान प्रदान किया जिसका अनुमोदना करता हूं।

मंदिर संस्कृति में केवल पूजा, आराधना का स्थान ही नहीं वरन् साहित्य संरक्षण, साहित्य सृजन, अध्ययन, अध्यापन, सामूहिक एकीकरण के कारण संगठन का भी एक प्रेरणा बिन्दु है। मंदिर संस्कृति से ही सात्विक, आध्यात्मिक, शैक्षिक, पवित्रता, सुविचार का शासन व नैतिकता की जागृति होती है।

मंदिर, उपाश्रय के कारण धन श्रष्ठियों की धन प्रदर्शन के माध्यम बने और वह अतिरिक्त धन दुष्परिणामों कार्यों में लग कर सांस्कृतिक उपादेयता की ओर उपयोग हुआ। यह साधना केन्द्र सभी वर्गों के लिए बिना जाति–भेद का स्वागत करते है।

जिनालय में शिखर की रचना इस प्रकार की जाती हैं। ब्राह्मण्ड से व्याप्त ज्ञान व अज्ञान शक्रिया अपने आप गम्भारे में खिंचती चली आती है जिससे साधक को ऊर्जा युक्त वातावरण मिलने के साथ साथ एकाग्रता का बोध होता है।

मंदिर शिक्षा, विज्ञान कला, स्थापत्य कला, अभियांत्रिकी के केन्द्र है। परम् शक्ति व शांति, सुख के स्रोत है।

इसके लिए हमें मुनि श्री विद्याविजयजी म.सा. के विचारों पर ध्यान देना होगा और मंदिर संस्कृति को जीवित रखने के लिए भी उनके विचारों का अनुमोदन करते हुए पालन करना होगा । श्री विद्याविजय जी म.सा. के उद्‌गार "मेरी मेवाड़ यात्रा" की पुस्तक में लिखे है जो इस प्रकार है :

समय के अभाव तथा अन्य प्रवृत्तियों के कारण थोड़े समय तक ही हमें मेवाड़ में विचरने का सौभाग्य प्राप्त हो सका है। उस अनुभव के आधार पर मैं यह बात कह सकता हूं कि मेवाड़ धर्म प्रधान और इतिहास प्रधान देश है। पहाड़ों तथा पत्थरों वाला देश होने पर भी कांटों तथा कंकरों वाला देश होते हुए भी सरल तथा भक्ति वाला देश है। यह देश जिस तरह धर्म प्रचार की भावना रखने वाले उपदेशकों के लिए उपयोगी है। उसी तरह ऐतिहासिक खोज करने वालों के लिए भी सचमुच ही उपयोगी है। यहां न संघ सोसायटी के झगड़े हैं और न पदवियों की प्रतिस्पर्धा है। कोई भी साधु अपने चारित्र धर्म में स्थिर रह कर शान्तवृत्ति से उपयोग पूर्वक उपदेश दे, तो वह बहुत कुछ उपकार कर सकता है। उपकार करने के लिए मेवाड़ अद्वितीय क्षेत्र है। अपने निमित्त ग्राम–ग्राम में क्लेश होने पर

भी, घर घर में आग की चिंगारियां उड़ने पर भी, गृहस्थों की साधुओं पर अश्रद्धा होने पर भी, 'अति परिचयादवज्ञा' का अनुभव रात दिन करते रहने पर भी दुःख तथा आश्चर्य का विषय है कि हमारे पूज्य मुनिराज व साध्वीजी महाराज गुजरात, काठियावाड़ को क्यों नहीं छोड़ते होंगे ? और ऐसे क्षेत्रों में क्यों नहीं निकल पड़ते जहां एकान्त उपकार और शासन सेवा के अतिरिक्त दूसरी किसी चीज का नाम भी नहीं है।

मंदिर संस्कृति तो जीवित हो गई लेकिन मंदिरों का संरक्षण के अभाव के कारण (मेरे अनुभव से) ऐसी दयनीय स्थिति में है जिसमें श्वेताम्बर अे दिगम्बर, स्थानकवासी अे मूर्तिपूजक, तेरापंथ अे मूर्तिपूजक, क्या यह जैन समाज की एकता है ? वर्तमान से जिस प्रकार से मंदिरों में आशातना हो रही है उसकी भरपाई कौन, कैसे करेगा व क्या फल मिलेगा? विचाराधीन है।

आचार्यों ने जैन धर्म की आध्यात्मिक सम्पत्ति के विषय में उपदेश व प्रेरणा दी है। यह माननीय है। इस सम्पत्ति के प्रति हमारा अनुराग बढ़े व इसकी सुरक्षा के प्रति सजग रहे। आचार्यों ने देव मंदिरों की पूजा, अभिषेक का महत्व भी बताया। अतः किसी भी प्रकार से उपेक्षा व अशातना न होने दे जिससे हम सभी का कल्याण होगा।

मंदिर हमारी धरोहर है, ये हमारी सांस्कृतिक विरासत है। इनकी सुरक्षा संरक्षण करना हमारा पुनित कर्तव्य है। अगर इनका संरक्षण न कर सके तो हमारी संस्कृति एवं इतिहास भी सुरक्षित नहीं रह सकेगा। हम संकल्प ले कि प्राचीन मंदिरों का रखरखाव एवं जिर्णोद्धार करेंगे एवं नवनिर्माण से बचेंगे। किसी की भावना पर आघात हो तो क्षमा ।

अपने इस अनुभवकृत को यहां संपूर्ण करके अपनी लेखनी को यहीं विराम देता हूं।

(मोहनलाल बोल्या)

ग्रंथ की डिजाईनिंग निमित्त द्रव्य सहायक

प. पू. प्राचीन आगम शास्त्रोद्धारक, वैराग्य देशना दक्ष
आचार्य देव श्रीमद् विजय हेमचंद्रसूरीश्वरजी महाराज
के सुशिष्य
पं.प. श्री अपराजित विजय जी म.सा.
की प्रेरणा से
श्री श्रेयंसकर आदिनाथ जैन संघ, नीजामपुरा, बरोड़ा (बड़ोदा) गुजरात
का खूब खूब धन्यवाद एवं अनुमोदना

प.पू.पं. श्री अपराजित विजय जी म.सा. की ओर से संदेश

धर्मप्रेमी देव गुरू भक्तिकारक सुश्रावक मोहनलाल बोल्या

धर्मलाभ

प्रबल पुण्य के उदय से जिनशासन के साथ मनुष्य भव की प्राप्ति होती है और जिनशासन में ही आत्मविश्वास का क्रमिक मार्ग बताया गया है। आत्म उन्नति का प्रारम्भ परमात्मा की भक्ति से होती है। परमात्मा भक्ति से निर्मल पुण्य का बन्ध होता है और उस पुण्य के उदय से जीवन में सभी प्रकार के धर्म की आराधना करने की शक्तियों का विकास होता है अतः वह दान, शील, तप और भाव आदि धर्म की आराधना करने में सक्षम बनाता है।

परमात्मा भक्ति दो प्रकार होती है द्रव्य भक्ति तथा भाव भक्ति। द्रव्य भक्ति के लिए मंदिर का आलंबन की जरूर पड़ती है अतः हर शहर में हर गली–गली में और घर–घर में मंदिर का निर्माण किया जा रहा है। मेवाड़ का प्रदेश परमात्मा की आस्था का प्रदेश है अतः उदयपुर, देलवाड़ा, चित्तौड़गढ़ भीलवाड़ा आदि में प्रचीन मंदिर और मूर्तियों की सैकड़ो की संख्या में स्थापना हुई है।

परमात्मा भक्ति जिसके रग–रग में बसी हुई है, श्री मोहनलाल बोलिया रिटायर्ड होने के बाद अपना सम्पूर्ण समय तथा तन–मन–धन को जिनशासन के सेवा में लगाकर मेवाड़ के जैन तीर्थों के ग्रंथ निर्माण का अनमोल कार्य कर रहे हैं। सबसे पहले उदयपुर नगर के जैन श्वेताम्बर मंदिर एवं मेवाड़ के प्रचीन तीर्थ पर एक सुंदर पुस्तक लिखी जिसमें 56 मंदिरों का सर्वागीण परिचय कराया गया है। इसके बाद आपने मेवाड़ का प्राचीन तीर्थ देलवाड़ा, जो आबु देलवाड़ा से भी प्राचीन माना गया है, पुस्तक की रचना की ।

आपकी साहित्य यात्रा शरीर साथ नहीं देते हुए भी आगे बढ़ी और आपने उदयपुर व राजसंमद दो जिलों के सभी जैन मंदिरों का इतिहास का समावेश किया गया वैसी मेवाड़ के जैन तीर्थ नाम की तीसरी पुस्तक का निर्माण किया । उसके बाद आपने णमोकार महामंत्र पर चिंतन साहित्य संकलन करके उसका प्रभाव सामर्थ्य विधि आदि पर प्रकाश डालते हुए अपनी लेखनी चलाई।

णमोकार मंत्र महामंत्र नाम से अपनी चौथी पुस्तक का प्रकाशन किया जिसके अंत में फोटोग्राफी के साथ महाराष्ट्र में आया हुआ प्रभावशाली अप्रगट तीर्थ नानगीरी श्री पार्श्वनाथ भगवान का तीर्थ का भी परिचय दिया गया है अतः यह पुस्तक हर जैनी के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

उसके बाद चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़ जिले के सभी मंदिरों व प्रतिमाओं का परिचय व प्राचीनता का वर्णन कर पांचवी पुस्तक मेवाड़ के जैन तीर्थ भाग 2 की रचना की ।

उसके बाद पुना में आकर आचार्य श्री हेमचंदसूरी म.सा., आचार्यश्री कल्याणबोधि सूरीश्वर जी म.सा. की अनुमति व आशीर्वाद लेकर भीलवाड़ा जिले के सभी मंदिरों का परिचय कराते हुए पुस्तक निर्माण का कार्य प्रांरभ किया। उदयपुर से भीलवाड़ा जिले के हर मंदिर में जाकर फोटोग्राफी निकालना, लेख को बारीकाई से देखना, अत्यन्त शारीरिक अस्वस्थता की स्थिति में भी भागीरथ प्रयत्न से आपने यह छठी पुस्तक की रचना करके उसका प्रकाशन करने जा रहे हैं, आपका यह प्रयास खुब प्रसंशनीय है। इस पुस्तक की रचना से सम्पूर्ण मेवाड़ के मंदिरो के दर्शन हो सकेंगे ।

आपकी यह सभी कृतिया घर बैठे मेवाड़ के सभी मंदिरो व तीर्थो की भावयात्रा करने में अत्यन्त उपयोगी है जो कि भविष्य में आने वाले समय में एक ठोस दस्तावेज की तरह साबित होगी साथ ही जैन समाज के लिए उपयोगी बनेगी और सम्यक् दर्शन को प्राप्त कराने व निर्मल बनाने में सहायक बनेगी । इस प्रकार आपका पुरूषार्थ सार्थक और सफल बनेगा।

द. अपराजित वि.म

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ नमो नमः

मुनि हेमदर्शन विजय जी म. सा. की ओर से संदेश

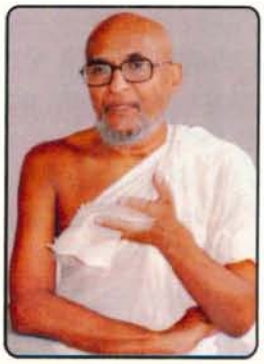

देव गुरू भक्तिकारक सुश्रावक श्री मोहनलाल जी बोलिया जोग धर्मलाभ

आपकी तीर्थभक्ति अनुमोदनीय है । पहले मेवाड़ तीर्थदर्शन की अद्‌भुत किताब संघ की सेवा में समर्पण की.....और चार बेहतरीन पुस्तकें इसी सिलसिले में प्रकाशित की। किताब के माध्यम से जिन्होंने कभी इन तीर्थो का दर्शन नहीं किए वे भी दर्शन से परिपूर्ण लाभान्वित हो सकते हैं ।

पू. साधु–साध्वीजी भगवंत भी संयम की मर्यादा से बार–बार नहीं आ सकते लेकिन पुस्तक के माध्यम से तीर्थयात्रा से भावविभोर बनकर सम्यक दर्शन को निर्मल कर सकते हैं ।

आप तो भारी कर्म की निर्जरा एवं पुण्यानुबंधी पुण्य प्राप्त कर रहे हैं । विश्वास है और भी ऐसी किताब आपके हाथ प्रकाशित होगी ।

अंत में हम सभी मुक्ति सुख को प्राप्त शीघ्र ही करें ।

यही शुभकामना...

हेमदर्शन विजय

(हेमदर्शन विजय)
निजामपुरा, बरोड़ा

बन्धन से मुक्ति अंतराय हो तो और विभिन्न उपद्रव हो तो 27/54/108 बार यह जप करें

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृ. सं.
	तहसील भीलवाड़ा	1–44
	श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, भूपालगंज भीलवाड़ा	1–3
	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर सांगानेरी गेट के पास, धानमण्डी, भीलवाड़ा	4–6
	श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, कसारा बाजार–311001, भीलवाड़ा	7–9
	श्री महावीर भगवान का मंदिर, पुरानी धानमण्डी–311001, भीलवाड़ा	10
	श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर व दादावाड़ी–311001, भीलवाड़ा	11–14
	श्री आदीश्वर भगवान का मंदिर सांगानेर–311001 जिला भीलवाड़ा	15–16
	श्री चन्द्रप्रभ भगवान का मंदिर सांगानेर–311011, जिला भीलवाड़ा	17
	श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, हलेड़–311011, तहसील भीलवाड़ा	18
	श्री शीतलनाथ भगवान का मंदिर, दांतल–311011, तहसील भीलवाड़ा	19
	श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर सुवाणा–311011, तहसील भीलवाड़ा	20
	श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, कोदुकोटा–311011, तहसील भीलवाड़ा	21
	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, श्याम विहार कॉलोनी–311001, भीलवाड़ा	22–23
	श्री महावीर भगवान का मंदिर, जमुना विहार–311001, भीलवाड़ा	24–25
	श्री नमिनाथ भगवान का मंदिर, काशीपुरी–311801, भीलवाड़ा	26–27
	श्री सुमतिनाथ भगवान का मंदिर, मांगरोप, जिला भीलवाड़ा	28–29
	श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, हमीरगढ़–311025, जिला भीलवाड़ा	30
	श्री विमलनाथ श्री सम्भवनाथ भगवान का मंदिर, बापुनगर–311001, भीलवाड़ा	31–32
	श्री नेमिनाथ भगवान का मंदिर, पुर–311802, जिला भीलवाड़ा	33–34
	श्री चन्द्रप्रभ भगवान का मन्दिर, पुर–311802, तहसील भीलवाड़ा	35
	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, पुर–311002, तहसील भीलवाड़ा	36
	श्री चौमुखा जी का मंदिर, पुर, 311002, भीलवाड़ा	36
	श्री आदिनाथ भगवान मंदिर पुर, 311002, तहसील भीलवाड़ा	37–38
	श्री आदिनाथ भगवान (चौमुखा जी) मंदिर पुर, 311002, तहसील भीलवाड़ा	39–40
	श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, गुरला–तहसील भीलवाड़ा	41–42
	श्री पार्श्वनाथ भगवान व दादावाड़ी मंदिर, गुरला, तहसील भीलवाड़ा	43–44
	तहसील माण्डलगढ़	45–61
	माण्डलगढ़ का इतिहास	45–46
	श्री ऋषभदेव भगवान का मंदिर, माण्डलगढ़ किला–311604	47–48

श्री महावीर भगवान का मंदिर, माण्डलगढ़ किला–311604 49–50
श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर, माण्डलगढ़–311604, तलहटी 51–52
श्री सुमतिनाथ का मंदिर, माण्डलगढ़–311604, तहसील माण्डलगढ़ 53–54
श्री विमलनाथ भगवान का मंदिर बिगोद–311601, तहसील माण्डलगढ़ 55–56
श्री सुमतिनाथ भगवान का मंदिर, बिगोद–311601, तहसील माण्डलगढ़ 57–58
श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर खटवाड़ा–311601 58

तहसील बिजोलिया 59–61
श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, बिजोलिया 59–61

तहसील जहाजपुर 62–64
श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर जहाजपुर–311201, तहसील जहाजपुर 62–64
श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर शक्करगढ़–311201, तहसील जहाजपुर 65
श्री वासुपूज्य भगवान का मंदिर, अमरगढ़–311605, तहसील जहाजपुर 66–67

तहसील शाहपुरा 68–90
श्री पद्मप्रभ भगवान का मंदिर–311404, शाहपुरा 68–69
श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर–311404, शाहपुरा 70–71
श्री शान्तिनाथ भगवान का मंदिर–311404, शाहपुरा 72–73
श्री ऋषभदेव भगवान का मंदिर, शाहपुरा 74
श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का मंदिर कादीसहना–311404, तहसील शाहपुरा 75
श्री विमलनाथ भगवान का मंदिर, बछखेड़ा–311404, तहसील शाहपुरा 76
श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, सांगरिया–311404, तहसील शाहपुरा 77–78
श्री आदीश्वर भगवान का मंदिर फुलियाकलां–311407, तहसील शाहपुरा 79–80
श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, कनेचन, तहसील शाहपुर 80
श्री शीतलनाथ भगवान का मंदिर धनोप–311021, तहसील शाहपुरा 81–83
श्री चन्द्रप्रभ भगवान का मंदिर, पुरानी अरवड़–311404, तहसील शाहपुरा 84
श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर, नई अरवड़–311404, तहसील शाहपुरा 85
श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, इटाडिया–311404, तहसील शाहपुरा 86
श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर, कोठिया–311404, तहसील शाहपुरा *87–88*
श्री संभवनाथ भगवान का मंदिर, खामोर–311404, तहसील शाहपुरा 89–90

तहसील बनेड़ा 91–101

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर बनेड़ा–311401, तह. बनेड़ा 91–94
श्री वासुपूज्य भगवान का मंदिर, मुशी–311404, तहसील बनेड़ा 95–96
श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर उपरेड़ा, 311408 तहसील बनेड़ा 97–98
श्री चन्द्रप्रभ भगवान का मंदिर, ढीकोला (311404), तहसील बनेड़ा 99
श्री सुमतिनाथ भगवान का मंदिर, घरटा–311401, तहसील बनेड़ा 100
श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, डाबला–311401, तहसील बनेड़ा 101

तहसील कोटड़ी 102–113

श्री ऋषभदेव भगवान का मंदिर, कोटड़ी–311603, तहसील कोटड़ी 102
श्री श्रेयांसनाथ भगवान का मंदिर, नन्दराय–311601 तहसील कोटड़ी 103–104
श्री सुमतिनाथ भगवान का मंदिर, माल का खेड़ा, तहसील कोटड़ी 104
श्री विमलनाथ भगवान का मंदिर, बनका खेड़ा–311011, तहसील कोटड़ी 105–106
श्री चन्द्रप्रभ भगवान का मंदिर, बड़ा महुवा–311011, तहसील कोटडी 107
श्री चंचलेश्वर पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, चंचलेश्वर, तहसील कोटड़ी 108–109
श्री नेमिनाथ (श्री पार्श्वनाथ) भगवान का मंदिर पारोली, कोटड़ी–311202 110–111
श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर पारोली–311302, कोटड़ी 112
श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर दांतड़ा–311603, तहसील कोटड़ी 113

तहसील आसीन्द 114–148

श्री शान्तिनाथ भगवान का मंदिर, आसींद–311301 114
श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर चेनपुरा–311301, तहसील आसीद 115–116
श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर मोड़ का निम्बाहेड़ा, तहसील आसींद 117–118
श्री ऋषभदेव भगवान का मंदिर, पुरानी परासोली–311204, तहसील आसींद 119–120
श्री नमिनाथ भगवान का मंदिर जगपुरा–311304, तहसील आसींद 121–122
श्री महावीर भगवान का मंदिर जेतगढ़, 311302, तहसील आसींद 123
श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर बदनोर–311302, तहसील आसींद 124–127
श्री संभवनाथ भगवान का मंदिर पाटण–311302, तहसील आसींद 128
श्री अजितनाथ भगवान का मंदिर शंभूगढ़–311302, तहसील आसींद 129
श्री महावीर भगवान का मंदिर झबरकिया–311302, तहसील आसींद 130–131
श्री ऋषभदेव भगवान का मंदिर कवल्यास–311302, तहसील आसींद 132
श्री महावीर भगवान का मंदिर मोतीपुर–311302, तहसील आसींद 133–134
श्री धर्मनाथ भगवान का मंदिर जयनगर–311302 तहसील आसींद 135–136

श्री वासुपूज्य भगवान का मंदिर आकड़सादा–311302 तहसील आसींद 137–138
श्री नेमीनाथ भगवान का मंदिर दोलतगढ़–311301, तहसील आसींद 139
श्री जिनेश्वर भगवान का मंदिर तिलोली–311301, तहसील आसींद 140
श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर लाछुड़ा–311 301, तहसील आसींद 141
श्री विमलनाथ भगवान का मंदिर बरसनी–311302, तहसील आसींद 142
श्री ऋषभदेव भगवान का मंदिर अंटाली–311302 तहसील आसींद 143–144
श्री वासुपूज्य का भगवान का मंदिर अमेसर–311302, तहसील आसींद 145–146
श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर संग्रामगढ़–311302, तहसील आसींद 147–148

तहसील हुरड़ा 149–163
श्री पार्श्वनाथ भगवान मन्दिर, हुरड़ा–311202, तहसील हुरड़ा 149
श्री गौड़ी पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, हुरड़ा–311202, तहसील हुरड़ा 150
श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, आगुचा–311202 तहसील हुरड़ा 151
श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, गुलाबपुरा–311202, तहसील हुरड़ा 152–153
श्री नमिनाथ भगवान का मंदिर, खेजड़ी–311202, तहसील हुरड़ा 154
श्री चन्द्रप्रभ भगवान का मंदिर, टोकरवाड़–311202, तहसील हुरड़ा 155
श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर, कनकपुरा (कानिया), तहसील हुरड़ा 156–157
श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर खारी का लाम्बा–311202, तहसील हुरड़ा 158–159
श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर रूपाहेली कलां–305626, तहसील हुरड़ा 160–161
श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर कवलियास–311302, तहसील हुरड़ा 162–163

तहसील माण्डल 164–178
श्री श्री सुमतिनाथ भगवान का मंदिर माण्डल–311403, जिला भीलवाड़ा 164–165
श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, माण्डल (311403), तहसील माण्डल 165
श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर भगवानपुरा–311026, तहसील माण्डल 166–167
श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर केरिया–311026, तहसील माण्डल 168–169
श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर बेमाली–311801, तहसील माण्डल 170
श्री अनन्तनाथ भगवान का मंदिर चाँदरास–311402, तहसील माण्डल 171
श्री विमलनाथ भगवान का मंदिर बागोर–311802, तहसील माण्डल 172
श्री महावीर भगवान का मंदिर, चिल्लेश्वर, तहसील माण्डल 173
श्री शान्तिनाथ भगवान का मंदिर राजाजी का करेड़ा, तहसील माण्डल 174–175
श्री नमिनाथ भगवान का मंदिर राजाजी का करेड़ा, तहसील माण्डल 176–177
श्री वासुपूज्य भगवान का मंदिर उमरी–311803, तहसील माण्डल 178

तहसील रायपुर 179–188

श्री कुंथुनाथ भगवान का मंदिर, रायपुर–311803, तहसील रायपुर 179–180

श्री केसरियानाथ भगवान का मंदिर, बोराणा–311803, तहसील रायपुर 181

श्री ऋषभदेव भगवान का मंदिर आशा होली–311801, तहसील रायपुर 182

श्री महावीर भगवान का मंदिर देवरिया (रायपुर), तहसील रायपुर 183

श्री मल्लिनाथ भगवान का मंदिर मोखुन्दा–311801, तहसील रायपुर 184–185

श्री महावीर व श्री आदिश्वर भगवान का मंदिर जड़ोल, तहसील रायपुर 186–188

तहसील गंगापुर 189–205

श्री चन्द्रप्रभ भगवान का मंदिर, गंगापुर–311801, जिला भीलवाड़ा 189–191

श्री शान्तिनाथ भगवान का मंदिर लाखोला–311801 तहसील गंगापुर 192–193

श्री केसरियानाथ भगवान का मंदिर कोशीथल, तहसील सहाड़ा (गंगापुर) 194–195

श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर कांगणी–311801, तहसील सहाड़ा (गंगापुर) 196

श्री चंद्रप्रभ भगवान का मंदिर, आमली–311801, तहसील सहाड़ा (गंगापुर) 197

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर–311806 सहाड़ा, तहसील गंगापुर 198

श्री सुविधिनाथ भगवान का मंदिर, पोटला (311810), तहसील गंगापुर 199–200

श्री वासुपूज्य भगवान का मंदिर, पोटला–311810, तहसील गंगापुर 201–203

श्री नमिनाथ भगवान का मंदिर, खाखला–311806, तहसील गंगापुर 204–205

नेवरिया, जिला चित्तौड़गढ़ 206

श्री महावीर भगवान का मंदिर, नेवरिया, जिला चित्तौड़गढ़ (राज.) 206

ऋषभदेव भगवान के 100 पुत्रों के नाम 207

राणकपुर, जिला पाली 208–222

श्री आदिश्वर भगवान का मंदिर, राणकपुर–सादड़ी, तह. देसुरी, जिला पाली 208–219

श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, रणकपुर 220

श्री नेमिनाथ भगवान का मंदिर रणकपुर 221–222

जैन चित्रकला का इतिहास 223

संदर्भित पुस्तकों की सूची 224

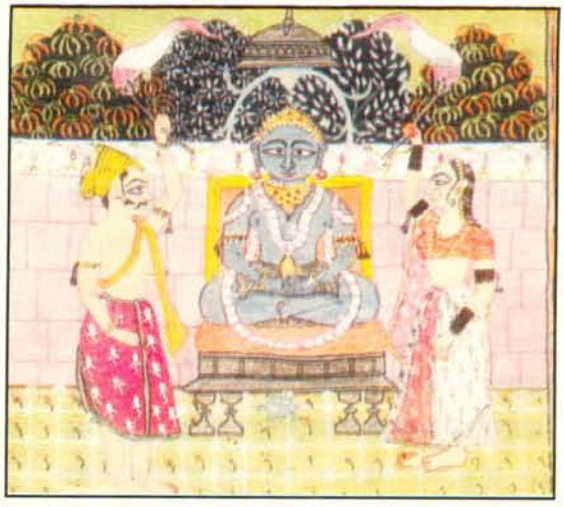

मुनि सुव्रत भगवान का हस्तनिर्मित संग्रहित प्राचीन चित्र

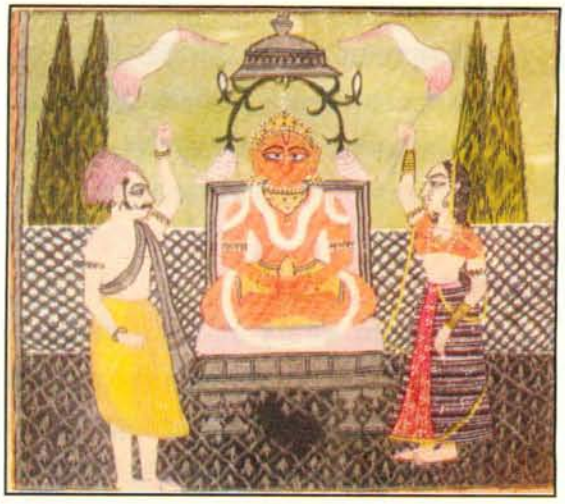

श्री आदिनाथ भगवान का हस्तनिर्मित संग्रहित प्राचीन चित्र

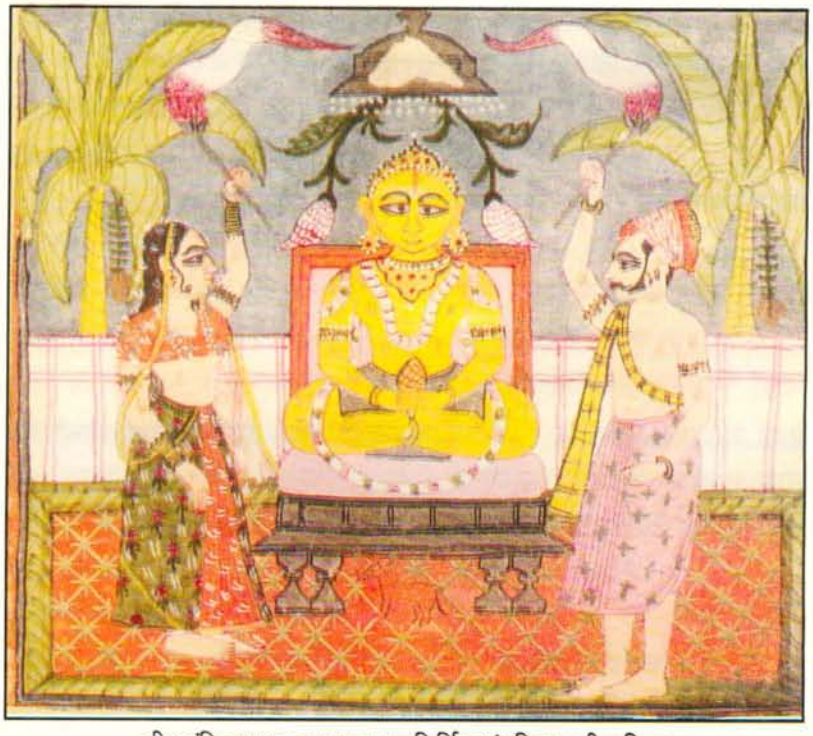

श्री शांतिनाथ भगवान का हस्तनिर्मित संग्रहित प्राचीन चित्र

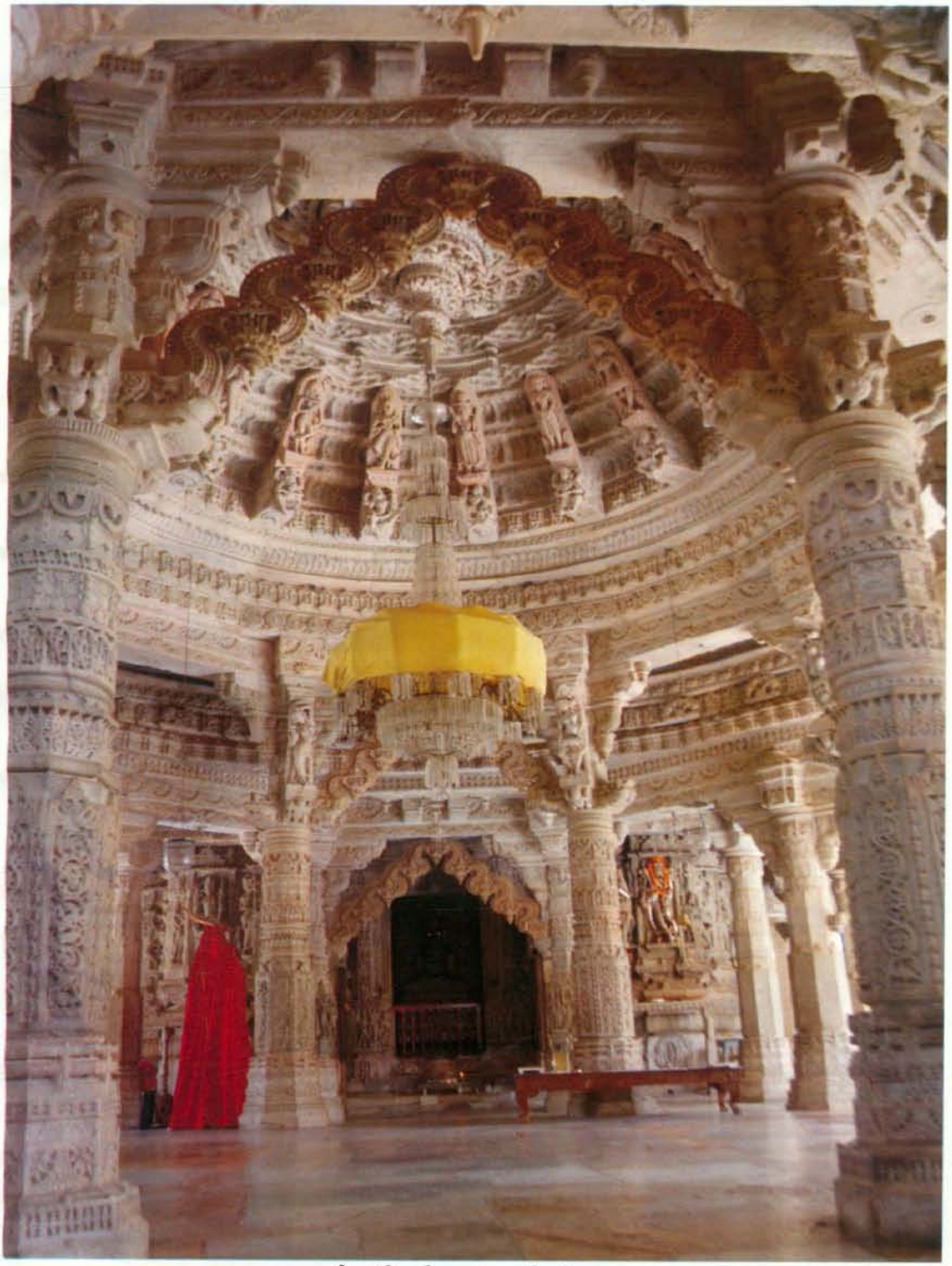

रणकपुर जैन मंदिर के कलात्मक भीतरी भाग का दृश्य

॥ नमस्कार महामंत्र ॥

नमो अरिहंताणं।
नमो सिद्धाणं।
नमो आयरियाणं।
नमो उवज्झायाणं।
नमो लोए सव्वसाहूणं।
एसो पंच नमुक्कारो।
सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं।
पढमं हवई मंगलम्।

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, भूपालगंज भीलवाड़ा

यह पाटबंद (देवरी) मंदिर नगर के मुख्य बाजार के मध्य में व रेल्वे स्टेशन से केवल आधा किलोमीटर दूर महावीर पार्क के पास स्थित है। यह मंदिर 30 वर्ष प्राचीन है। यह मंदिर प्रथम मंजिल पर स्थापित है। मंदिर में कांच का सुंदर कार्य किया हुआ है। मंदिर की स्वच्छता, पूजा नियमित होती है।

मंदिर का भूखण्ड नगरपालिका द्वारा आंवटित किया हुआ है । मंदिर व उपाश्रय समाज द्वारा बनाया गया है ।नीचे दुकाने हैं।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री पार्श्वनाथ भगवान (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 21" ऊंची प्रतिमा है। इस पर वि. सं. 2048 का लेख है।

(2) श्री आदिनाथ भगवान (मूलनायक के दाएं) की श्वेत पाषाण की 15" ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2051 का लेख है।

(3) श्री महावीर भगवान (मूलनायक के बाएं) की श्वेत पाषाण की 15" ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2051 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री शांतिनाथ भगवान की 8.5" ऊंची प्रतिमा है। इस पर वीर सं. 2511 का लेख है।

(2) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 6" का है। इस पर सं. 2041 का लेख है।

(3) श्री अष्टमंगल यंत्र 6" x 3" का है। इस पर सं. 2028 का लेख है।

दाहिनी ओर आलियों में :

(1) श्री अजितनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 9" ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री पार्श्वनाथ की श्वेत पाषाण की 13" ऊंची प्रतिमा है।

(3) श्री शांतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 11" ऊंची प्रतिमा है।

बाहर आलियों में :

(1) माणिभद्र देव की श्वेत पाषाण की 13'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 12'' ऊंची प्रतिमा है।

(3) श्री शासन देवी की श्वेत पाषाण की 7'' ऊंची प्रतिमा है।

बाई ओर आलियों में :

(1) श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 8'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 13'' ऊंची प्रतिमा है।

(3) श्री नेमिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' ऊंची प्रतिमा है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री शांतिनाथ भगवान की 8.5'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2041 का लेख है।

(2) श्री शांतिनाथ भगवान की 8.5'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2045 का लेख है।

(3) श्री जिनेश्वर भगवान की 12'' ऊंची चतुर्विंशांति प्रतिमा है। इस पर सं. 2041 का लेख है।

(4) श्री आदिनाथ भगवान की 7'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर विर. सं. 2511 का लेख है।

(5) श्री बीसस्थानक यंत्र गोलाकार 10'' का है। इस पर सं. 2041 कार्तिक कृष्णा 6 का लेख है।

(6,7,8) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 4'', 4'', 4'' ऊंची प्रतिमा है।

(9) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 6.5'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1539 का लेख है।

(10) श्री शांतिनाथ भगवान की 7'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1344 का लेख है।

(11,12,13) श्री जिनेश्वर भगवान की 8'', 8'', 8'' ऊंची पंच तीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 2068 का लेख है।

(14) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 4.5'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर वीर सं. 2509 का लेख है।

(15) श्री शांतिनाथ भगवान की 4.5'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर वीर सं. 2509 का लेख है।

(16) श्री महावीर भगवान की 2.5'' ऊंची प्रतिमा है।

(17) श्री समवसरण स्तम्भ 12'' ऊंचा जिस पर चार प्रतिमाएं स्थापित है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा फाल्गुन शु. 5 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर का संचालन श्री पार्श्वनाथ जैन मूर्तिपूजक संघ भीलवाड़ा द्वारा किया जाता है। जिसके पदाधिकारी है : वर्तमान में श्री अमृतलाल जी सुराणा अध्यक्ष (01482-224430) श्री मुकुन्दजी बोहरा- मंत्री (01482-224430)

श्री सरस्वती देवी पूजन मंत्र

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर सांगानेरी गेट के पास, धानमण्डी-311001, भीलवाड़ा

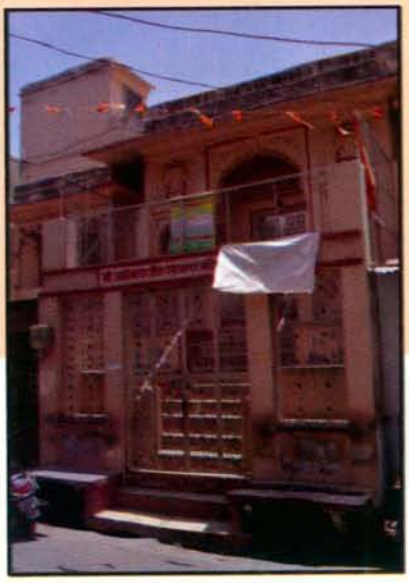

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय के धानमण्डी मौहल्ला में स्थित है। यह मंदिर करीब 500 वर्ष प्राचीन यति श्री लालचंद जी द्वारा निर्मित बतलाया गया लेकिन इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता लेकिन प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख के आधार पर 500 वर्ष प्राचीन की सम्भावना बनती है। तथा सभी प्रतिमा अति प्राचीन प्रतीत होती है। यह यति मंदिर ही था।

(1) श्री आदिनाथ भगवान (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 23" ऊंची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

(2) श्री कुंथुनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 13" ऊंची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर कुंथुनाथ बिम्ब उत्कीर्ण है।

(3) श्री चन्द्रप्रभ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 14" ऊंची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर सं. 1533 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

(1–2–3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 6", 6" व 3" ऊंची प्रतिमाएं है।

(4) श्री सम्भवनाथ भगवान की प्रतिमा है। इस पर वीर सं. 2511 पोष वदि 6 का लेख है।

(5) श्री सिद्धचक्र यंत्र 7" x 5" का है। इस पर कोई लेख नहीं है।

(6) श्री अंक पुज्य यंत्र 4.5" x 5" का है। इस पर कोई लेख नहीं है।

(7) श्री सिद्धचक्र यंत्र 6" x 4.5" का ऊपर से गोलाई लिए हुए है।

(8) श्री अष्ठमंगल यंत्र 6" x 3.5" का है। इस पर वीर सं. 2498 वै.शु. 6 का लेख है।

(9–10) श्री ताम्र यंत्र 3" x 2.5" व 2"x 2" का है।

(11) श्री पद्मावती देवी की 6'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1782 का लेख है।

(12) श्री ताम्र यंत्र 18'' x 18'' का (सम्भावित नवग्रह) जिस पर आदिनाथ नमः बीच में उत्कीर्ण है। इसी पर आठ यंत्र चारों ओर उत्कीर्ण है। इस पर सं. 1954 का लेख है।

(13) श्री ताम्र यंत्र 18'' x 18'' का (सम्भावित बीसस्थानक) जिस पर इशानायक नमः कुबेराय नमः ओम नमो नमः नमः आदि उत्कीर्ण है। इस पर सं. 1954 का लेख है। वेदी की दीवार के बीच पबासन देवी की मूर्ति स्थापित है। इस पर सं. 2027 पोष शु. 9 का लेख है।

बाई ओर के आलिएं में:

श्री अभिनंदन भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1992 वै.शु. 10 का लेख है।

पीछे की ओर आलिएं :

(1) श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा स्थापित है।

बाहर आलिए :

(1) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 13'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट लेख है।

(2) श्री चक्रेश्वरी देवी की श्वेत पाषाण की 12''ऊंची प्रतिमा हैं। इस पर सं. 2059 का लेख है।

(3) अधिष्ठायक देव की मूर्ति स्थापित है। दोनों ओर एक–एक कमरा है।

बाहर हॉल में :

(1) श्री जिनकुशलसूरि जी की श्वेत पाषाण की 13'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2059 ज्येष्ठ कृष्णा 7 का लेख है।

(2) प्रतिमा के पास (सामने की ओर)–

श्री जिनकुशलसूरि जी के पादुका जोड़ी 4'' x 3'' के पाषाण पर स्थापित है।

(3) श्री जिनकुशलसूरि जी की पादुका जोड़ी 12'' x 10'' के देशी पाषाण के पट्ट पर स्थापित है। इस पर अस्पष्ट लेख है।

(4) अधिष्ठायक देव की चार प्रतिमाएं स्थापित है।

दोनों ओर (मंदिर की नाल के दोनों ओर) प्रवेश करते समय

(1) केसर घर, (2) स्टोर घर बने हुए है।

मंदिर की बनावट 5+5+3+3 = 16 बारियों में बना है।

वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से अशोक जी सिसोदिया द्वारा की जाती है। सम्पर्क सूत्र- 9829047259

मंदिर की जमीन भी है, लेकिन किसके अधिकार में है ज्ञात नहीं है। जानकारी कर अग्रिम कार्यवाही की जानी चाहिए। मंदिर की दुकानें भी है व मकान है।

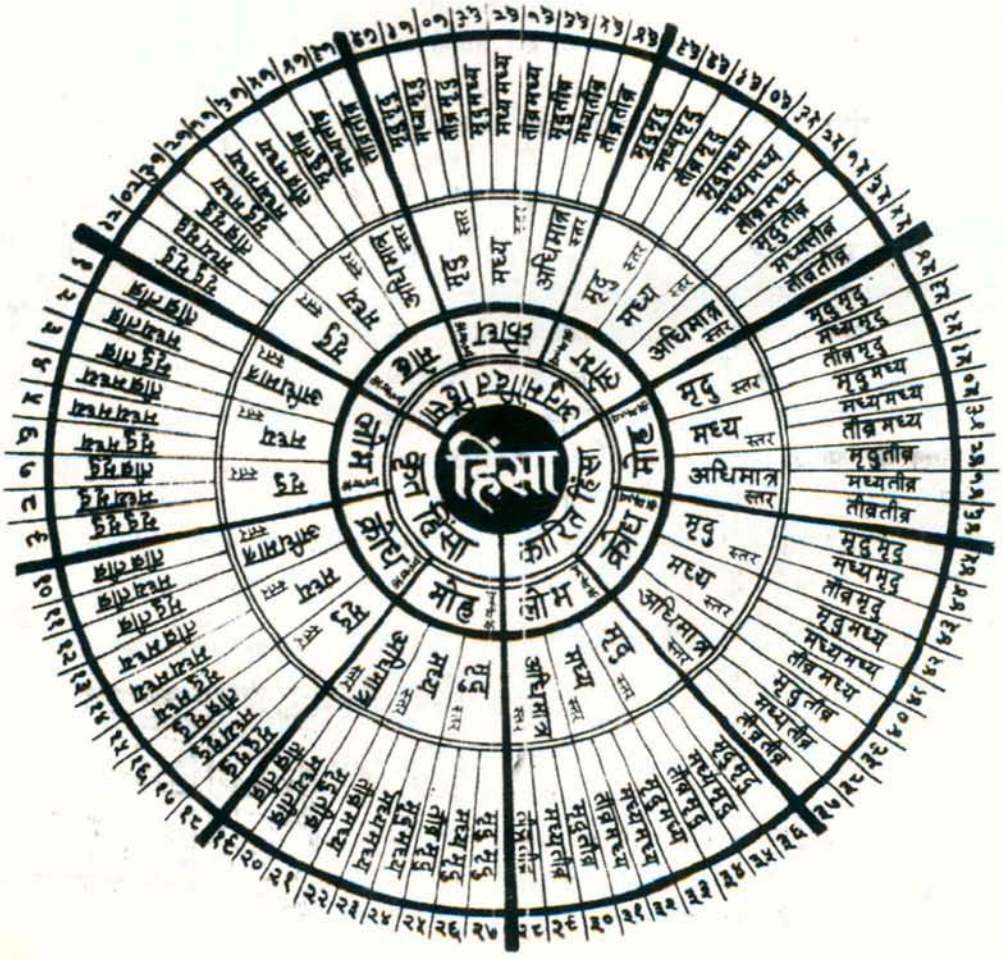

हिंसा के प्रकार

श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, कसारा बाजार-311001, भीलवाड़ा

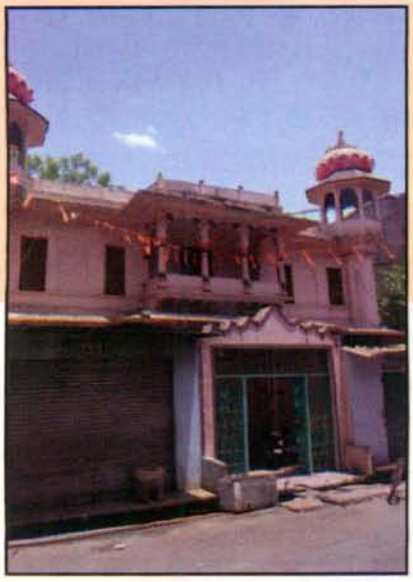

यह पाटबंद मंदिर नगर के कसारा बाजार के मध्य में स्थित है। मंदिर 300 वर्ष प्राचीन बताया जाता है। उल्लेखानुसार इस मंदिर का निर्माण यति श्री केसरीचंद जी द्वारा कराया गया। प्राचीनता का आधार प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख को माना जा सकता है। मंदिर की बनावट के आधार पर 300 वर्ष प्राचीन होना सम्भावित है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री शांतिनाथ भगवान (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 10'' ऊंची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

(2) श्री शांतिनाथ भगवान (मूलनायक के दाएं) की श्वेत पाषाण की 11'' ऊंची प्रतिमा हैं। इस पर सं. 1826 का लेख है।

(3) श्री धर्मनाथ भगवान (मूलनायक के दाएं) की श्वेत पाषाण की 9'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1869 का लेख है।

(4) श्री चन्द्रप्रभ भगवान (मूलनायक के बाएं) की बादामी पाषाण की 9'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट लेख हैं।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री विमलनाथ भगवान की 8'' ऊंची पंच तीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1592 का लेख है।

(2) श्री शांतिनाथ भगवान की 8'' ऊंची पंच तीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1583 माघ शु. 15 का लेख है।

(3) श्री सुमतिनाथ भगवान की 7'' ऊंची पंच तीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1522 का लेख है।

(4) श्री आदिनाथ भगवान की 10'' ऊंची चतुर्विंशति प्रतिमा है। इस पर सं. 1420 का लेख है।

(5) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 10'' ऊंची चतुर्विंशति (22 तीर्थंकर) प्रतिमा है।

(6) श्री नेमिनाथ भगवान की 7'' ऊंची पंच तीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1504 का लेख है।

(7) श्री जिनेश्वर भगवान की 7'' ऊंची पंच तीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1517 का लेख है और देवसुंदर मूर्ति के शिष्य द्वारा प्रतिष्ठित है।

(8) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 3'' ऊंची प्रतिमा है।

(9) श्री त्रिमूर्ति खड़ी मूर्तियां है। इस पर सं. 1504 का लेख है।

(10–11) श्री जिनेश्वर भगवान की 2.7'' व 2'' की प्रतिमाएं है।

(12) पादुका जोड़ी 1.5'' X 1.5'' की है।

(13) धातु यंत्र 1.7'' X 1.7'' का है।

(14) श्री आदिनाथ भगवान की 11'' ऊंची चतुर्विंशति प्रतिमा है।

(15) श्री जिनेश्वर भगवान की 4'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1965 का लेख है।

(16) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 3'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1569 का लेख है।

(17) श्री अम्बिका देवी की 4'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1510 का लेख है।

(18) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 2'' ऊंची प्रतिमा है।

(19) श्री जिनेश्वर भगवान की 4'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1965 का लेख है।

(20) श्री जिनेश्वर भगवान की 3.5'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1565 का लेख है।

(21) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 1.5'' ऊंची प्रतिमा है।

(22) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 6'' का है। इस पर सं. 1710 माघ शु. 5 का लेख है।

बाहर :

(1) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 17'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 14'' ऊंची प्रतिमा है।

अधिष्ठायक देव की मूर्ति स्थापित है।

वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है।

ऊपर मकान के ताले लगे है, बंद है। जमीन बाहर उप नगर सुवाणा कोटड़ी आदि

स्थानों पर है। अन्यत्रों के कब्जे में है। जानकारी करनी चाहिए। दो दुकानें है किराये पर दे रखी है जिसकी राशि बकाया है। पुजारी श्री नारायणजी को भी इसका पारिश्रमिक नहीं मिलता है। व्यवस्था अच्छी नहीं है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से कोई नहीं है। समाज के कुछ सदस्यों से सम्पर्क किया। जानकारी मिली है कि यह मंदिर विजयगच्छ के यति का था। वर्तमान में देखरेख कोई नहीं करता है। यदि समाज के सदस्यों की सहमति पर पार्श्वनाथ भगवान की पेढी ट्रस्ट की ओर से प्रयत्न करे, मंदिर की असातना को बचा सके ।

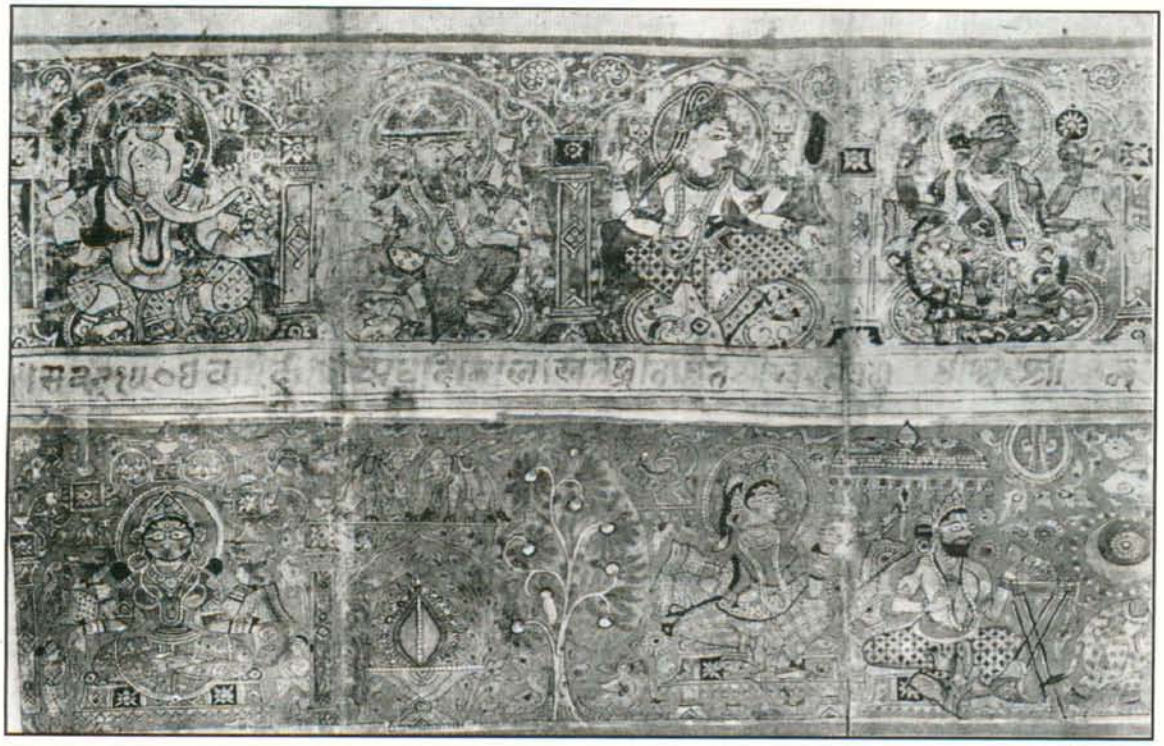

यह चित्र आकर्षिक केनवास पट्टे पर बना है जिसका नाम बसंत विलास स्क्रोल है । इसमें सुपार्श्वनाथ चरित्र को दर्शाया है । ये चित्र लंदन के विक्टोरिया व अलबर्ट संग्रहालय में है । ये चित्र कपडे पर सन् 1447 में बनाई गई है । इसमें जानवर, पक्षी, हाथी, मोर, पेड आदि के चित्र है जिनको जय यंत्र या विजयायंत्र कहा जाता है । जो जैन मुनि खरतरगच्छ के लिए बनाई है । यह कपडा अहमदाबाद में पालनपुर के किसी सदस्य के अधिकार से बना है ।

श्री महावीर भगवान का मंदिर, पुरानी धानमण्डी-311001, भीलवाड़ा

यह पाटबंद मंदिर नगर के पुरानी धानमण्डी में गली के भीतर स्थित है। यह मंदिर 300 वर्ष प्राचीन बतलाया जाता है। इसका कोई प्रमाण या ऐसा कोई उल्लेख नहीं है। केवल वर्तमान में यति श्री भोलाराम जी बताते है कि इनके पूर्वजों ने 500 वर्ष पूर्व बनाया है। मकान की बनावट के आधार पर सम्भावित हो सकता है। उल्लेखानुसार यह मंदिर यति श्री हीर सोभाग्य जी द्वारा निर्मित है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री महावीर भगवान (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 14'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1908 का लेख है।

(2) श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्याम पाषाण की 14'' ऊंची प्रतिमा है। इस प्रतिमा पर भाषा जो स्पष्ट नहीं है। बराह या गेंडा स्थापित है। आचार्य भगवत से जानकारी की जानी चाहिये। अतः श्री विमलनाथ भगवान की प्रतिमा हो सकती है।

(3) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 9'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है। बोलचाल की भाषा में आदिनाथ भगवान के नाम से जाना जाता है। पीछे टाईल्स लगी हुई है।

बाहर :

1) श्री माणिभद्र देव की प्रतिमा स्थापित है।

(2) श्री अजितनाथ देव की प्रतिमा है।

मंदिर की जमीन थी, अन्यत्रों ने कब्जा कर रखा है। मकान है तथा दो दुकानें है। किराया प्राप्त नहीं हो रहा है। विवाद चल रहा है।

वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती हैं।

मंदिर की देख रेख यति श्री धुलीचंद भोलाराम द्वारा की जा रही है। सम्पर्क सूत्र - मो. नं. 9252180974

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर व दादावाड़ी-311001, भीलवाड़ा

यह शिखरबंद मंदिर नगर के बाहरी क्षेत्र की ओर पंचमुखी हनुमान मंदिर के पास स्थित है। यह मंदिर 10 वर्ष प्राचीन है। इस मंदिर व दादावाड़ी के लिए भूमि इन्दौर निवासी बापना परिवार द्वारा भेंट में समाज को दी। मंदिर समाज द्वारा निर्मित है। पूर्व में दादावाड़ीश्री जिनकुशलसुरि जी की पादुका व प्रतिमा की देवरी की प्रतिष्ठा पूर्व में बापना परिवार द्वारा कराई गई थी।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 41'' ऊंची प्रतिमा है। परिकर बना हुआ है। इस पर सं. 2058 (22–2–02) का लेख है।

(2) श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 19'' ऊंची प्रतिमा है।

(3) श्री महावीर भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 19'' ऊंची प्रतिमा है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री चतुर्विंशति (2) पंचतीर्थी प्रतिमा (3) जिनेश्वर भगवान (4) अष्ठमंगल यंत्र

बाहर आलियों में :

(1) श्री गौतम स्वामी (2) श्री पुण्डरीक स्वामी (3) श्री चक्रेश्वरी देवी (4) श्री पद्मावती देवी (5)श्री जिनेश्वर सूरि जी (6) श्री कान्तिसागर सूरि जी की श्वेत पाषाण की प्रतिमा है।

ये सभी प्रतिमाएं श्वेत पाषाण की है ।

श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की प्रतिमा स्थापित है । श्री भोमिया देव की प्रतिमा स्थापित है ।

इसी परिसर में :

श्री जिनकुशल सूरि (दादावाड़ी) का मंदिर स्थापित है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

देवरी में :

(1) श्री जिनकुशल सूरि जी की श्वेत पाषाण की प्रतिमा स्थापित है।

इसके पास ही श्री जिनकुशल सूरि जी के चरण पादुका श्वेत पाषाण के स्थापित है। देवरी के पास (सीढ़ी के चढ़ते समय बाईं ओर) एक चरण पादुका की जोड़ी छोटे स्तम्भ में स्थापित है।

विश्लेषण यह है :

(1) स्तम्भ में स्थापित पादुका प्रथम चरण की है।

(2) स्थापित पादुका द्वितीय चरण की है।

(3) प्रतिमा तृतीय चरण की है।

पुजारी के इन्कार करने से नाप व लेख नहीं लिया जा सका। तर्क करना उचित नहीं समझा।

दादावाड़ी का बहुत बड़ा सभामण्डप है। इसके अलावा आलिये में :

(1) गौरा भैरव की प्रतिमा श्वेत पाषाण की स्थापित है।

(2) श्री अम्बिका देवी की श्वेत पाषाण की प्रतिमा स्थापित है।

(3) श्री काला भैरव की श्याम पाषाण की प्रतिमा स्थापित है।

(4) साध्वी श्री राजेन्द्र श्री जी की श्वेत पाषाण की प्रतिमा कांच में जड़ित है। परिक्रमा कक्ष बना है।

साध्वी श्री राजेन्द्र श्रीजी - साध्वी प्रतिमा का प्रचलन प्रतिष्ठा व पूजा

वैसे मैंने (लेखक) ने कई अनेक प्रतिमाओं के दर्शन किये लेकिन साध्वीगण की प्रतिमा के न दर्शन ही हुए और न ही इतनी गम्भीरता से देखा। वर्तमान में भीलवाड़ा जिले के मंदिरों का सर्वेक्षण करने पर साध्वी की प्रतिमा को देखा, विचार आया कि साध्वीगण की प्रतिमा का पूजन क्यों ? लेखक द्वारा अपने सर्वे के समय में वास्तविकता का ज्ञान हुआ जिसका वर्णन किया जा रहा है महावीर भगवान के शासनकाल में ही साध्वी की प्रतिमा का दर्शन, पूजा प्रथा का प्रचलन रहा है।

महावीर भगवान की मुख्य साध्वी श्री चन्दनबाला की परम्परा से समय समय पर अनेक साध्वियों की महानता, उपकारों का उल्लेख हुआ है। प्रचीनकाल में साध्वियों की प्रतिमा का निर्माण, प्रतिष्ठा कराना कोई आश्चर्यजनक बात नहीं थी।

सं. 1956 में महावीर जैन विद्यालय, मुम्बई के द्वारा आचार्य श्री विजयवल्लभसूरि स्मारक ग्रंथ सभी भाषा में प्रकाशित हुए जिसमें हिन्दी विभाग का संपादन आगम प्रभाकर मुनि श्री पुण्य विजय जी म.सा., डॉ. साड़ेसरा व प्रो. श्री पृथ्वीराज जैन द्वारा किया गया।

गुजराती भाषा की पुस्तक के पृष्ठ 172 पर जैन साध्वियों की पाषाण युक्त प्रतिमा पर प्रकाश डालते हुए श्री यशोदेव विजय जी (यशोदेवसूरि) का प्रकाशित लेख में लिखा है कि–

प्राचीनकाल में शिल्पकला के अन्तर्गत आचार्य व साधु साध्वियों के स्मारक व स्तूप के रूप में ही निर्माण होते आये थे। कालान्तर में प्रतिमाओं के रूप में प्रदर्शित होने लगी। उस समय भी साध्वियों की प्रतिमाओं का वर्णन आता रहा है। लेकिन यह अप्रकाशित ही रहा। इन सब तथ्यों को श्री यशोदेवविजय जी ने दो साध्वियों की प्रतिमाओं का वर्णन सचित्र वर्णन किया और लिखा कि साध्वी की प्रतिमा का प्रचलन कब से हुआ यह निश्चित नहीं कहा जा सकता। हाँ प्रस्तुत प्रतिमाएं 12 वी शताब्दी की निर्मित है इसलिए इनका प्रचलन इसके पूर्व का ही है।

प्रतिमा नं. 1 :

यह आरास की खड़ी प्रतिमा है। इस साध्वी के हाथ में साधु जीवन के प्रतीक ओगा, मूँहपती आदि लिए हुए है। वे हाथ जोड़कर नमस्कार मुद्रा में खड़ी है। पैरो पर वस्त्र धारण किए हुए है तथा कम्बली रखी हुई है यह प्रतिमा वि. सं. 1205 की है जो श्री यशोदेवविजय द्वारा संग्रहित है। इस प्रतिमा के नीचे महतरा सपरिवार उत्कीर्ण है जो पालीताणा के साहित्य मंदिर में प्रदर्शित है।

प्रतिमा नं. 2

यह आरास की प्रतिमा वि.सं. 1298 की है जो गुजरात के खेड़ागांव के पास जो मातर मंदिर तीर्थ की है। इस पर लेख आर्या पद्म सिरी का है इस साध्वी को प्रवचन देते हुए दर्शाया गया है इस प्रतिमा को भी धर्म के प्रतीक उपकरणो के साथ दर्शाया है ।

साध्वी प्रतिमा को प्रतिष्ठा का विधी विधान 15 वीं शताब्दी में रचित वर्धमानसूरि के आचार दिनकर ग्रंथ के 13 वें अधिकार में भी उल्लेख है। वर्तमान में नाकोड़ा तीर्थ के मंदिर में साध्वी सज्जन श्रीजी, महरोली दिल्ली में साध्वी श्री रत्ना श्रीजी की, साध्वी श्री विचक्षण श्रीजी का और दिल्ली के गुरू

वल्लभ स्मारक में साध्वी महतरा मृगावती श्रीजी की समाधि पर प्रतिष्ठित प्रतिमा है।

प्राचीन ग्रंथों के रचयिता श्री हरिभद्र सूरि जी की समाधि मंदिर जो चितौड़ (मेवाड़) के किले के नीचे है। इस पर 61" ऊंची प्रतिमा है। यह साध्वी के साधुत्व की महानता थी वे छठी शताब्दी में भी हरिभद्रसुरि ने आयुपर्यन्त तक अपने आपको महातरा सुत (पुत्र) ही कहा। दर्शन पूजा अर्चना आदि करते है।

(5) श्री घंटाकर्ण महावीर की श्वेत पाषाण की प्रतिमा स्थापित है ।

वार्षिक ध्वजा ज्येष्ठ शुक्ला 9 को चढ़ाई जाती है।

सभामण्डप की दीवारों पर श्री दादागुरू की जीवन चरित्र पट्ट है।

इस मंदिर की देखरेख श्री पार्श्वनाथ जैन मूर्तिपूजक संघ, भीलवाड़ा द्वारा की जाती है । अध्यक्ष श्री अमृतलाल जी सुराणा व श्री मुकुन्द जी बोहरा द्वारा की जाती है । सम्पर्क सूत्र : 01482-224430

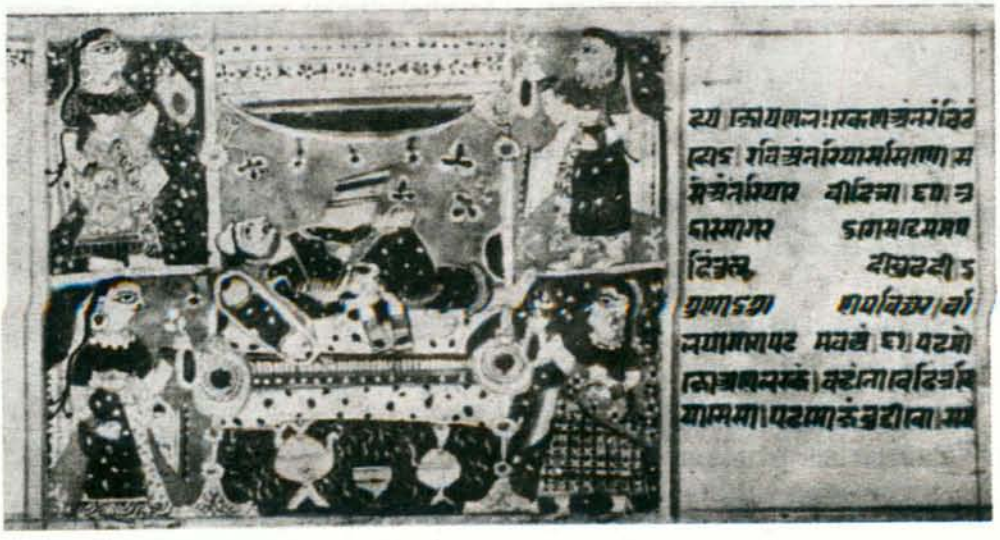

यह चित्र समग्रहिणी सूत्र में वि. सं. 1644 में बना है जो पूण्यविजय जी म.सा. द्वारा संग्रहित है । इसमें स्त्रीयों की ओढनी के रंग को महत्व दिया गया है ।

श्री आदीश्वर भगवान का मंदिर सांगानेर-311001 जिला भीलवाड़ा

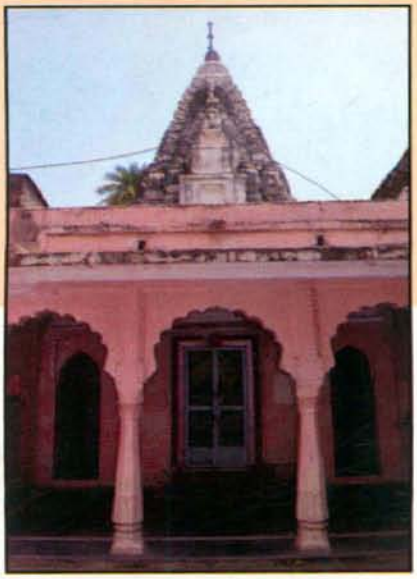

यह शिखरबंद मंदिर जिला भीलवाड़ा से 5 किलोमीटर दूर है। यह नगर परिषद क्षेत्र में ही डाडो की गली में स्थित है। यह मंदिर करीब 500 वर्ष प्राचीन है। इसकी पुष्टि स्थापित प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख है तथा यह भी बतलाया गया कि ये प्रतिमा पहले से सैंकड़ों वर्षों से स्थापित है। मंदिर की बनावट से भी इसकी पुष्टि होती है। मंदिर के 5 स्तम्भ है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री आदिनाथ भगवान (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 15'' ऊंची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

(2) श्री जिनेश्वर भगवान (मूलनायक के दाएं) की श्याम पाषाण की 8'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1526 का लेख है।

(3) श्री पार्श्वनाथ भगवान (मूलनायक) की श्याम पाषाण की 10'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1538 का लेख है।

उत्थापित प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 5'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट लेख है।

(2) श्री आदिनाथ की धातु की 5'' ऊंची पंच तीर्थी प्रतिमा है। इस पर 1444 का लेख है।

(3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 1.5'' ऊंची प्रतिमा है।

(4) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 4.5'' का है। इस पर सं. 2045 वैशाख शुक्ला 5 का लेख है।

आलियों में :

(1) श्री गौमुख यक्ष की श्वेत पाषाण की 11'' ऊंची उत्थापित प्रतिमा है।

(2) श्री चक्रेश्वरी देवी की श्वेत पाषाण की 11'' ऊंची उत्थापित प्रतिमा है।

(3) श्री अधिष्ठायक देव की मूर्ति स्थापित है।

मंदिर की 2 दुकानें है जो किराये पर है तथा 3 बीघा जमीन है जिस पर कृषि होती है।

वार्षिक ध्वजा सभी मंदिरों में एक साथ चढ़ती है। कोई तिथि निश्चित नहीं है।

मूर्तिपूजक समाज का एक भी सदस्य नहीं है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से राजेश जी पोखरना द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र - 9413768185

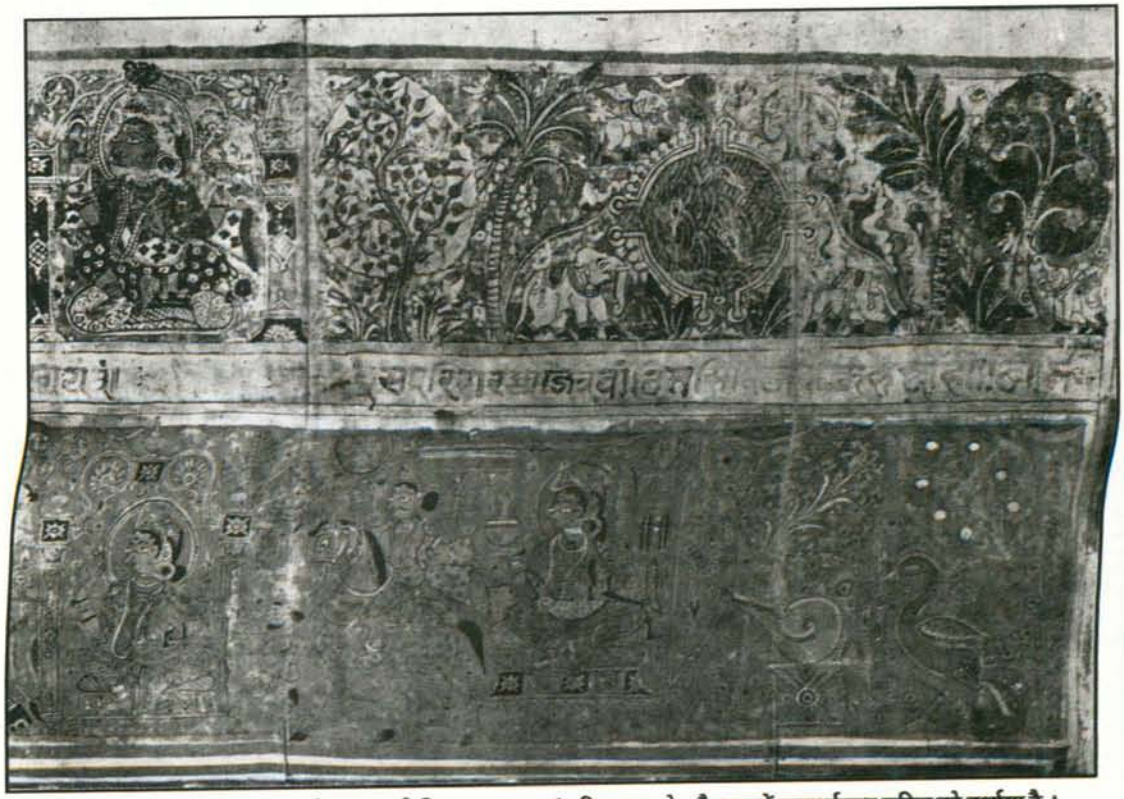

यह चित्र आकर्षिक केनवास पट्टे पर बना है जिसका नाम बसंत विलास स्क्रोल है। इसमें सुपार्श्वनाथ चरित्र को दर्शाया है। ये चित्र लंदन के विक्टोरिया व अलबर्ट संग्रहालय में है। ये चित्र कपडे पर सन् 1447 में बनाई गई है। इसमें जानवर, पक्षी, हाथी, मोर, पेड़ आदि के चित्र है जिनको जय यंत्र या विजयायंत्र कहा जाता है। जो जैन मुनि खरतरगच्छ के लिए बनाई है। यह कपडा अहमदाबाद में पालनपुर के किसी सदस्य के अधिकार से बना है।

श्री चन्द्रप्रभ भगवान का मंदिर सांगानेर-311011, जिला भीलवाड़ा

यह पाटबंद मन्दिर जिला मुख्यालय से 5 किलोमीटर दूर हैं यह नगर परिषद क्षेत्र में ही चारभुजा मंदिर के पास स्थित हैं।

उल्लेखानुसार यह मंदिर सं. 1840 के लभगभ का निर्मित है। यह मंदिर 500 वर्ष प्राचीन बतलाया गया। जिसकी पुष्टि प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख से होती है। मंदिर के तीन स्तम्भ है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री चन्द्रप्रभ भगवान (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 11" ऊंची प्राचीन प्रतिमा है।

(2) श्री सम्भवनाथ भगवान (मूलनायक के दाएं) की श्वेत पाषाण की 10" ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1675 वैशाख मासे ..... 13 का लेख है।

(3) श्री महावीर भगवान (मूलनायक के बाएं) की श्वेत पाषाण की 10" ऊंची प्रतिमा है।

यक्ष देव की श्याम पाषाण की प्रतिमा है। अधिष्ठापक देव की मूति स्थापित है।

वार्षिक ध्वजा सभी मंदिरों के साथ चढ़ती है। कोई तिथि निश्चित नहीं है।

उपाश्रय / स्थानक मंदिर के साथ ही है।

लकड़ी का पाट खराब हो रहे है, बदलने व जीर्णोद्धार की आवश्यकता है।

मूर्तिपूजक समुदाय का एक भी सदस्य नहीं है । स्थानीय स्तर पर कोई नहीं देखता, पुजारी पूजा करता है

श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, हलेड़-311011, तहसील भीलवाड़ा

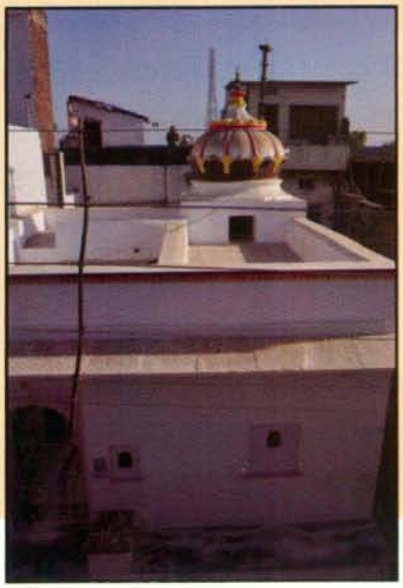

यह घूमटबंद मंदिर जिला व तहसील मुख्यालय से 10 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर 100 वर्ष प्राचीन बताया गया है। यह मंदिर श्री रूपचंदजी पारख के पिता श्री चम्पालाल जी पारख द्वारा बनाया गया। वर्तमान में श्री मूर्तिपूजक समाज का एक ही घर है व उनके द्वारा ही मंदिर की देखरेख की जाती है। पूर्व में श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर होने का उल्लेख है। वर्तमान में शांतिनाथ भगवान का मंदिर है। जिस पर सं. 1942 का लेख होने का भी उल्लेख है। श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर होने की पुष्टि गौमुख यक्ष की प्रतिमा से होती है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री शांतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 14'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट लेख है।

उत्थापित धातु की चल प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री सुमतिनाथ भगवान की 6'' ऊंची पंच तीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1486 माघ शुदि 11 का लेख है।

(2) श्री अष्टमंगल यंत्र 5''X3'' का है।

सभामण्डप में :

श्री गौमुख यक्ष की श्वेत पाषाण की 10'' ऊंची प्रतिमा है।

वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है। ध्वजा दण्ड नहीं है।

मंदिर की देखरेख श्री प्रकाशजी पारीख द्वारा की जाती है। सम्पर्क सूत्र - 9414262123

श्री शीतलनाथ भगवान का मंदिर, दांतल-311011, तहसील भीलवाड़ा

यह शिखरबंद मंदिर जिला व तहसील मुख्यालय से 10 किलोमीटर दूर है। यह मंदिर केवल 27 वर्ष पूर्व श्री पोखरना परिवार द्वारा निर्माण कराया गया है। भूमि लादुलाल शांतिलाल जी ने मंदिर बनवाने के लिए दी। मंदिर का कुछ कार्य अपूर्ण है। प्रतिष्ठा होनी भी शेष है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री शीतलनाथ भगवान (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 19'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री आदिनाथ भगवान (मूलनायक के दाएं) की श्वेत पाषाण की 10'' ऊंची प्रतिमा है।

(3) श्री शान्तिनाथ भगवान (मूलनायक के बाएं) की श्वेत पाषाण की 10'' ऊंची प्रतिमा है। इन तीनों प्रतिमाओं पर सं. 2063 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री शांतिनाथ भगवान की 8'' ऊंची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 2035 का लेख है।

(2) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 6'' का है। इस पर सं. 2035 ज्येष्ठ शु. 2 का लेख है।

(3) श्री अष्ठमंगल यंत्र 6'' X 3'' का है। इस पर सं. 2035 ज्येष्ठ शु. 2 का लेख है।

बाहर हॉल में :

(1) श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 7'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की उत्थापित 9'' ऊंची प्रतिमा है।

(3) श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊंची प्रतिमा है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख श्री लादुलाल जी पोखरना द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र - 01482-280104

श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर सुवाणा-311011, तहसील भीलवाड़ा

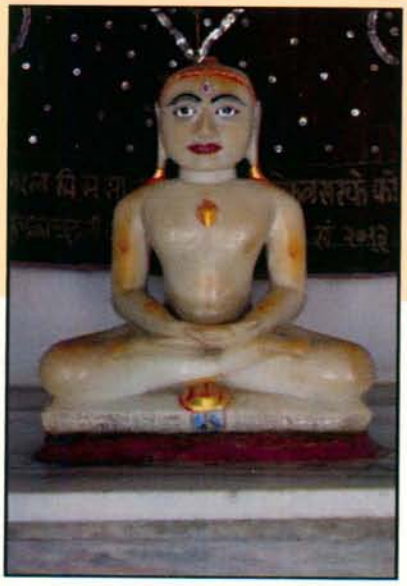

यह घूमटबंद मंदिर भीलवाड़ा-माण्डलगढ़ सड़क पर भीलवाड़ा से 5 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है । यह मंदिर 200 वर्ष प्राचीन बताया गया है लेकिन ऐसा कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं हुआ क्योंकि पूर्व में श्री आदिनाथ भगवान की प्रतिमा थी। इस मंदिर का 52 वर्ष पूर्व जीर्णोद्धार कराया गया ।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' ऊंची प्रतिमा है। एक देवकुलिका में स्थापित है। इस प्रतिमा पर वि.सं. 1859 शाके 1726 वैशाख शुदि 3 का लेख है।

आलिएं में :

(1) श्री धरर्णन्द्र देव की श्याम पाषाण की 10'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 10'' ऊंची प्रतिमा है।

मंदिर के प्रवेश करते समय प्रथम बरामदा में शिव पार्वती– हनुमान की प्रतिमा स्थापित है। अतः इस मंदिर का नाम शिव–पार्वती पार्श्वनाथ बालाजी के नाम से पुकारा जाता है। यही नाम लिखा हुआ है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है। कलश व ध्वजा स्थापना का लाभ श्री शोभालालजी हिंगड़ द्वारा लिया गया था।

मंदिर की देखरेख जैन समाज द्वारा की जाती है। समाज की ओर से श्री गणपत लाल जी चपलोत (9352340871) व श्री शम्भूलाल जी खारीवाल (9829208921) द्वारा की जाती है।

श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, कोदुकोटा-311011, तहसील भीलवाड़ा

यह घूमटबंद मंदिर भीलवाड़ा से 15 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। इस मंदिर की प्राचीनता के बारे में विशेष जानकारी उपलब्ध नहीं हो पाई। बताया गया है कि 100 वर्ष पूर्व का मंदिर है। प्रतिमा रावला में रखी हुई थी। 15 वर्ष पूर्व नूतन मंदिर समाज द्वारा निर्माण कराया गया। प्रतिमांपर उत्कीर्ण समय के आधार को सही माना जाए तो 75 वर्ष करीब प्राचीन मंदिर है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री शांतिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 17'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर वि.सं. 1992 वैशाख शु. 10 का लेख है।

(2) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 4'' ऊंची प्रतिमा है।

मंदिर की देवकुलिका पर कांच की जड़ाई है।

वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है।

ग्राम में एक भी जैन परिवार नहीं रहता है। पुजारी अनियमित कार्य करता है। अस्वच्छता देखी गई। विचार करना चाहिए।

मंदिर की देखरेख श्री मुकेशजी S/o गोपालसिंह जी (जो भीलवाड़ा रहते है, सप्ताह में एक बार आते है) द्वारा की जाती है।

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, श्याम विहार कॉलोनी-311001, भीलवाड़ा

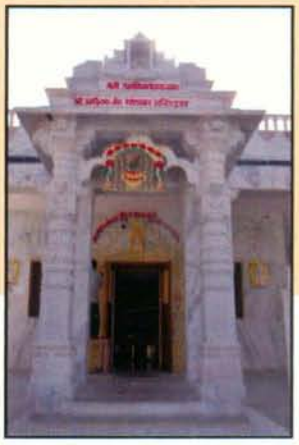

यह घुमटबंद मंदिर भीलवाड़ा के नगरपालिका क्षेत्र की श्याम विहार कॉलोनी में स्थित है। मंदिर की भूमि सार्वजनिक है। यहां पर दो पार्क व छतरीयां थी, कितनी थी अज्ञात रही। समतल कर नूतन मंदिर निर्माण करा दिनांक 17-2-12 को प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। एक बावड़ी भी है। इसके पूर्व में इसमें मुस्लिम धर्म के ताजिए प्रवाहित किये जाते थे।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 23'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 21'' ऊंची प्रतिमा है।

(3) श्री महावीर भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 19'' ऊंची प्रतिमा है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री महावीर भगवान की 8'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2068 का लेख है।

(2) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 4'' का है। इस पर सं. 2068 का लेख है।

सभामण्डप के आलियों में :

(1) श्री शांतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 19'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री पार्श्वनाथ का चक्राकार यंत्र।

(3) श्री गौतम स्वामी की श्वेत पाषाण की 19'' ऊंची प्रतिमा है।

(4) श्री चक्रेश्वरी देवी की श्वेत पाषाण की 1.5'' ऊंची प्रतिमा है।

(5) श्री सरस्वती देवी की श्वेत पाषाण की 15'' ऊंची प्रतिमा है।

(6) श्री मुनिसुव्रत भगवान की श्वेत पाषाण की 19'' ऊंची प्रतिमा है।

(7) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 19′ ऊंची प्रतिमा है।

(8) श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 19'' ऊंची प्रतिमा है।

(9) श्री गौमुख यक्ष की श्वेत पाषाण की 15'' ऊंची प्रतिमा है।

(10) श्री नाकोड़ा भैरव की श्वेत पाषाण की 19'' ऊंची प्रतिमा है।

दीवार पर शत्रुंजय, तीर्थ, श्री सम्मेदशिखर जी तीर्थ के पट्ट बने हुए है।

वार्षिक ध्वजा आगामी वर्ष से प्रारम्भ होगी।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री सुशील जी पोखरना, श्री कुशलसिंह जी बोल्या 9351552768 द्वारा की जाती है।

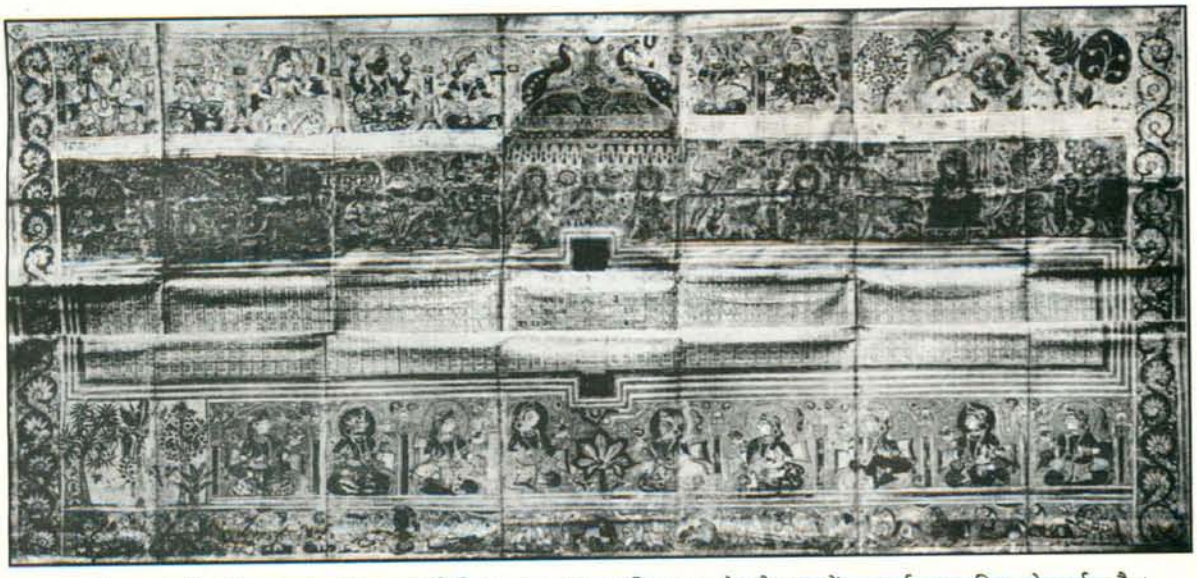

यह चित्र आकर्षिक केनवास पट्टे पर बना है जिसका नाम बसंत विलास स्क्रोल है। इसमें सुपार्श्वनाथ चरित्र को दर्शाया है। ये चित्र लंदन के विक्टोरिया व अलबर्ट संग्रहालय में है। ये चित्र कपडे पर सन् 1447 में बनाई गई है। इसमें जानवर, पक्षी, हाथी, मोर, पेड़ आदि के चित्र है जिनको जय यंत्र या विजयायंत्र कहा जाता है। जो जैन मुनि खरतरगच्छ के लिए बनाई है। यह कपड़ा अहमदाबाद में पालनपुर के किसी सदस्य के अधिकार से बना है।

श्री महावीर भगवान का मंदिर, जमुना विहार-311001, भीलवाड़ा

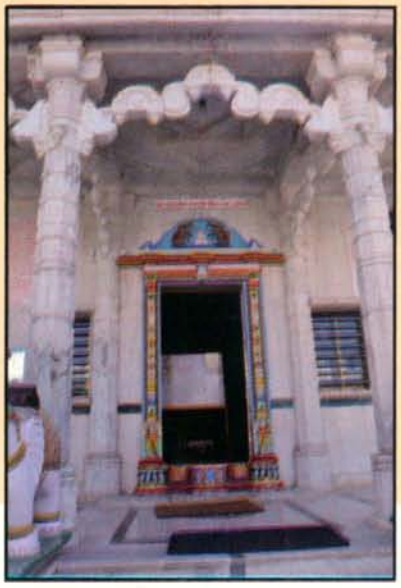

यह शिखरबंद मंदिर नगरपालिका क्षेत्र की जमना विहार कॉलोनी में स्थित है। इस मंदिर के लिए भूखण्ड 30'X60' के क्षेत्रफल का भूखण्ड कॉलोनी निर्माण श्री आसनदास भागनानी ने भेंट में दिया। श्री निपुणरत्न विजय म.सा. की प्रेरणा से समाज के सदस्यों ने मंदिर निर्माण कराना प्रारम्भ किया और दिनांक 31-4-05 को भूमि पूजन व शिलान्यास करा मंदिर निर्मित कराकर 22-4-2006 को प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। यह भव्य मंदिर है जिसके तीन दरवाजे है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री महावीर भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 23'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री धर्मनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 19'' ऊंची प्रतिमा है।

(3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 19'' ऊंची प्रतिमा है।

सभामण्डप में- दाहिनी ओर :

(1) श्री मातंग यक्ष की श्वेत पाषाण की 13'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री गौतम स्वामी की श्वेत पाषाण की 11'' ऊंची प्रतिमा है।

(3) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 13'' ऊंची प्रतिमा है।

बाईं ओर :

(1) श्री सिद्धायिका देवी की श्वेत पाषाण की 13'' ऊंची प्रतिमा हैं।

(2) श्री रत्नप्रभ सूरिश्वरे जी म.सा. की श्वेत पाषाण की 10'' ऊंची प्रतिमा है।

(3) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 15'' ऊंची प्रतिमा है।

सभामण्डप में ही श्री सम्मेदशिखरजी व शत्रुंजय तीर्थ के पट्ट बने हुए है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री धर्मनाथ भगवान की 9'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2062 का लेख है।

(2) श्री शान्तिनाथ भगवान की 8'' ऊंची प्रतिमा है।

(3, 4, 5) श्री जिनेश्वर भगवान की छोटी प्रतिमाएं है।

(6) श्री अष्ठमंगल यंत्र है।

(7, 8)श्री अष्ठमंगल यंत्र श्रावकों द्वारा अस्थाई रूप से पूजा के लिये रखे है।

वार्षिक ध्वजा वैशाख सुदि 9 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर संचालन के लिए श्री जमना विहार श्वेताम्बर समिति बनाई गई है। इनकी ओर से श्री ज्ञानकुमार सिंह जी चौधरी (01482-250329), श्री गोपाल सिंह जी चौरड़िया द्वारा की जाती है।

यह चित्र आवश्यक लघुवृति से सन् 1338 में शान्तिनाथ भण्डार मुम्बई में सुरक्षित की गई। बीच में तीर्थंकर व दोनो ओर 11 गणधर देव है। यह समवसरण की रचना है। इस चित्र की लम्बाई 7.5'' व चौडाई 2.5' है। आगम अवतार मुनि पुण्यविजय जी म.सा. द्वारा संग्रहित जो अब L.D. Institution of Indology Ahmedabad में है। यू. पी. शाह व मोतीचन्द्र ने कल्पसूत्र सन् 1346 स्वर्णमय व हरे रंगों में प्रकाशित की है।

श्री नमिनाथ भगवान का मंदिर काशीपुरी-311801, भीलवाड़ा

यह पाटबंद मंदिर (देवरी) नगर की वकील कॉलोनी से जुड़ी हुई काशीपुरी कॉलोनी में स्थापित है। यह मंदिर केवल 18 वर्ष प्राचीन है। इस मंदिर को बनाने के लिए भूखण्ड भी भेंट किया व तत्पश्चात सभी के सहयोग से इस मंदिर का निर्माण कराया।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री नमिनाथ भगवान (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 19'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2050 आषाढ़ कृष्णा 8 का लेख है।

(2) श्री आदिनाथ भगवान (मूलनायक के दाएं) की श्वेत पाषाण की 15'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2050 का लेख है।

(3) श्री मुनिसुव्रत भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 15'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2050 का लेख है।

उत्थापित धातु का अष्ठमंगल यंत्र 6''X4'' का है। इस पर सं. 2064 का लेख है। वेदी की दीवार के बीच पबासन देवी स्थापित है।

सभामण्डप के - पृथक पृथक आलिएं में मूलनायक के दाहिनी ओर :

(1) श्री सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 25'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2050 वै. शु. 6 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं :

(1–2) श्री पार्श्वनाथ भगवान 9'', 9'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर (1) अस्पष्ट लेख है व दूसरी पर सं. 2058 का लेख है।

(3) श्री मुनिसुव्रत भगवान की 7'' ऊंची प्रतिमा है।

(4) श्री शीतलनाथ भगवान की 7'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2054 का लेख है।

(5) श्री सिद्धचक्र यंत्र 4.5'' का गोलाकार है। इस पर सं. 2054 का लेख है।

(6–7) श्री अष्ठमंगल यंत्र 5''X2.5'', 5''X2.5'' का है। इस पर सं. 2054 का लेख है।

(8) श्री अष्ठमंगल यंत्र 6''X3'' का है।

मूलनायक के बाई ओर :

(1) श्री सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 25'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2050 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री सुमतिनाथ भगवान की 11'' ऊंची प्रतिमा है इस पर सं. 2052 वै. शु. 2 का लेख है।

(2) श्री शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा है। इस पर सं. 2050 का लेख है।

(3) श्री जिनेश्वर भगवान की चतुर्विंशति प्रतिमा है। इस पर सं. 2064 वै. कृ. 4 का लेख है।

(4) श्री सिद्धचक्र यंत्र 6'' गोलाकार है। इस पर सं. 2064 का लेख है।

(4) श्री अष्ठमंगल यंत्र 6''x3'' का है । इस पर सं. 2064 का लेख है ।

मूल देवरी के पीछे की ओर :

(1) श्री लावण्यसूरिजी की (2) श्री रत्नप्रभ सूरि जी की (3) श्री नेमिसूरिजी की (4) श्री दक्षसूरिजी महाराज का. की श्वेत पाषाण की 13'' ऊंची प्रतिमाएं है।

सभामण्डप में ही – दाहिनी ओर :

श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 13'' ऊंची प्रतिमा है।

श्री भुकुटी यक्ष की श्वेत पाषाण की 13'' ऊंची प्रतिमा है।

बाई ओर :

(1) श्री गन्धारी यक्षिणी की श्वेत पाषाण की 13'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 13'' ऊंची प्रतिमा हैं।

मंदिर में प्रवेश करते समय बरामदा में :

(1) श्री मंगल मूर्ति श्वेत पाषाण की स्थापित है तथा श्री गिरनारजी, सम्मेद शिखर जी व शत्रुंजय तीर्थ के पट्ट लगे है।

वार्षिक ध्वजा ज्येष्ठ कृष्णा 8 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से निम्न द्वारा- श्री जगवीरसिंह जी चौधरी (01482-224912) श्री हस्तीमल जी गुगलिया (01482-224588) श्री नरेन्द्र कुमार जी मेहता (01482-221517) द्वारा की जाती है।

श्री सुमतिनाथ भगवान का मंदिर मांगरोप, जिला भीलवाड़ा

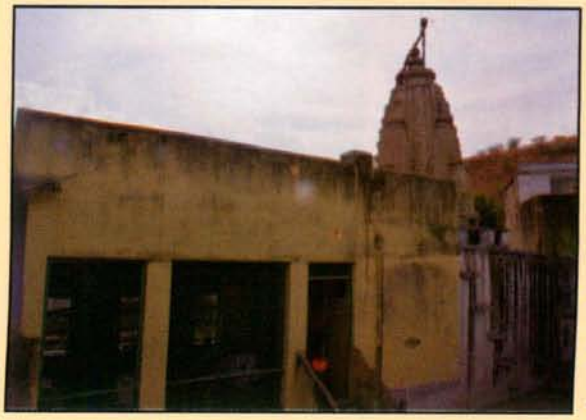

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 17 किलोमीटर भीलवाड़ा-चित्तौड़गढ़ मार्ग पर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर 400 वर्ष प्राचीन बतलाया गया लेकिन इसकी पुष्टि नहीं हो पाई। वर्तमान में 18 वर्ष पूर्व प्रतिष्ठा कराई गई। उल्लेखानुसार यह मंदिर सं. 1985 का पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर था। यह ग्राम तृतीय श्रेणी का ठिकाना रहा है। महाराणा प्रताप के ग्यारहवें पुत्र पूरणमल (पूरा) के वंशज है जो पूरावत कहलाते थे। 18 वर्ष पूर्व मंदिर जीर्ण शीर्ण हो जाने से, प्रतिमाओं को पॉलिश कमजोर हो जाने से नई प्रतिमाओं को बिराजमान कर प्रतिष्ठा कराई।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री सुमतिनाथ भगवान (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 17'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर पीछे लेख है, आगे श्री अजितविजयजी म.सा. द्वारा प्रतिष्ठित अम्बालाल भार्या मूलीदेवी पढ़ने में आता है।

(2) श्री सुविधिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 13'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर भी पीछे की ओर से लेख है।

(3) श्री वासुपुज्य भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची उत्थापित प्रतिमा है । इस पर पीछे की ओर लेख है ।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 9'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री जिनेश्वर भगवान की 12'' ऊंची चतुर्विंशति प्रतिमा है।

(4) श्री जिनेश्वर भगवान की 7'' ऊंची प्रतिमा है।

(5) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 6'' का है। इस पर सं. 2035 ज्येष्ठ शुक्ला 2 का लेख है।

(6) श्री अष्टमंगल यंत्र 6''X3.5'' का है। इस पर सं. 2045 का ज्येष्ठ शु. 2 का लेख है।

बाहर आलियों में :

(1) श्री तुंबरू यक्ष देव की श्वेत पाषाण की 11'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2025 का लेख है।

(2) श्री महाकाली क्षिणी देवी की श्वेत पाषाण की 11'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2025 का लेख है।

बाहर आलियों में :

(1) श्री जिनेश्वर भगवान (शांतिनाथ) की श्वेत पाषाण की प्राचीन 14'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट लेख है। इसको बोलचाल में महावीर भगवान बोला जाता है।

(2) श्री माणिभद्र देव की श्वेत पाषाण की 12'' ऊंची प्रतिमा है।

(3) श्री नाकोड़ा भैरव की श्वेत पाषाण की 16'' ऊंची प्रतिमा है।

(4) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 13'' ऊंची प्रतिमा है।

परिक्रमा कक्ष बना हुआ है। बाहर हॉल व कमरा है। जमीन ओसवाल समाज की है। जिसमें विद्यालय चलता है, प्राप्त किराये से मंदिर का दैनिक काम किया जाता है।

वार्षिक ध्वजा आषाढ़ माह में चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री लक्ष्मीलाल जी चण्डालिया (01482-280416) व श्री मनोहरसिंह जी सुराणा (94605 67056) द्वारा की जाती है।

श्री महेश दवे
मोली आर्ट्स, देलवाड़ा

श्री महेश दवे ने हमारे साथ भीलवाड़ा जिले में गांव-गांव जाकर व रणकपुर तीर्थ के समस्त मंदिरों व प्रतिमाओं के फोटो लिये।

आपका खूब-खूब आभार

श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर हमीरगढ़-311025, जिला भीलवाड़ा

यह पाटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 20 किलोमीटर दूर भीलवाड़ा-चित्तौड़ मार्ग पर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह घर देरासर है जिसको यतिजी का मंदिर कहा जाता है। उल्लेखानुसार यह मंदिर यति श्री केसरीचंद जी द्वारा सं. 1853 का निर्मित है।

यह द्वितीय श्रेणी का ठिकाना रहा है। महाराणा उदयसिंह के पुत्र वीरमदेव के वंशज है। इनको "रावत" की उपाधि प्रदान की गई थी।

इस मन्दिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ भगवान (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 19" ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1853 का लेख है।

(2) श्री मुनिसुव्रत भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 11" ऊंची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

(3) श्री चन्द्रप्रभ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 11" ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1840 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं :

(1) श्री आदिनाथ भगवान की 5" ऊंची पंच तीर्थी प्रतिमा है।

(2) श्री गोलाकार यंत्र (बीस स्थानक) 6" का है।

(3) श्री समवसरण 9" का है। जिस पर प्रतिमा विराजमान है।

वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है।

मंदिर के साथ भूमि होनी चाहिए लेकिन श्री यतिजी द्वारा कोई जानकारी प्राप्त नहीं हुई तथा कहीं उल्लेख भी नहीं आया। मंदिर की देखरेख यति श्री सुरेश जी द्वारा की जाती है।

श्री विमलनाथ श्री सम्भवनाथ भगवान का मंदिर, बापुनगर-311001, भीलवाड़ा

यह देवरीयुक्त पाटबंद मंदिर नगर के काशी कॉलोनी में स्थित है। यह नूतन मंदिर बापू नगर है। इसकी प्रतिष्ठा भी सं. 2067 में ही सम्पन्न हुई। इस वर्ष इस मंदिर की प्रथम वर्षगांठ थी। इस मंदिर के लिए भूमि श्री शांतिलाल जी बाबेल (सिंघवी) की स्मृति में उनकी पत्नी श्रीमती सुशीला देवी सिंघवी (बाबेल) नि. केरिया ने भेंट दी और समाज के सहयोग से मंदिर निर्माण करा प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री विमलनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 23'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री सम्भवनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 19'' ऊंची प्रतिमा है।

(3) श्री मुनिसुव्रत भगवान (मूलनायक के बाएं) की श्वेत पाषाण की 19'' ऊंची प्रतिमा है।

इन तीनों प्रतिमाओं पर वि.सं. 2067 का लेख है।

नीचे की वेदी पर :

श्री सम्भवनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' ऊंची प्रतिमा है।

सभामण्डप (हॉल में) - पृथक पृथक आलियों में :

(1) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 13'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) षष्टमुख यक्ष की श्वेत पाषाण की 11'' ऊंची प्रतिमा है।

(3) श्री वासुपूज्य भगवान की श्वेत पाषाण की 19'' ऊंची प्रतिमा है।

(4) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 15'' ऊंची प्रतिमा हैं।

(5) श्री विजियादेवी की श्वेत पाषाण की 15'' ऊंची प्रतिमा है।

(6) श्री महावीर भगवान की श्वेत पाषाण की 19'' ऊंची प्रतिमा है।

(7) श्री भदेश्वर भैरव की प्रतिमा स्थापित है।

(8) श्री भोमिया जी की प्रतिमा स्थापित है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 9'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री जिनेश्वर भगवान की 12'' ऊंची चतुर्विंशति प्रतिमा है। इस पर सं. 2067 का लेख है।

(3) श्री सिद्धचक्र यंत्र 4.5'' गोलाकार है।

(4) श्री अष्ठमंगल यंत्र 6.5'' X 4'' का है। इस पर सं. 2066 फा. वदि 14 रविवार का लेख है।

दो पट्ट शत्रुंजय व सम्मेत शिखर जी के है।

इन सभी प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा सं. 2067 में सम्पन्न हुई। मंदिर से जुड़ा हुआ बड़ा हॉल का उपाश्रय है।

वार्षिक ध्वजा ज्येष्ठ शुक्ला 5 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री अनिल जी बोरदिया (9829872634) व श्री सुभाष जी महात्मा (9414302549) द्वारा की जाती है।

ये चित्र वि. सं. 1415 (सन् 1359) शान्तिनाथ चरित्र के
चित्र प्रवर्तक श्री कांतिविजय जी म.सा. द्वारा संग्रहित है जो गुम हो चुके थे।
कल्पसूत्र सन् 1381 खंजाजी संग्रहित राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली

श्री नेमिनाथ भगवान का मंदिर, पुर-311802, जिला भीलवाड़ा

यह शिखरबंद मंदिर भीलवाड़ा नगरपालिका का भाग पुर में स्थित है। रेलवे स्टेशन से 10 किलोमीटर दूर है। प्रतिमा का लेख उल्लेखानुसार यह मंदिर समाज द्वारा सं. 1798 का निर्मित माना गया है। बोलिया वंश परम्परा की ख्यात के आधार पर श्री सुल्तानजी बोलिया ने शिलान्यास और सं. 1232 में प्रतिष्ठा कराई। मुगलों द्वारा यह मंदिर तोड़ दिया गया था। सर्वप्रथम इस मंदिर जिर्णोद्धार सं. 1376 में हुआ। इसके बाद पुनः सं. 1619 वैशाख शु. 3 को जीर्णोद्धार हुआ और 1695 से समाचंद जी, भागचंद जी की ओर से ध्वजादण्ड चढ़ाया। पुनः आक्रमण हुआ और जीर्णोद्धार करा संवत् 1798 वैशाख वदि 6 को प्रतिष्ठा श्री अनोप जी बोलिया परिवार ने कराई। जिसमें 10,000/- खर्च हुए और सं. 1802 में उनके निवास पर महाराजा जगतसिंह जी घर पधारे।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री नेमिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 29" ऊंची प्रतिमा हैं। इस पर सं. 1798 वै. शु. 3 का लेख है।

(2) श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 25" ऊंची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर सं. 1650 शाके 1515 पौष सुदि 5 का लेख है।

(3) श्री सम्भवनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 25" ऊंची प्रतिमा है।

श्री जिनेश्वर भगवान का पट्ट 4"x2.5" का पिंक रंग का है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री वासुपूज्य भगवान की 7" ऊंची पंच तीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1577 माघ सुदि 5 का लेख है।

(2) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 6'' का है। इस पर सं. 2040 माघ कृष्णा प्रतिपदा का लेख है।

(3) श्री अष्ठमंगल यंत्र 6'' X 3'' का है। इस पर सं. 2040 माघ कृष्णा प्रतिपदा का लेख है।

(4) श्री जिनेश्वर भगवान की 12'' ऊंची चतुर्विशंति प्रतिमा है। इस पर सं. 15–11–2008 का लेख है।

(5–6) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 2.5'', 1.5'' ऊंची प्रतिमा है।

अधिष्ठायक देव की 16'' ऊंची प्रतिमा है।

वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख स्थाई फण्ड से प्राप्त आय व जन सहयोग से समाज की ओर से श्री माणकचंद जी ढिलीवाल करते है। सम्पर्क सूत्र - 9413995404

यह चित्र सन् 1433 की बना हुई है जिसको सर्वपप्रथम मुनि पुण्यविजय जी म.सा. द्वारा। यह कल्पसूत्र में दिखाया गया है *जिसमें पेड, फूल, पत्ते आदि को एक ही कलम से बनाई गई है। इसके बाद मोतीचन्द्र ने दिखाई।*

श्री चन्द्रप्रभ भगवान का मन्दिर, पुर-311802, तहसील भीलवाड़ा

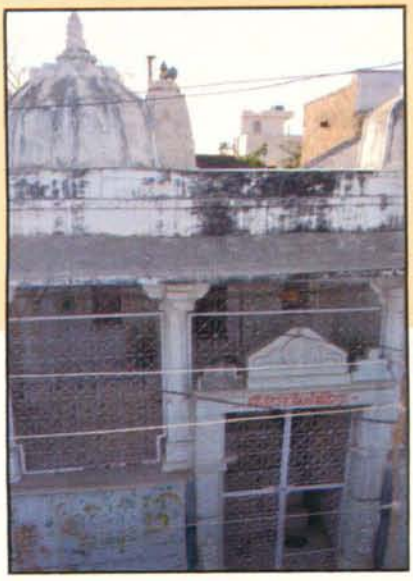

यह शिखरबंद मंदिर भीलवाड़ा नगर पालिका का पुर एक अंग है। यह रेलवे स्टेशन से 10 किलोमीटर दूर है। यह 500 वर्ष प्राचीन मंदिर होना बताया गया है। जिर्णोद्धार कराया गया ।गत जिर्णोद्धार में भव्य प्रवेशद्वार बनाया गया। प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख को आधार माना जाए तो 500 वर्ष प्राचीन है। उल्लेखानुसार श्री मूलचंद जी सिंघवी द्वारा लगभग करीब 1900 के लगभग निर्मित है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री चन्द्रप्रभ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 17'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1545 का लेख है।

(2) श्री मुनिसुव्रत भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 15'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1548 का लेख है।

(3) श्री चन्द्रप्रभ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 15'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1548 का लेख है।

अष्ठमंगल यंत्र 5''X 3'' का उत्थापित धातु का यंत्र है। इस पर सं. 2062 का लेख है।

बाहर दोनों ओर आलियों में :

श्री विजय यक्ष की श्याम पाषाण की 11'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2052 का लेख है।

श्री ज्वाला यक्षिणी की श्याम पाषाण की 11'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2052 ज्येष्ठ कृष्णा 11 का लेख है।

माणिभद्र की प्रतिमा 9'' ऊंची प्रतिमा है।

परिक्रमा क्षेत्र में तीन मंगल मूर्ति स्थापित है।

वार्षिक ध्वजा ज्येष्ठ कृष्णा 11 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की चार दुकानें है ।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री गहरीलाल जी सिंघवी (बाबेल) द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र : 96024067578

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, पुर-311002, तहसील भीलवाड़ा

प्राचीन उपाश्रय जो जीर्ण-शीर्ण अवस्था में खण्डित है। प्रथम मंजिल में कमरे बने हुए है। जहां यतिजी निवास करते थे। उपाश्रय के 12 स्तम्भ बने हुए है। इसी उपाश्रय में श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 18'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1850 का लेख है। अन्य खण्डित मूर्तियां भी रखी हुई है।

एक अति प्राचीन खण्डित प्रतिमा आ. श्री पद्मसागरसूरि जी म.सा. ने द्वारा कोबा (अहमदाबाद) के संग्रहालय में भेजी गई।

श्री चौमुखा जी का मंदिर, पुर-311802, भीलवाड़ा

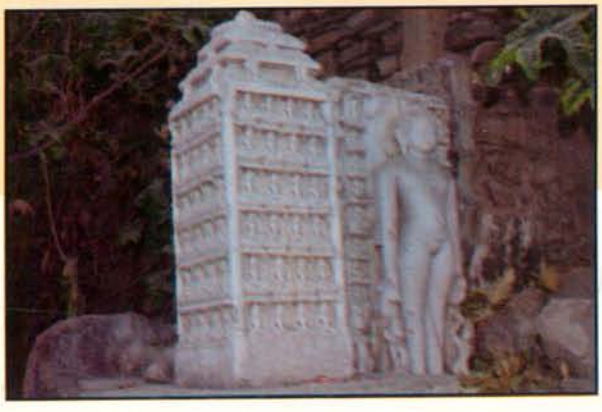

यह एक खण्डित मंदिर है जो बिल्कुल ढह गया है। यह मंदिर 4-5 गोत्री समाज द्वारा बनाया गया है। अभी भी उनके (समाज) नियंत्रण में है।

इस चतुर्मुखी मंदिर के खण्डहर के चित्र इस प्रकार है।

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर पुर, 311002, भीलवाड़ा

यह शिखरबंद मंदिर भीलवाड़ा नगरपालिका का पुर एक अंग है। यह रेलवे स्टेशन से 10 किलोमीटर दूर है। उल्लेखानुसार यह मंदिर पुर के नैनावटी मोहल्ला में स्थित है। मंदिर वर्धमान जी भागचंद जी नैनावटी द्वारा सं. 1800 के लगभग में निर्मित है। अत: 250 वर्ष प्राचीन है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 29'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1893 शाके 1750 का लेख है।

(2) श्री शांतिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 21'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1850 शा के 1715 ज्येष्ठ सुदि 10 का लेख है।

(3) श्री नेमिनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 21'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1850 शाके 1715 ज्येष्ठ सुदि 10 का लेख है।

आलियों में :

(1) श्री मुनिसुव्रत भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 17'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1850 का लेख है।

(2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 21'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1850 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं एवं यंत्र :

(1) श्री आदिनाथ भगवान की 8'' ऊंची पंच तीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 2047 का लेख है।

(2) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 6'' का है। इस पर सं. 2049 का लेख है।

(3) श्री अष्ठमंगल यंत्र 6'' x 3'' का है। इस पर सं. 2049 का लेख है।

(4) श्री जिनेश्वर भगवान की 5'' ऊंची प्रतिमा है।

वेदी की दीवार पर पबासन देवी की मूर्ति स्थापित है।

बाहर :

(1) श्री गौमुख यक्ष की श्याम पाषाण की 10'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री चक्रेश्वरी देवी की श्याम पाषाण की 10'' ऊंची प्रतिमा है।

अधिष्ठायक देव की 17'' ऊंची मूर्ति है। शिखर व अन्य स्थान पर जीर्णोद्धार की आवश्यकता है।

वार्षिक ध्वजा वैशाख सुदि 9 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री विजयसिंह जी नैनावटी द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र - 01482-262151

इस चित्र में स्तवन (भजन) नृत्य बताया है जो लाल रंग में है। पीली किनारी है। इसमें राजा जिन्होंने लम्बा पाजामा पहने हैं। चोकोर सेठी पर बैठे है। इसके ऊपर छतरी है। सामने नृत्य करती हुए महिला घूंघट लिये है।

श्री आदिनाथ भगवान (चौमुखाजी) मंदिर पुर, 311002, तहसील भीलवाड़ा

यह शिखरबंद मंदिर भीलवाड़ा नगर पालिका का एक अंग है। यह मंदिर कस्बे के बाहर 7 वर्ष पूर्व ही खाब्या परिवार द्वारा निर्मित है। यह एक घर देरासर है। समवसरण के रूप से निर्मित सिंहासन पर प्रतिमा बिराजमान है। मंदिर का भूखण्ड खाब्या परिवार का है।

चारों ओर से 5 प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री आदिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 15'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण 15'' ऊंची प्रतिमा है।

(3) श्री शांतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊंची प्रतिमा है।

(4) श्री महावीर भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊंची प्रतिमा है।

नीचे :

(1) श्री सिद्ध भगवान की पीत पाषाण की 8'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री आचार्य महाराज की श्याम पाषाण की 5'' ऊंची प्रतिमा है।

(3) श्री आचार्य महाराज की हरे पाषाण की 8'' ऊंची प्रतिमा है।

चारों ओर मूर्तियें स्थापित है :

(1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की धातु की 14'' ऊंची पंच तीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 2052 का लेख है।

(2) श्री शांतिनाथ भगवान की धातु की 8'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2052 का लेख है।

(3) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 6'' का है। इस पर सं. 2062 का लेख है।

(4) श्री अष्ठमंगल यंत्र 6'' x 3'' का है। इस पर सं. 2062 का लेख है।

दीवार की देवरियों में :

(1) श्री सिद्धचक्र यंत्र (बीसस्थानक यंत्र) गोलाकार श्वेत पाषाण का 5'' ऊंचा है।

(2) श्री गौमुख यक्ष श्वेत पाषाण की 15'' ऊंची प्रतिमा है।

(3) चक्रेश्वरी देवी की श्याम पाषाण की 13'' ऊंची प्रतिमा है।

(4) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 11'' ऊंची प्रतिमा है।

वार्षिक ध्वजा वैशाख शुक्ला 5 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख श्री गणपतलाल जी खाब्या द्वारा की जाती है। सम्पर्क सूत्र- 9887431996

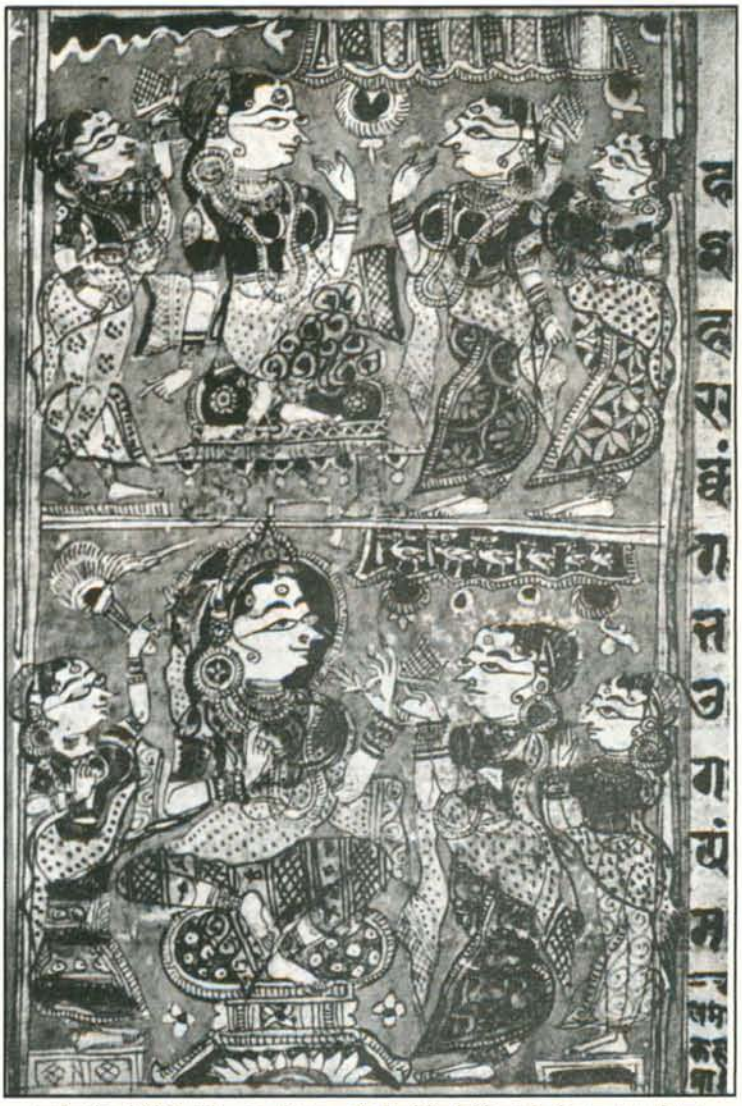

यह चित्र दो भागों में है जिसमें से ऊपर महावीर भगवान की माँ का है जिसके पीछे एक परिचायिका छाता व दूसरी पंखा लिए खड़ी है। माँ गर्भवती है वे खुश है, सिर पर बड़ी बिंदी है व आकर्षित गहने पहने हुई है। यह सन् 1400-1420 (15 वीं शताब्दी) की है। ये सब चित्र मुनि पुण्यविजय जी म.सा. ने कल्पसूत्र में दर्शाया है।

श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, गुरला-तहसील भीलवाड़ा

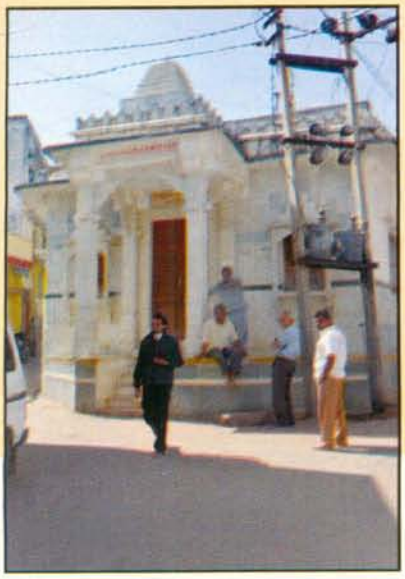

यह घूमटबंद मंदिर भीलवाड़ा-गंगापुर सड़क पर भीलवाड़ा से 20 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर 500 वर्ष प्राचीन बताते है। प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख का आधार माना जाए तो 550 वर्ष प्राचीन होता है। उल्लेखानुसार यह मंदिर श्री अजितनाथ भगवान का रहा है और सं. 1900 के लगभग में निर्माण हुआ। इस मंदिर का जिर्णोद्धार संवत 2056 में हुआ जिसमें देवकुलिका नई बनवाई गई प्रतिमा स्थापित की गई। मंदिर प्रतिमाओं के लिए तीन देवरिया बनी है। यह ग्राम तृतीय श्रेणी का ठिकाना रहा है। इसके शासक पुरावत कहलाते थे।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 19'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2056 माघ शुक्ला 7 का लेख है।

(2) श्री श्रेयांसनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 11'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2056 माघ शुक्ला 7 का लेख है।

(3) श्री पद्मप्रभ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 9'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1519 का लेख है।

(4) श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 11'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1528 वै. शु. 3 का लेख है।

(5) श्री सुमतिनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्याम पाषाण की 10'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2056 का लेख है।

नीचे की वेदी पर :

श्री सम्भवनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 6'' ऊंची प्रतिमा है।

वेदी की दीवार पर पबासन देवी की श्वेत पाषाण की प्रतिमा है।

उत्थापित धातु की चल प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री शांतिनाथ भगवान की 8'' ऊंची पंच तीर्थी प्रतिमा है। यह श्री जितेन्द्र मुनि जी द्वारा प्रतिष्ठित है।

(2) श्री जिनेश्वर भगवान की 4'' ऊंची (मय सिहासन के) प्रतिमा है।

(3) श्री अजितनाथ भगवान की 6'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1495 ज्येष्ठ सुदि 13 का लेख है।

(4) श्री जिनेश्वर भगवान की 1.5'' ऊंची प्रतिमा है।

(5) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 4.5'' का है।

निज मंदिर के बाहर व सभा मण्डप में :

(1) श्री पार्श्वयक्ष श्याम पाषाण की 10'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री पद्मावती देवी की श्याम पाषाण की 9'' ऊंची प्रतिमा है।

(3) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 13'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2056 मिगसर सुदि 5 का लेख है। परिक्रमा कक्ष में एक कमरा मंदिर का सामान रखने हेतु बना हुआ है। उपाश्रय बना हुआ है।

वार्षिक ध्वजा माघ शुक्ला 7 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख ओसवाल जैन संघ द्वारा की जाती है। उसकी ओर से श्री चांदमल जी मेहता (01482-251887)व श्री सुरेश जी बोहरा द्वारा की जाती है।

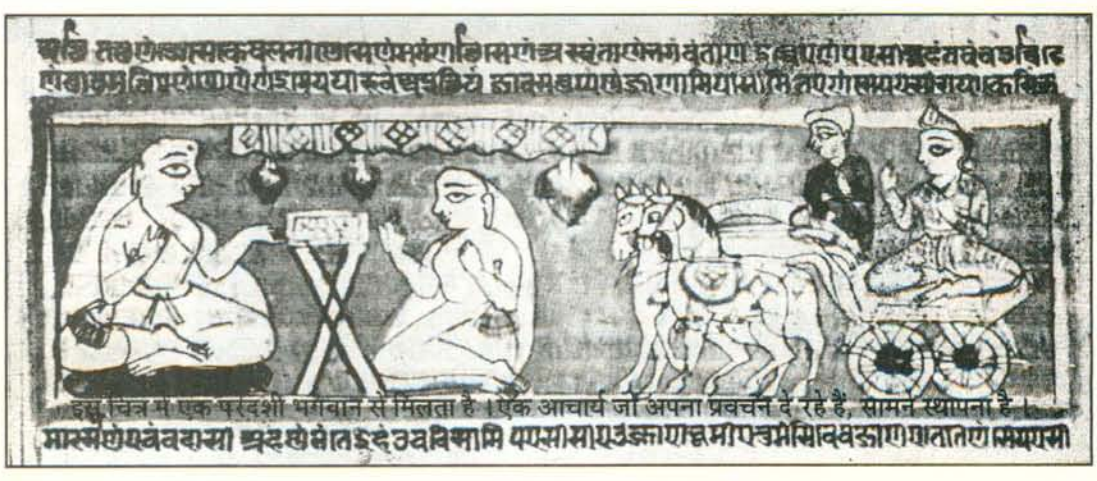

इस चित्र में एक परदेशी भगवान से मिलता है। एक आचार्य जो अपना प्रवचन दे रहे है, सामने स्थापना है।

श्री पार्श्वनाथ भगवान व दादावाड़ी मंदिर, गुरला, तहसील भीलवाड़ा

यह घूमटबंद मंदिर भीलवाड़ा-गंगापुर सड़क के किनारे गांव के बाहर के तालाब के किनारे स्थित है। यह भीलवाड़ा से 20 किलोमीटर दूर है। यह दादावाड़ी करीब 500 वर्ष प्राचीन है। दादागुरू की छतरी के भीतर 17'' के पाट पर श्री जिनदत्तसूरि के 8'' लम्बे चरण स्थापित है। पाट के किनारे सं. 1736 का लेख है व 23'' लम्बे पाट पर 8'' लम्बे चरण पादुका स्थापित है। इस पर सं. 1331 का लेख है। यह ग्राम तृतीय श्रेणी का ठिकाना है। इसके शासक पुरावत कहलाते है। इन चरण-पादुकाएं के किनारे की ओर सामने श्री जिनकुशलसूरि की श्वेत पाषाण की 17'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2059 का लेख है।

सभामण्डप में प्रवेश के समय दाईं ओर :

(1) श्री जिनकांतिसागर सूरीश्वर जी म.सा. की श्वेत पाषाण की 15'' ऊंची मूर्ति है। इस पर सं. 2059 जेष्ठ कृष्णा 10 का लेख है।

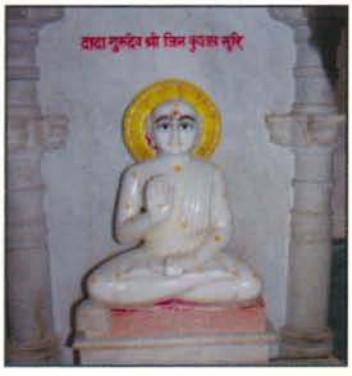

बाईं ओर :

(1) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 16'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2059 ज्येष्ठ कृष्णा 10 का लेख है।

प्रथम मंजिल पर देव कुलिका में :

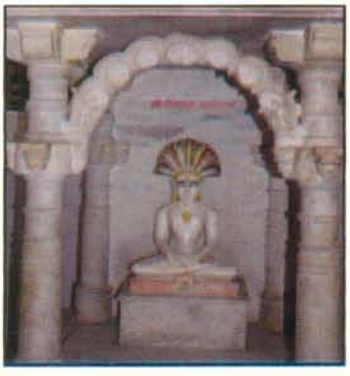

श्री जीरावला पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 19'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2029 का लेख है।

दोनों ओर :

(1) श्री पार्श्वयक्ष की श्वेत पाषाण की 13'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 15'' ऊंची प्रतिमा है।

पीछे खुली जगह है व एक कमरा है।

वार्षिक ध्वजा ज्येष्ठ कृष्णा 10 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री चांदमल जी मेहता (01482-251887)व श्री सुरेश जी बोहरा द्वारा की जाती है।

ये चित्र चक्रवती राजा के चौदस रत्नों को दर्शाया गया है जो समग्रहिणी सूत्र से सनफ 1630 में पाटन में बनाया है । यह मुनि श्री पुण्यविजयजी म.सा. द्वारा संग्रहित है ।

माण्डलगढ़ का इतिहास

मेवाड़ की वीर भूमि अरावली पहाड़ियों से गिरी हुई है जो चित्तौड़गढ़ जिले से प्रारम्भ होकर माण्डलगढ़ तक फैली हुई है। यह श्रृखंला आगे तक भी चली गई।

माण्डलगढ़ एक ऐतिहासिक किला रहा है जो 1850 फीट ऊँची पहाड़ियों पर खड़ा है। इस भूमि के आस-पास वन्य भूमि आरक्षित है। जगह-जगह पर विभिन्न ऊँचाई की बनी चट्टानों की श्रंखला भी है। किले की दीवार सुदृढ़ और विशेष मोटाई व सुरक्षात्मक दृष्टि से बनी हुई है। लेकिन यह किला पृथक पड़ जाने से शत्रु (मुगल) किले की दीवार को प्राय: ध्वस्त करते थे लेकिन फिर भी शासक दीवारों को मजबूत बनाते रहे। समय-समय पर किले पर कई हमले हुए।

ऐसी मान्यता है कि इस दुर्ग का निर्माण सर्वप्रथम निकुम्भा राजपूत ने कराया और बाद में अजमेर शाकम्भरी के चौहानों ने ईसा की 12वीं शताब्दी में कराया। टाड का कथन है कि किले का पुन:निर्माण सोलंकी वंश की शाखा बालनोत के एक सरदार द्वारा कराया गया।

इस किले का निर्माण निकुम्भा राजपूत ने कराया। दंतकथा अनुसार उक्त सरदार की सेवा में माण्डिया (मांडिया) नाम एक भील था। जो गांव व खेती की सुरक्षा के लिए धनुष तीर रखता था। एक दिन अपने तीर को एक पत्थर पर तीखा करने के लिए घिस रहा था तो तीर का वह हिस्सा जो पत्थर को छू रहा था, पीला हो गया। यह चमत्कार देखकर वह अपने मालिक के पास गया । उस सरदार ने उस पारस पत्थर को अपने पास रख लिया और उस पत्थर से प्राप्त राशि से माण्डलगढ़ दुर्ग का निर्माण कराया और भील के उपकार की यादगार में उस भील के नाम पर माण्डलगढ़ नाम रखा। इसके बाद किला सरदार के हाथ से निकल गया। यह किला प्रारम्भ से मेवाड़ के शासकों के पास रहा है।

इसलिए मेवाड़ के महाराणा खेता ने हाड़ाओं से जीत कर अपने अधीन किया। महाराणा मोकल के समय में हाड़ाओं ने पुनः कब्जा लेने का प्रयास किया लेकिन महाराणा कुम्भा के समय मेवाड़ के अधीन रहा।

गुजरात के शासक कुतुबुद्दीन ने किले पर सं. 1446 में हमला किया लेकिन सफल नहीं हुआ। महाराणा रायमल के समय में मालवा के बादशाह गयासुद्दीन ने हमला किया सफल नहीं रहा। इसके बाद में सन् 1457 में मालवा के सुल्तान महमूद ने हमला किया और किले की तलहटी भाग पर कब्जा कर लिया।

इस किले पर गुजरात के मुज्जरफशाह का भी किले पर अधिकार होने का उल्लेख है। फिर सम्राट अकबर का भी इस किले पर अधिकार रहा । महाराणा प्रताप पर आक्रमण के समय ही मानसिंह ने इस किले को ही केन्द्र बनाकर यहां से मोही होते हुए हल्दीघाटी गया था। इसके बाद जगन्नाथ कच्छवाहा ने इस किले को केन्द्र बनाकर महाराणा के विरूद्ध अभियान चलाया था। कच्छवाहा की छतरी आज भी विद्यमान है।

औरंगजेब ने अपने शासनकाल में माण्डलगढ़ को पीसांगन के राठौड़ जुझारसिंह को सन् 1699 में दिया। बाद में महाराणा राजसिंह ने मुगलसेना को हराकर किले को अपने अधीन किया। इसके बाद किशनगढ़ के नरेश रूपसिंह राठौड़ के अधीन में कुछ समय रहा। महाराणा जगतसिंह (द्वितीय) अपनी ओर से किले को शाहपुरा के उम्मेदसिंह को दिया और सन् 1768 तक यह इसी वंश के पास रहा।

किले के आस–पास की भूमि राणावत, करणावत आदि आदि सरदारों के पास है। ये ही लोग प्रशासन का सारा काम देखते थे। ये भोमिया सरदार कहलाते थे।

इस किले के किलेदार ओसवाल वंश के रहे है। महाराणा अरिसिंहजी ने वि.सं. 1822 में महता अगर जी को किलेदार नियुक्त किया था।

सर्वप्रथम इस किले का निर्माण निकुम्भा राजपूत ने कराया। उसके बाद यह किला अजमेर के चौहान वंश, बूंदी के हाडा व अन्त में मेवाड़ के गुहिल वंश के पास रहा। इस बीच में हमले होते रहे। कई लम्बे समय तक बलानोत सोलंकी की जागीर रही।

दुर्ग पर सागर–सागरी नामक जलाशय है जो निरन्तर पानी से भरे रहते है। इसी से जल की पूर्ति होती है। यहाँ रामसिंह राठौड़ के महत्व चनाना गुजर की छतरिया, जैन मंदिर दर्शनीय स्थल हैं।

श्री ऋषभदेव भगवान का मंदिर, माण्डलगढ़ किला-311604

यह शिखरबंद मंदिर भीलवाड़ा के 55, रेल्वे स्टेशन से 5 किलोमीटर किले पर स्थित है। यह मंदिर अति प्राचीन है। मंदिर की प्राचीनता का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। ऐसा कहा जाता है कि किले के निर्माण के साथ साथ मंदिर बने ।

उल्लेखानुसार यह मंदिर दीवान श्री बहादुर केसरीसिंह जी कोटवाला परिवार द्वारा सं. 1728 में बनाया गया है। भगवान की प्रतिमा की कलाकृति से ऐसा पता लगता है कि यह प्रतिमा 9 वीं शताब्दी की होगी, जिसके बाद जिर्णोद्धार भी हुए होंगे, कोई उल्लेख नहीं है । माण्डलगढ़ किले का इतिहास पृथक से तीर्थ वर्णन के पूर्व किया है। पुननिर्माण सं. 1728 में हुआ हो ।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :

1) श्री जिनेश्वर भगवान (ऋषभदेव) की बादामी पाषाण की 23'' ऊँची है। इस पर कोई लेख नहीं है –लाछण नहीं है। प्रारम्भ से ऋषभदेव भगवान का मंदिर कहा जाता है। प्रतिमा आकर्षिक व चमत्कारी है ।
2) श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर लाछण स्पष्ट नहीं है। (स्वास्तिक प्रतीत होता है)। अतः सुपार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा सम्भावित है ।
3) श्री शान्तिनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।
4) श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक के बाएं) बादामी पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

5) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 16'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर स. 1735 का लेख है।

6) श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

7) श्री नमिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्याम पाषाण की 11'' प्राचीन प्रतिमा है।

उत्थापित चल प्रतिमाएँ व यंत्र :

1) श्री शान्तिनाथ भगवान की 8'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर स. 2041 का लेख है।

2) श्री शान्तिनाथ भगवान की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट लेख है।

3) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 4.5'' का है। इस पर सं. 2041 का लेख है। मंदिर का जिर्णोद्वार को सं. 2035 फा. शु. 10 को (8.3.79) को हुआ था।

किला बहुत ही भव्य है। मेवाड़ में यह प्रथम किला है जहाँ श्वेताम्बर समाज के सदस्य किलेदार रहे। मुख्यतया महता परिवार था, इस पीढ़ी से किले पर केवल एक परिवार ही रहता है।

पूर्व से यहाँ पर जैन जाति व अन्य जाति की काफी बस्ती थी। जिसके लिए पीने के पानी के लिए हिन्दु व जैन लोगों के लिए एक बड़ी बावड़ी है। जिसमें वर्तमान में भी पानी बना रहता है और मुस्लिम समाज के लिए अलग बावड़ी थी।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा चैत्र वदि 2 को श्री सोहनलाल जी सुराणा नि. सेवाड़ी हाल थाने (मुम्बई) द्वारा चढ़ाई जाती है।

मंदिर की व्यवस्था श्री आनन्द जी मंगल जी पेढ़ी द्वारा की जाती है। उसकी ओर से देखरेख श्री मोहनसिंह जी मेहता व श्री तेजसिंह जी बोल्या (94145 77238) द्वारा की

श्री महावीर भगवान का मंदिर, माण्डलगढ़ किला-311604

यह घुमटबन्द मंदिर भीलवाड़ा से 55 व रेल्वे स्टेशन से 5 किलोमीटर दूर है। किले पर ऋषभदेव भगवान के मंदिर के पास स्थित है। यह मंदिर अति प्राचीन बताया गया है। उल्लेखानुसार इस मंदिर की पक्की दीवार श्री केसरसिंह जी कोतवाल के द्वारा निर्मित है। इस मंदिर के गर्भगृह व सम्पूर्ण मंदिर में काँच का काम है। उल्लेखानुसार यह पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर था। वर्तमान में महावीर भगवान का है। ऐसा प्रतीत होता है जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की प्रतिमा श्री पार्श्वनाथ भगवान की रही होगी। संभावना है कि किला निर्माण के समय इस मंदिर का निर्माण हुआ हो। श्री पार्श्वनाथ भगवान के नाम मेवाड़ शासक ने भूमि अर्पित की।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1) श्री महावीर भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 35'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।
2) श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है । इस पर कोई लेख व लांछण नहीं है ।
3) श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर कोई लेख व लांछण नहीं है) ।
4) श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट लेख है।) केवल संख्या 13 पढ़ने में आता है।
5) श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट लेख है।) केवल संख्या 13 पढ़ने में आता है।
6) श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्याम पाषाण की 13'' प्राचीन प्रतिमा है।

उत्थापित धातु के यंत्र :

1) ताम्बे का गोलाकार 9" का यंत्र है।

2) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 4.2" का है। इस पर जितेन्द्रसूरी जी का लेख है।

बाहर सभामण्डल में :

श्री गौतम स्वामी की श्वेत पाषाण की 15" ऊँची प्रतिमा है।

परिक्रमा कक्ष में प्रवेश के बांई ओर एक कोने में 12"x12" पट्ट पर एक पादुका जोड़ी स्थापित है तथा 25" आसन पर श्वेत पाषाण की 17" ऊँची प्रतिमा है। मंदिर के नाम से 10–15 बीघा जमीन है, अन्य के कब्जे में है। न्यायालय में विवाद विचाराधीन है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा चैत्र वदि 2 को चढ़ाई जाती है।

इस मंदिर की व्यवस्था आनंद जी मंगल जी पार्श्वनाथ ट्रस्ट मण्डल की ओर से श्री तेजसिंह जी बोल्या (94145 77238) द्वारा की जाती है।

विशेष नोट :

धर्म प्रतिष्ठा प्रगति :

1 वि.स. 2035 की फाल्गुन शुक्ला 1 को मंदिर की प्रतिष्ठा श्री मनोहर विजयजी म.सा. की (श्री नेमीसूरि जी के सम्प्रदाय) की निश्रा में सम्पन्न हुई। सन् 1971 में श्री जितेन्द्रसूरि जी म. सा. ने चैत्र की नवपद ओली की आराधना कराई। सन् 2006 में प. श्री निपुणरत्नविजय जी म.सा. की निश्रा में चैत्र की नवपद आराधना कार्यक्रम हुआ। सन् 2010 में म. श्री निपुणरत्न विजय जी म.सा. की ही निश्रा में नवाणु यात्रा कार्यक्रम की आराधना सम्पन्न हुई। किले पर धर्मशाला भोजनशाला विद्यमान है। यह मेवाड़ का शंत्रुजय (नवाणु) तीर्थ कहलाता है। प्राकृतिक सौन्दर्य व कला से परिपूर्ण है। किले पर दिगम्बर मंदिर भी स्थापित है। यह किला प्राकृति सौन्दर्यता, सागर–सगरी की बसावट आदि अधिक सुन्दरता बढ़ा देती है।

श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर, माण्डलगढ़-311604, तलहटी

यह घुमटबंद मंदिर माण्डलगढ़ किले की तलहटी पर स्थित है। माण्डलगढ़ का इतिहास पृथक से दिया गया है। यह मंदिर 500 वर्ष प्राचीन है। सन् 2009 में जिर्णोद्धार हुआ।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1) श्री मुनिसुव्रत भगवान (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 13" की प्रतिमा है। इस पर वि.सं. 1545 वै. शुक्ला 3 का लेख है।

2) श्री सुपार्श्वनाथ भगवान (मूलनायक के दांए) श्वेत पाषाण की 13" ऊँची प्रतिमा है।

3) श्री शान्तिनाथ भगवान (मूलनायक के दांए) श्वेत पाषाण की 14" ऊँची प्रतिमा है। इस पर वै.शु. 3 का लेख पढ़ने में आता है।

4) श्री कुंथुनाथ भगवान (मूलनायक के बांए) श्वेत पाषाण की 13" ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2045 वै. शु. 5 का लेख है।

5) श्री चन्द्रप्रभ भगवान (मूलनायक के बांए) श्वेत पाषाण की 13" ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2045 वै. शु. 5 का लेख है।

नीचे : श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 9" ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1545 वै. शु. 5 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री सुमतिनाथ भगवान की 8" ऊँची पंच तीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1511 का लेख है।

2) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 5" का है। इस पर सं. 2038 वै.शु. 6 का लेख है।

आलियों में :

1) श्री वरूण यक्ष की 11" ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री दत्तायक्षणी की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

इन दोनो की प्रतिष्ठा आचार्यश्री जितेन्द्रसूरी जी द्वारा सम्पन्न हुई।

बाहर :

1) श्री अधिष्ठायक देव की दो प्रतीक मूर्तियां है।

2) श्री माणिभद्र जी की श्याम पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।

मंदिर में प्रवेश के समय बाई ओर अलग–अलग देवरियों में 11 गणधर देव की चरण पादुकाएं स्थापित है। प्रतिष्ठा होना शेष है।

वार्षिक ध्वजा चैत्र कृष्णा 2 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख श्री श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ द्वारा श्री गोवर्धनसिंह जी सिसोदिया (94603 06241) श्री अनिल कुमार जी (98280 74801) श्री नंदसिंह जी खरोड़ (94146 86508) श्री सुशील जी खरोड़ (94146 76989) द्वारा की जाती है।

मंदिर की जमीन होनी चाहिए । जानकारी नहीं है।

इसमें जैन मुनि जो मेज पर बिराज रहे हैं। सामने अपनी शिष्या को प्रवचन सुना रहे हैं। इसमें मछली जैसी आँखे, चपटा, सिर से सभी 38 से 40 के चित्र राज प्रश्नीय सूत्र में है जो पुण्यविजय जी म.सा. द्वारा संग्रहित है।

श्री सुमतिनाथ का मंदिर, माण्डलगढ़-311604, तहसील माण्डलगढ़

यह शिखरबन्द मंदिर माण्डलगढ़ कस्बे के स्टेच्यू सर्कल के समीप स्थित है। जिला मुख्यालय से 60 किलोमीटर दूर है। यह 15 वर्ष ही प्राचीन है। मंदिर के लिए भूखण्ड श्री धर्मचन्द्र जी मारू द्वारा भेंट देकर मंदिर निर्माण का कार्य भी सम्पन्न कराया और मंदिर श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ को सुपुर्द किया।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1) श्री सुमतिनाथ भगवान (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 21'' ऊँची प्रतिमा है।
2) श्री महावीर भगवान (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 18'' ऊँची प्रतिमा है।
3) श्री शान्तिनाथ भगवान (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 18'' ऊँची प्रतिमा है। इन तीनों प्रतिमाओं पर वि.सं. 2062 वै. कृ. का लेख है। वेदी की दीवार में पबासन देवी की मूर्ति स्थापित है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा है इस पर सं. 2050 फा. शु. 3 का लेख है।
2) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 4.5'' का है इस पर सं. 2050 फा. शु. 11 का लेख है।
3) श्री अष्ठमंगल यंत्र 4.5X2.5 का है। इस पर सं. 2054 मा. शु. 13 का लेख है।
4) श्री मुनिसुव्रत भगवान की 8'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2053 आ. सु. 11 का लेख है।
5) श्री विमलनाथ भगवान की 12'' ऊँची चतुर्विंशति प्रतिमा है।
6) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा है।
7) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 9'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 2054 माघ सु. 13 का लेख है।

8) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 6" का है। इस पर सं. 2062 वै.कृ. 7 का लेख है।

बाहर आलियों के :

1) श्री माणीभद्र जी की श्वेत पाषाण की 12" ऊँची प्रतिमा है।
2) श्री शीतलनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13"ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2050 का लेख है।
3) श्री वासुपुज्य भगवान की श्वेत पाषाण की 17" ऊँची प्रतिमा है।
4) श्री नाकोड़ा भैरव की गुलाबी रंग की 13" ऊँची प्रतिमा है।
5) श्री तुम्बरूयक्ष की श्वेत पाषाण की 11" ऊँची प्रतिमा है।
6) श्री कालिका देवी की श्वेत पाषाण की 11" ऊँची प्रतिमा है।

वार्षिक ध्वजा वैशाख कृष्णा 2 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री विनोद कुमार मारू द्वारा की जाती है। जमा फण्ड है।

सम्पर्क - 99299 01356

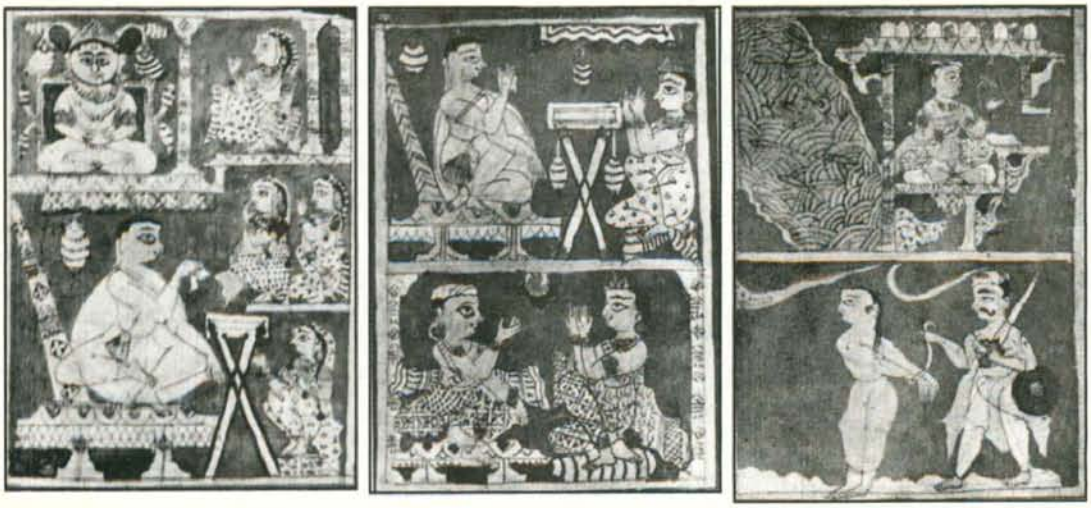

उत्तराध्ययन सूत्र में सन् 1591 की है। ये चित्र बड़ोदा के संग्रहालय व चित्र गेलेरी में है।

श्री विमलनाथ भगवान का मंदिर बिगोद-311601, तहसील माण्डलगढ़

यह शिखरबंद मंदिर भीलवाड़ा से मांडलगढ़ सड़क मार्ग पर जिला मुख्यालय से 40 व तहसील मुख्यालय से 10 मांडलगढ़ स्टेशन से 15 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर 7 वर्ष पूर्व ही आचार्यश्री जितेन्द्रसूरी जी की प्रेरणा से श्री मोहनसिंह जी बापना द्वारा बनाया गया । प्राचीन मंदिर भी इसी परिसर में ही स्थित है। 6 फीट भूमि खरीद कर क्षेत्र बढ़ाया गया।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1) श्री विमलनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 23'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2056 फागुन सु. 6 का लेख है।
2) श्री सम्भवनाथ भगवान की (मूलनायक के दांए) श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2059 का लेख है।
3) श्री शान्तिनाथ भगवान की (मूलनायक के बांए) श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर यं. 2056 फा. सु. का लेख है।

उत्थापित धातु की चल प्रतिमाएँ व यंत्र :

1) श्री शान्तिनाथ भगवान की 7.5'' ऊँची पंच तीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1501 ज्येष्ठ वदि 13 का लेख है।
2) श्री सिद्धिचक्र यंत्र 4'' गोलाकार है। इस पर सं. 2054 माघ सु. 13 का लेख है।

निज मंदिर के बाहर आलिए में :

1) श्री षष्ट मुख देव की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री विजयादेवी की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

सभा मण्डप में अलग-अलग आलिए में :

1) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 6'' ऊँची प्रतिमा है।
2) श्री माणिभद्र देव की श्याम पाषाण की 14'' ऊँची प्रतिमा है।

गिरनार पट्ट बना हुआ है।

परिक्रमा परिसर में तीन मंगल मूर्तियां स्थापित है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री मोहनसिंह जी बापना द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र-मो. 094146 77063, 01489-232302

यह चित्र राजप्रश्नीय सूत्र में हैं। यहां तीर्थंकर विराजमान है, दोनो ओर गणधर व उनके हाथ मुड़े हुए है।

श्री सुमतिनाथ भगवान का मंदिर, बिगोद-311601, तहसील माण्डलगढ़

यह घूमटबंद मंदिर भीलवाड़ा - माण्डलगढ़ सड़क पर जिला मुख्यालय से 40 व तहसील मुख्यालय से 10, रेल्वे स्टेशन से 15 किलोमीटर दूर है। यह मंदिर अति प्राचीन होना बताया गया है। पूर्व में यह आदिनाथ भगवान का होने का उल्लेख है। श्री आदिनाथ भगवान की एक ही प्रतिमा थी । पूर्व में एक चबूतरा है, पीछे खाली स्थान है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1) श्री सुमतिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।
2) श्री जिनेश्वर भगवान (महावीर भगवान) की (मूलनायक के दांई ओर) श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची अति प्राचीन प्रतिमा है।
3) श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1860 का लेख है।

नीचे की वेदी पर :

श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की प्रतिमा स्थापित है। बोलचाल में आदिनाथ की प्रतिमा माना जाता है।

वेदी की दीवार पर पबासन देवी की प्रतिमा स्थापित है।

उत्थापित प्रतिमाएं व धातु के यंत्र :

1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 3.5'' ऊँची है। इस पर सं. 1694 वैशाख सुदि 5 का लेख है।
2) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार है। इस पर सं. 2059 माघ सु. 7 का लेख है।
3) श्री पद्मावती देवी की 4'' ऊँची खण्डित प्रतिमा है। इस पर सं. 1506 का लेख है।

4,5)श्री देवी प्रतिमा 2.5'', 2.7'' ऊँची है। इन पर कोई लेख नहीं है।

6) श्री चौमुखा प्रतिमा कमल की चार पंखुड़ी के सिहासन पर 2.8'' ऊँची है।
7) ताम्र यंत्र 2.5''X2.5'' का है।
8) पीतल का यंत्र 1.7''X1.7'' का है। इस पर श्री आदिनाथ भगवान का चित्र अंकित है।

इस मंदिर की वार्षिक ध्वजा वैशाख शुक्ला 3 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री महावीरसिंह जी बापना करते है।
सम्पर्क सूत्र - मो. 94146 77063, 01489-232302

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर खटवाड़ा-311601

इस मंदिर की प्रतिमा का चित्र स्थानक में विराजमान है। पूजा नहीं होती है। केवल स्थानक में शांतिपाठ चित्र के सम्मुख बैठकर करते हैं।

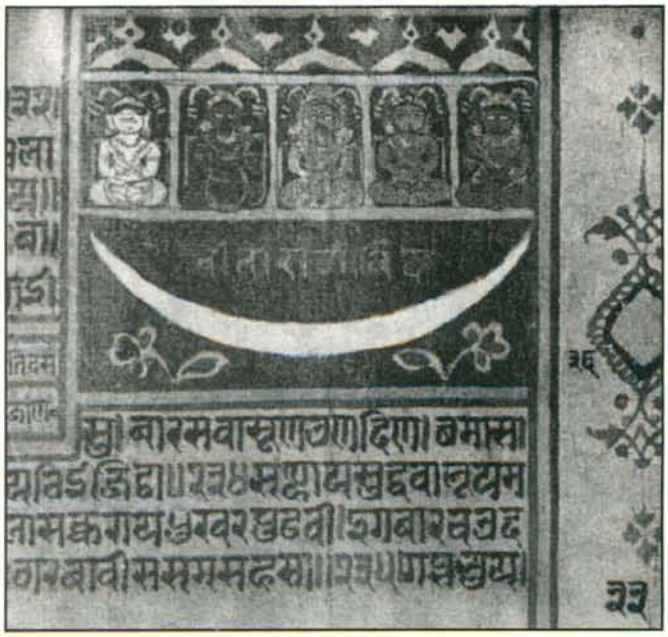

यह समग्रहिणी सूत्र जो मतार में बनी है जिसके चित्रकार गोविंदा है। यहां पर सिद्धाशिला को दर्शाया गया है। जिसके ऊपर सिद्ध भगवान बिराजे हुए है। यह सन् 1583 की बनी है।

श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, बिजोलिया

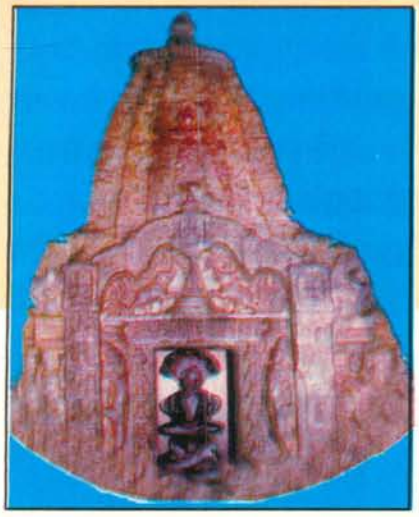

यह शिखरबंद मंदिर भीलवाड़ा से 80 व माण्डलगढ़ से 30 किलोमीटर दूर भीलवाड़ा-माण्डलगढ़ कोटा मार्ग पर स्थित है । यह इसका प्राचीन नाम विंध्याल्ली होने का उल्लेख है । बाद में इसको विजयावली के नाम से जाना जाता है, धीरे-धीरे बिजोल्ली होता हुआ उसका अपभ्रंश बिजोलिया कहलाया।

उदयपुर के पठारी मार्ग पर एक चट्टान पर मंदिर निर्मित है । यह ग्राम बहुत प्राचीन है जहां पर बिखरी हुई खण्डित प्रतिमाएं, मंदिर देखने से स्पष्ट होता है । इसके साथ संवत् 1226 फाल्गुन वदि 3 का लेख व वि.सं. 932 का लेखा श्री गुणभद्रसूरी द्वारा रचित काव्य जो कायस्थ केशव द्वारा लिखा गया है और गोविंद द्वारा दो चट्टानों पर उत्कीर्ण है। (Insceription of Rajasthan Vo. I-P-54)

इन चट्टानों का आकार 19 फीट लम्बा व 8 फीट चौड़ा है इसके सभी ओर 294 श्लोक है जो 52 पंक्तियों में उत्कीर्ण है। इन श्लोक के रचयिता जैन धर्म के प्रसिद्ध विद्वान आचार्य श्री सिद्धसेनसूरि जी म.सा. द्वारा की गई है।

प्राचीन काल में ऐसे महत्वपूर्ण प्रशस्ति काव्य, ग्रंथों, नाटकों व शिलालेखों के रूप में प्रदर्शित की जाती है जिससे ऐसी प्राचीनता का ज्ञान हो सके। इसमें यह शिलालेख भी एक है।

जन श्रुति के अनुसार इन शिलाओं को कालान्तर में पदरा दिया गया था लेकिन बाद में धार प्रदेश के राजा भोज द्वारा इसका उद्धार किया गया। ऐसे शिलोकीर्ण अजमेर के ढाई दिन के झोपड़े में उत्कीर्ण हाकलि नाटक ललित विग्रहराज नाटक उत्कीर्ण की है। इसी प्रकार मेवाड़ के राजसमंद नवचौकी पर 25 शिलाओं पर उत्कीर्ण राज प्रशस्ति व कुम्भलगढ़ पर 5 शिलाओं पर उत्कीर्ण इसकी पुष्टि करते है।

आचार्य श्री सिद्धसेनसूरि जी ने श्लोक के प्रथम सर्ग में अज्ञानरूपी अंधकार से ग्रस्त तीनों लोकों के प्रत्येक प्राणियों के ज्ञानरूपी नेत्रों को खोलने वाले श्री ऋषभदेव भगवान को वंदन किया, श्लोक 2–5 तक में कलयुग के अल्पबुद्धि मानवों के लिए मुक्तिमार्ग को प्रकट करने वाले महावीर भगवान की वंदना की। श्लोक 6–26 तक में महावीर भगवान के सभी गणधरों के साथ राजगृही नगर के एक वन के नीचे निवास करने वाले सभी जीव जो संसार में है और जिन्हें केवल ज्ञान होने और प्रथम गणधर को व सभी महात्मा को वंदना की।

इसी बीच के श्लोक 21 से 24 में महावीर के द्वारा सिद्धि प्राप्ति के लिए भारत के पर्वतों पर स्थित भरतेश्वर चेत्यो का भक्ति पूर्वक दर्शन करने हेतु प्रेरित करना व गौतम द्वारा आज्ञा मानने का भी आदेश का वर्णन किया।

श्लोक 28 से 36 तक गौतम द्वारा अनेक प्रकार के पर्वतों पर चढने का वर्णन है।

द्वितीय सर्ग के श्लोक 33–34 में गौतम द्वारा अष्टापद तीर्थ का दर्शन और पर्वत से नीचे उतरकर उपस्थित अपने गणों को भरतेश्वर देव की वंदना हेतु जाने का वर्णन है।

श्लोक 35 से 39 तक गौतम के लौटकर आने तक महावीर के अवन्ति पुरी (उज्जैन) की ओर विहार करने का वर्णन है।

श्लोक 40 से 45 तक में ज्ञान, तप, वृद्धजन द्वारा अवस्थित वन उपवन, वाणी को, सिद्धियों की मुक्तिदायिनी अवन्ति तीर्थ के एक योजन दूर से महावीर की वाणी को श्रवण कर हर्ष का वर्णन है।

श्लोक 46 से 51 तक गौतम के यही पर ही ध्यानावस्तित हो जाए व उसके कतिपय शिष्यों को दिव्य ज्ञान का वर्णन है।

श्लोक 52 से 56 तक गौतम अपने शिष्यों सहित प्राकृतिक सौदर्य का दर्शन करते हुए भगवान महावीर के दर्शन करने का उल्लेख है।

श्लोक 60 से 65 तक में चेत्यों को दर्शन कर आने पर गौतम का महावीर द्वारा स्वागत करने का वर्णन है।

श्लोक 66 से 98 तक वर्द्धमान के मुख से तीर्थंकर के लक्षण सुनाते हुए 23 वे तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ का प्रभाव शेष सर्गो में वर्णन किया है।

सर्वप्रथम पार्श्वनाथ भगवान के पूर्वभव की जानकारी देते हुए उनका अयोध्या के राजा आंनद के रूप में परिचय दिया गया है।

इसमें यह भी दर्शाया गया है कि प.पू. आचार्य श्री दामोदर जी ने दीक्षा ग्रहण करके अपनी मुक्ति के लिए कठोर तप का अनुष्ठान किया था।

तृतीय सर्ग में यह बताया गया है कि पूर्व भवों के पापों का क्षय हो जाने पर उन्होने

काशी नरेश अश्वसेन की रानी वामा देवी के गर्भ से जन्म लिया। जन्म के पश्चात तप ध्यान में कमठ तक उपसर्ग आदि का वर्णन भी किया गया।

अंतिम सर्ग में पार्श्वनाथ भगवान के द्वारा मथुरा जाकर अपने शिष्यों को बोधित करने व राजाओं व परिचार्यो को उपदेश देकर अनेक तीर्थो की स्थापना की । अपना अंतिम समय नजदीक जानकर सम्मेतशिखर पर्वत पर एक माह के उपवास के साथ निर्वाण प्राप्त किया।

पूर्व में यह मंदिर नेमिनाथ भगवान का रहा होगा जिसका उदाहरण यक्ष–यक्षिणी नेमिनाथ भगवान के है । वर्तमान में श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर है।

शिलालेख सं. 1226 के अनुसार यह स्थल श्री पार्श्वनाथ भगवान की तपस्या स्थल रहा है । रेवती नदी के किनारे भीमवन है जो मंदिर के समीप ही है ।

दंत कथा के अनुसार पार्श्वनाथ भगवान की तपस्या भंग करने के लिए कमठ ने भगवान पर शिलाएं फेंकी थी यहां पर ही केवलज्ञान की प्राप्ति हुई । वर्तमान में जीर्णोद्धार कार्य चल रहा है, 24 तीर्थंकर भगवान के मंदिर भी निर्माण करने की योजना है ।

नोट : यह मंदिर दिगम्बर समाज के अधीन है और इसकी सम्पूर्ण व्यवस्था दिगम्बर समाज द्वारा की जाती है।

यह चित्र सन् 1600 में गुजरात में पेन्ट किया गया । यह संग्रहिणी सूत्र का है
जो मुनि श्री पुण्यविजयजी म.सा. द्वारा संग्रहित है ।

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर जहाजपुर-311201, तहसील जहाजपुर

यह घूमटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 95 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। ग्राम में जहाँ भी खनन कार्य हुआ वहाँ जैन मूर्तियाँ मिली है। उल्लेखानुसार व दंत कथानुसार जहाजपुर का किला महाराजा सम्प्रति द्वारा निर्मित है। इसी समय में मंदिर भी निर्मित हुआ होगा। अतः 2400 वर्ष प्राचीन है। मुगलकालीन शासन में आक्रमण व प्राकृतिक आपदाओं के कारण मंदिर व मूर्तिया नष्ट हुई होगी। समय-समय पर जिर्णोद्धार भी हुए होंगे लेकिन कोई उल्लेख नहीं मिलता। वर्तमान में स्थापित प्रतिमा भी 960 वर्ष प्राचीन है। अतः मंदिर 1000 वर्ष प्राचीन है।

इस मन्दिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1) श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 27'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर सं. 1108 का लेख है। परिकर का निचला भाग जो कलात्मक है वह विद्यमान है, परिकर का ऊपरी हिस्सा जिर्णोद्धार के समय हटा दिया गया।
2) श्री शान्तिनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर वीर सं. 2501 माघ शु. 3 का लेख है।
3) श्री चन्द्रप्रभ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। कोई लेख नहीं
4) श्री महावीर भगवान की (मूलनायक के दांए) श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है।
5) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के दांए) श्याम पाषाण की परिकर सहित 13'' ऊँची प्रतिमा है। परिकर कलात्मक है।

गर्भगृह में ही दोनों ओर आलियों में :

1) श्री ऋषभदेव भगवान की श्याम पाषाण की 23'' ऊँची प्रतिमा है। ऋषभदेव भगवान के चार मुष्टि लोच हुए थे एक मुष्टि केस प्रतिमा पर दिखाई देते है।
2) श्री कलिकुण्ड पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 27'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर मंत्र उत्कीर्ण है। कथनानुसार यह प्रतिमा चमत्कारी है। कोई भी मन्नत मांगते है पूर्ण होती है।

उत्थापित धातु की चल प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 6'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1390 का लेख है।
2) श्री शान्तिनाथ भगवान की 7'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1590 का लेख है।
3) श्री कुंथुनाथ भगवान की 7'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1536 का लेख है।
4) श्री पद्मावती देवी की 6'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1590 का लेख है।
5) श्री सिद्धचक्र यंत्र 6.5'' का है।
6) ताम्बे का यंत्र 5''X2.7'' का है।
7) श्री पार्श्वनाथ का चाँदी का यंत्र 2.2'' का है।

बाहर आलिए में :

1) एक ही पट्टी पर एक चरण पादुका श्री जिनदत्तसूरि व दूसरी जिनकुशलसूरि जी की स्थापित है। इस पर सं. 2019 आसोज सुदि 8 का लेख है।
1) श्री पद्मावती देवी श्वेत पाषाण की प्रतिमा है।
2) श्री चरण पादुका 9''x8'' की पट्ट पर स्थापित है। इस पर अस्पष्ट लेख है। 1109 का पढ़ने में आता है।
3) भैरव देव (अधिष्ठायक्ष) की मूर्ति है।

बाहर :

मंदिर परिसर में ही जुड़ा हुआ बरामदा है। उसका दादावाड़ी नाम दिया है। यहाँ पर श्री जिनकुशलसूरी जी की श्वेत पाषाण की 21'' ऊँची प्रतिमा है। प्रतिमा तैयार है, प्रतिष्ठा होना शेष है। **ध्वजा उतार दी है, चढ़ाई नहीं जाती है।**

मंदिर की देखरेख श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, जहाजपुर द्वारा की जाती है। संघ के प्रतिनिधी श्री ताराचंद जी बम्ब (9460437255) एवं श्री अशोक जी बम्ब (9414615941) है।

प्राचीन मंदिर है कोई जायदाद (भूमि) होना चाहिए, जानकारी करनी चाहिए ।

महाराज सम्प्रति द्वारा निर्मित किला, जहाजपुर

यह किला महाराजा सम्प्रति द्वारा निर्मित होने का उल्लेख है ।
प्राचीन किला कई बार प्राकृतिक आपदाओं, मुगलों के आक्रमण के कारण जीर्ण–शीर्ण हुआ होगा, जीर्णोद्धार भी हुआ होगा, जिसका उल्लेख नहीं मिलता । उपरोक्त चित्र वर्तमान समय का दर्शाया गया है।

कंस–कृष्ण के युद्ध का चित्रण

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर शक्करगढ़-311201, तहसील जहाजपुर

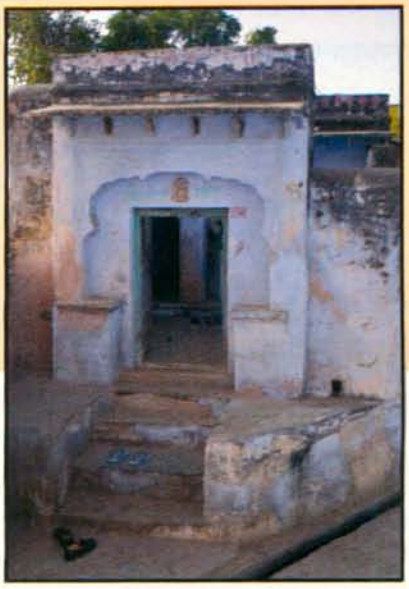

यह पाटबन्द मंदिर जहाजपुर से माण्डलगढ़ जाने वाली सड़क के मध्य खजूरी ग्राम के पास स्थित है। यह जिला मुख्यालय से 110 व तहसील मुख्यालय से 25 किलोमीटर दूर स्थित है। यह मंदिर 500 वर्ष प्राचीन बताया गया है। यह मंदिर उल्लेखानुसार कोटवाड़ा परिवार द्वारा बनाया गया है। प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख के अनुसार यह 500 वर्ष प्राचीन होना सही प्रतीत होता है। प्रारम्भ से यही प्रतिमा स्थापित है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक) पीत पाषाण की 16" ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1543 का लेख है।

2,3) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 7" व 4" ऊँची प्रतिमा है। इन पर कोई लेख नहीं है।

मंदिर का किवाड़ व छत जीर्ण हो रही है। **जीर्णोद्धार की आवश्यकता है।**

एक ही जैन परिवार है जो इसकी देखरेख करते है।

पूजा अनियमित होती है व ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है।

सम्पर्क सूत्र : श्री सुभाष जी खेराडा व श्री संजय खेराडा, मो. 98285 94868

श्री वासुपूज्य भगवान का मंदिर, अमरगढ़-311605, तहसील जहाजपुर

यह घूमटबंद मंदिर भीलवाड़ा से 75 व तहसील मुख्यालय से 25 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर करीब 420 वर्ष प्राचीन है। उल्लेखानुसार यह मंदिर पूर्व में श्री पार्श्वनाथ भगवान का था। यदि धातु की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख को व उल्लेखानुसार पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर होने का आधार माना जाए तो 400 वर्ष से अधिक प्राचीन है । मंदिर के दोनों तरफ कमरे बने हुए है। पूर्व में शोभायात्रा निकला करती थी। 11 वर्ष पूर्व जीर्णोद्धार करा कर वासुपूज्य भगवान की प्रतिमा को विराजमान कराई। यह द्वितीय श्रेणी का ठिकाना रहा है। यहाँ के शासक करनावत कहलाते थे।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1) श्री वासुपूज्य भगवान की (मूलनायक) पीत पाषाण की 21'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2057 फाल्गुन सुदि 3 का लेख है।

2) श्री चन्द्रपभ्र भगवान की उत्थापित श्वेत पाषाण की 7'' ऊँची प्रतिमा है। यह प्रतिमा धातु के सिंहासन पर विराजमान है। इस पर सं. 1635 का लेख है। (बाईं ओर)

3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की उत्थापित श्याम पाषाण की 7'' ऊँची प्रतिमा है। यह प्रतिमा भी धातु के सिंहासन पर विराजमान है। इस पर कोई लेख नहीं है। (दाईं ओर)

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1,2)श्री पार्श्वनाथ भगवान की 2.5'',2'' ऊँची प्रतिमा है।

3) श्री शीतलनाथ भगवान की 7'' ऊँची पंच तीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1504 का लेख है।

4) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 4'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1622 का लेख है।

5) श्री जिनेश्वर देव की 23'' ऊँची प्रतिमा है।

6) श्री सिद्धचक्र यंत्र 4'' का गोलाकार है। इस पर जितेन्द्रसूरि जी द्वारा प्रतिष्ठित होने का लेख है।

7) श्री देव मूर्ति 6'' की ऊँची है । इस पर 1671 का लेख है।

मंदिर की 1 बीघा जमीन व दो दुकाने है। जमीन सिजारी में दी हुई और दुकानें किराए पर दी है।

ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है।

जैन समाज का एक ही घर है। वे इसकी देखरेख करते है।

सम्पर्क सूत्र : **श्री दरियावसिंह जी लोढ़ा, मो. 96490 87823**
श्री नरेन्द्र जी लोढ़ा, मो. 96490 87823

यह चित्र रति रसिया पुस्तक में से लिया है जो दो भागों में है।
इसमें शिक्षक व विद्यार्थी बैठे हुए व दूसरी ओर शिक्षक व महिलाए शिक्षा प्राप्त कर रही है।

श्री पद्मप्रभ भगवान का मंदिर-311404, शाहपुरा

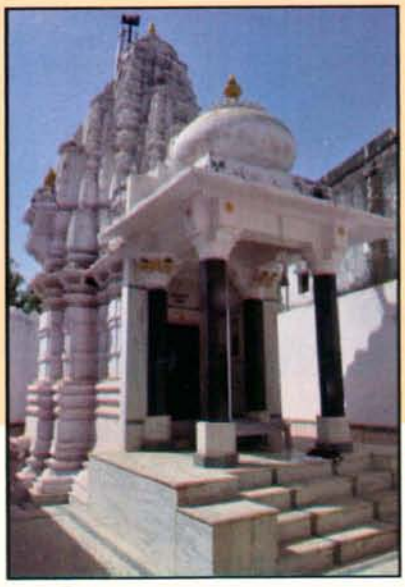

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 56 किलोमीटर दूर कस्बे के भीतर सभी चारों जैन मंदिर पास-पास में ही स्थित हैं। यह मंदिर 1000 वर्ष प्राचीन बतलाया जाता है। मंदिर की प्राचीनता प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख से सिद्ध है। अतः 500 वर्ष प्राचीन है। उल्लेखानुसार पूर्व में यह मंदिर आदिनाथ भगवान का था। इसके शासक राणावत रहे है जिसकी पाग के बंद उम्मेदशाही थी। यह प्रथम श्रेणी का ठिकाना था।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1) श्री पद्मप्रभ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 29'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1548 का लेख है।

2) श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1951 का लेख है।

3) श्री मुनिसुव्रत भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है। वेदी के बीच परासन देवी स्थापित हैं।

दाहिनी ओर आलिए में :

श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख व लांछषण नहीं है। बोलचाल में श्री ऋषभदेव भगवान की प्रतिमा है।

बाहर :

1) श्री चक्रेश्वरी देवी की श्याम पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। यह प्रतिमा स्थापित होना पूर्व में आदिनाथ भगवान का मंदिर का होना सिद्ध है ।

2) श्री माणिभद्र देव की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इसकी प्रतिष्ठा सन् 2006 में सम्पन्न हुई। तीन मंगल मूर्तियाँ स्थापित है।

वार्षिक ध्वजा माघ वदि प्रतिपदा को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री अनिल जी लोढ़ा द्वारा की जाती है।
मो. 9414686115

सभी भगवान के चक्षु नहीं हैं।

यह चित्र सिरोही का स्कूल का प्रतिधित्व करता है।
सुंदर चित्रकारी, चमकीले रंग के है जो मुनि श्री पुण्यविजय जी महाराज सा. की पुस्तक उपदेश माला बालाबबोधा के है, वर्तमान में राष्ट्रीय संग्रहालय में है।

श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर-311404, शाहपुरा

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 55 किलोमीटर दूर कस्बे के दानी मोहल्ला में भामाशाह की हवेली के पास स्थित है। यह मंदिर 800 वर्ष प्राचीन बतलाया जाता है। कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं हैं। प्रतिमा को आधार माना जाए तो प्रतिमा पर सं. 1228 का लेख उत्कीर्ण है। उल्लेखानुसार सं. 1800 के लगभग समाज द्वारा निर्मित है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमा स्थापित है :

1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर 1228 वै.शु. 7 का लेख है।

2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर 1548 का लेख है।

3) श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्याम पाषाण 10'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

4) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है। यह सन् 2006 के श्री जितेन्द्रसूरिजी म. सा. द्वारा प्रतिष्ठित है।

5) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्याम पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री शान्तिनाथ भगवान की 5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1723 (अस्पष्ट) लेख है।

2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 4.5'' (नीचे से खण्डित) ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1385 वै. वदि 5 का लेख है।

3) श्री सुमतिनाथ भगवान की (अस्पष्ट) 5.5 ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1513 का लेख है।

4) श्री धर्मनाथ भगवान की 6'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1525 का लेख है।

5) श्री महावीर भगवान की 6.5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1482 का लेख है।

6) श्री श्रेयांसनाथ भगवान की 6.2'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1563 का लेख है।

7) श्री महावीर भगवान की 5.3'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1337 का लेख है।

8) श्री सुविधिनाथ भगवान की 5.5'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है इस पर सं. 1508 का लेख है।

9) श्री सिद्धार्थनंदन की 5.5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1506 का लेख है।

10) श्री जिनेश्वर भगवान की 5'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1304 का लेख है।

11) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1838 का लेख है।

12) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 3'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1503 का लेख है।

13) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 3'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट लेख है।

14) श्री जिनेश्वर भगवान की 4'' ऊँची प्रतिमा है। यह नीचे से खण्डित है।

15) श्री सिद्धचक्र यंत्र 6''X6'' का है।

16) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 6'' ऊँची श्याम पाषाण की उत्थापित प्रतिमा है।

बाहर - आलियों में :

1) श्री पार्श्वयक्ष की श्याम पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री पद्मावती देवी की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

3) श्री चरण पादुका 21''X14'' के श्वेत पाषाण पर 2 जोड़ी स्थापित है।

इस मंदिर की 5 दुकाने हैं।

धार्मिक ध्वजा माघ वदि प्रतिपदा को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री महेन्द्रसिंह जी लोढ़ा द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र - 94146 86337

श्री शान्तिनाथ भगवान का मंदिर-311404, शाहपुरा

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 55 किलोमीटर नगर के मध्य में स्थित है। शाहपुरा मेवाड़ राज्य की एक पृथक से रियासत थी। उल्लेखानुसार यह मंदिर श्री टेकचंद जी डांगी द्वारा सं. 1650 का निर्मित है। डांगी परिवार की वंशावली के अनुसार मंदिर को सं. 1680 महासुदि 5 को टेका जी डांगी परिवार ने निर्माण कराया।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1) श्री शान्तिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 21'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।
2) श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट लेख है।
3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री अनन्तनाथ भगवान की 6'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1530 का लेख है।
2) श्री शान्तिनाथ भगवान की (सिहासन पर) 3'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।
3) श्री शान्तिनाथ भगवान की 5.5'' ऊँची पंच तीर्थी प्रतिमा है।
4) श्री श्रेयांसनाथ भगवान की 6'' ऊँची पंच तीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1576 का लेख है।
5) श्री जिनेश्वर भगवान की 6.3'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1555 का लेख है।
6) श्री जिनेश्वर भगवान की 6.3'' ऊँची पंच तीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1518 का लेख है।
7) श्री शीतलनाथ भगवान की 6.5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1536 का लेख है।

8) श्री मुनिसुव्रत भगवान की 6'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1503 का लेख है।

9) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 6'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1304 का लेख है।

10) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 6'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1570 का लेख है।

11) श्री आदिनाथ भगवान की 6'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1515 का लेख है।

12) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 5.5'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1568 का लेख है।

13) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 5.5'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1531 का लेख है।

14) श्री जिनेश्वर भगवान की 5.5'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1512 का लेख है।

15) श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की 6.5'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1582 का लेख है।

16) श्री श्रेयांसनाथ की 5'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1556 का लेख है।

बाहर आलियों में :

1) श्री चिन्तामणी पार्श्वनाथ भगवाना की श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

3) श्री गरूड़ यक्ष की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

4) श्री निर्वाणी देवी की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

मंदिर का एक उपाश्रय है, इसमें सम्भवतया किसी का निवास है, ऐसी जानकारी मिली है। यदि ऐसा है तो समाज को सोचना चाहिए।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा माघ वदि प्रतिपदा को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री शत्रुशाल सिंह जी डांगी द्वारा की जाती है।
फोन 01484-222161-162

प्रतिमा के चक्षु – टीका की आवश्यकता है ।

क्रोध प्रेम का नाश करता है,
मान विनय का नाश करता है,
माया मित्रता का नाश करता है,
लोभ सर्वनाश करता है

श्री ऋषभदेव भगवान का मंदिर, शाहपुरा

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 55 किलोमीटर दूर डांगी मोहल्ला में प्रथम मंजिल पर स्थित है। उल्लेखानुसार इस मंदिर को श्री किशनसिंह जी सिंघवी द्वारा संवत् 1900 में बनाया गया था। मंदिर में पाषाण की 2, धातु की 6 व देव-देवी की 2 कुल 10 प्रतिमाएं स्थापित है। मंदिर बंद था, प्रयास करने पर सम्बन्धित सदस्य से सम्पर्क नहीं हो सका। अत: अधिक जानकारी नहीं हो सकी।

इस मंदिर की वार्षिक ध्वजा माघ वदि प्रतिपदा को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख श्री जितेन्द्र जी सिंघवी द्वारा की जाती है। सम्पर्क सूत्र - 98292 43554

शाहपुरा - इतिहास के पन्नों पर

यहां के शासक महाराणा अमरसिंह के द्वितीय पुत्र सूरजमल के वंशज है । इनको राजाधिराज की पदवी दी गई थी । सूरजमल के दो पुत्र थे । सुजानसिंह व वीरमदेव थे । सुजानसिंह मेवाड़ छोड़कर बादशाह के साथ मिल गया । बादशाह ने फुलिया क्षेत्र को मेवाड़ को अलग कर दिया। सुजानसिंह बादशाह की फोज के साथ निरन्तर रहा और चित्तौड़ पर आक्रमण करते समय भी वह साथ रहा । महाराणा राजसिंह ने उससे बदला लेने के लिये शाहपुरा पर आक्रमण कर दिया और वीरमदेव के कस्बो को जलाकर नष्ट कर दिया । सुजानसिंह ने बादशाह शाहजहाँ को प्रसन्न करने के लिए अपने अधीन धुलियां परगने को नाम शाहपुरा रखा । बादशाह के नाम से शाहपुरा नाम का कस्बा आबाद किया जो कि ठिकाने का मुख्य स्थान है ।

सुपार्श्वनाथ भगवान का मंदिर कादीसहना-311404, तहसील शाहपुरा

यह घूमटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 65 तहसील मुख्यालय से 10 किलोमीटर शाहपुरा से जहाजपुर जाने वाली मुख्य सड़क पर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर 500 वर्ष प्राचीन बतलाया गया । उल्लेखानुसार यह मंदिर श्री प्रतापमल सरदारमल जी गोखरू ने सं. 1504 में बनाया ।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1) श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1548 का लेख है।

2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की उत्थापित धातु की 6'' ऊँची प्रतिमा है।

3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की धातु की प्रतिमा है।

बाहर :

अधिष्ठायक देव की प्रतिक मूर्ति है।

मंदिर की दो दुकाने व 1.5 बीघा जमीन है।

परिक्रमा कक्ष बना हुआ है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री सुनिल कुमार गोखरू द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र - 94146 8681

श्री विमलनाथ भगवान का मंदिर, बछखेड़ा-311404, तहसील शाहपुरा

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 70 व तहसील मुख्यालय से 18 किलोमीटर दूर शाहपुरा से केकडी मार्ग की ओर ग्राम के मध्य में स्थित है। उल्लेखानुसार यह मंदिर श्री रंगलाल जी गौखरू परिवार द्वारा संवत् 1912 का निर्मित है। मंदिर की दूसरी प्रतिष्ठा सवत् 2021 में सम्पन्न हुई। पूर्व में यह मंदिर आदिनाथ भगवान का था।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1) श्री विमलनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2021 फा.कृ. 3 का लेख है।
2) श्री मल्लिनाथ भगवान की (मूलनायक के दांए) श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2008 का लेख है।
3) श्री चंद्रप्रभ भगवान की (मूलनायक के बांए) श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2008 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री आदिनाथ भगवान की 6'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है।
2) श्री सिद्धचक्र 4.5 गोलाकार है।
3) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 2.5 ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

निज मंदिर के बाहर दोंनो ओर :

1) षष्टमुख यक्ष की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है।
2) विजया यक्षिणी की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

बाहर आलिये में :

अधिष्ठायक देव की प्रतिक मूर्ति है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा फाल्गुन कृष्ण 3 का चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर श्री हनुमान सिंह जी गोखरू व श्री मनोहरसिंह जी रांका द्वारा की जाती है। सम्पर्क - 99504 84988

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, सांगरिया-311404, तहसील शाहपुरा

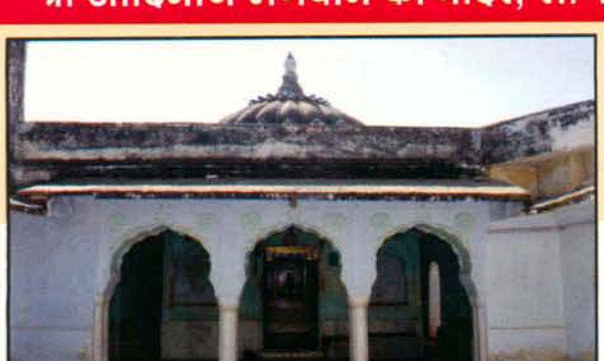

यह घूमटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 85 व तहसील मुख्यालय से 35 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर शिलालेख के आधार 220 वर्ष प्राचीन है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1) श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री कुथुनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है।

3) श्री कुथुनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। वैशाख शु. 3 का लेख है।

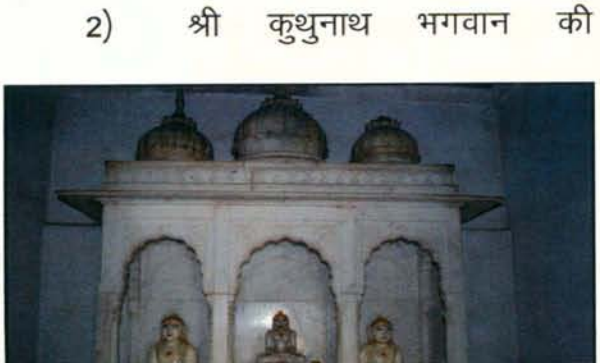

उत्थापित पाषाण की प्रतिमा :

1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 6'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री जिनेश्वर भगवान की 3.5 ऊँची प्रतिमा है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं :

1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 6'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1520 का लेख है।

2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 4'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1465 का लेख है।

3) श्री पार्श्वनाथ की 5.5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1666 का लेख है।

4) श्री वासुपूज्य भगवान की 6'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1479 माघ वदि 5 का लेख है।

5) श्री जिनेश्वर भगवान की प्रतिमा है। इस पर सं. 1364 का लेख है।

6) श्री कुंथुनाथ भगवान की प्रतिमा है। इस पर मा. वदि का लेख है ।

7) श्री देव की खड़ी प्रतिमा है।

बाहर आलिए में :

अधिष्ठायक देव की मूर्ति स्थापित है। बाहर कमरे में देवरिया बनी हुई है। प्रतिमाएं स्थापित नहीं है। परिक्रमा कक्ष है, हाल व खुली जगह है। **मंदिर की 6 बीघा जमीन है** जो पुजारी के पास है।

वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री वरदीचंद जी धमानी द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र - 01484 226020, श्री मूलचंद जी धमाणी - 01484 226159

शिलालेख :

यह चित्र सन् 1859 का है जो मुम्बई में बना है। यह चित्र संग्रहणी सूत्र में से मुनि श्री पुण्यविजय जी म.सा. द्वारा संग्रहित है। यह L.D. Institute of Indology Ahmedabad में है। इस चित्र पुरूष और महिलाओं को व उनके वस्त्रों को महत्वपूर्ण बताता है।

श्री आदीश्वर भगवान का मंदिर फुलियाकलां-311407, तहसील शाहपुरा

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 80 व तहसील मुख्यालय के 30 किलोमीटर शाहपुरा से विजयनगर मार्ग पर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर 1000 वर्ष प्राचीन बतलाया गया है। पूर्व में छोटा मंदिर था। ग्राम के बसने के साथ-साथ मंदिर का निर्माण हुआ। यह ग्राम शाहपुरा रियासत की राजधानी रहा है तथा शाहपुरा के पहले यह बसा है। शाहपुरा बाद में बसाया गया। मंदिर प्राचीन होने के आधार प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख है । पूर्व में भी जिर्णोद्धार हुए है लेकिन कोई उल्लेख नहीं है ।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1) श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1548 वैशाख सुदि 3 का लेख है।
2) श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 7'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।
3) श्री शांतिनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 7'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1226 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री आदिनाथ भगवान की 6'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1510 का लेख है।
2) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 4'' का है। इस पर सं. 2063 का लेख है।

बाहर दोंनो ओर आलियों में :

1) श्री गौमुख यक्ष की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है।
2) श्री चक्रेश्वरी देवी की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

सभा मण्डप के एक आलिए में :

1) श्री जिनकुशल सूरि की चरण पादुका जोड़ी 8''X3'' के पाषाण के पट्ट पर स्थापित है। पट्ट गिरनार जी, शिखर जी के अधूरे बने है।

ग्राम के मध्य में जैन छात्रावास संचालित है जिसमें 100 छात्र लाभान्वित हो रहे हैं।

उपाश्रय बना हुआ है।

मंदिर की 5 दुकाने हैं जो किराए पर दी हुई है उससे प्राप्त आय से दैनिक व्यय होता है।

मंदिर का जिर्णोद्धार कार्य गत 18 वर्षो से चल रहा है लेकिन अभी तक सोमपुरा के अभाव के कारण पूर्ण नहीं हो पा रहा है। मंदिर का बड़ा हॉल है और शिखर 52 फीट ऊँचा है।

वार्षिक ध्वजा जीर्णोद्धार कार्य अधूरा होने के कारण नहीं चढ़ाई जाती है।

इस मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री सज्जनसिंह जी लोढ़ा द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र - 9461270962

नोट : उक्त प्रतिमाओं में से एक प्रतिमा कनेचन ग्राम से लाई गई है ।

श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, कनेचन, तहसील शाहपुरा

यह मंदिर शाहपुरा से 7 किलोमीटर दूर ग्राम में प्रवेश होते ही स्थित है। वर्तमान में केवल भूखण्ड है ।एक जैन परिवार रहता है ।उसकी भावना है कि इसी स्थान पर जैन मंदिर बने ।

यह मंदिर श्री हमीर जी डांगी (जैन) द्वारासं. 1942 में निर्मित होकर माघ सुदि 15 (पूर्णिमा) को श्री पार्श्वनाथ भगवान जिनालय की प्रतिष्ठा कराई (डांगी परिवार के वंशावली पत्र के आधार पर) यह प्रतिमा फुलियां कलां के मंदिर में बिराजमान कराई है ।

यह चित्र सन् 1859 का है जो मुम्बई में बना है । यह चित्र संग्रहणी सूत्र में से मुनि श्री पुण्यविजय जी म.सा. द्वारा संग्रहित है । यह L.D. Institute of Indology Ahmedabad में है ।इस चित्र पुरूष और महिलाओं को व उनके वस्त्रों को महत्वपूर्ण बताता है ।

श्री शीतलनाथ भगवान का मंदिर धनोप-311021, तहसील शाहपुरा

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 90 व तहसील मुख्यालय से 35 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर 650 वर्ष प्राचीन बतलाया गया है। प्रतिमा के आधार पर यह सही प्रतीत होता है। पूर्व में यह मंदिर श्री पार्श्वनाथ भगवान का था, वे प्राचीन प्रतिमाएं प्रथम मंजिल पर स्थापित की गई है। प्राचीन प्रतिमा में श्री आदिनाथ भगवान की प्रतिमा करीब 1000 वर्ष प्राचीन बतलाई जाती है। मंदिर जीर्ण-शीर्ण होने से नूतन निर्माण हुआ है। पूर्व में कच्चा मंदिर था, गिर जाने से श्री जयानंद सूरि जी द्वारा नई प्रतिष्ठा कराई।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1) श्री शीतलनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 23" ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2066 का लेख है। प्रतिमा के पीछे परिकर बना हुआ है।
2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 23" ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2066 वै. शु. 8 का लेख है। प्रतिमा के पीछे परिकर बना हुआ है।
3) श्री शान्तिनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 19" ऊँची प्रतिमा है। इस पर 2066 वै. शु. 8 का लेख है।

नीचे की बेदी पर :

1) श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 7" ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएँ व यंत्र :

1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 4" ऊँची प्रतिमा है । इस पर सं. 1568 का लेख है ।

2) श्री पद्मप्रभ भगवान की 3.5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1683 माह सुदि 5 का लेख है।

3) श्री अजितनाथ भगवान की 11'' ऊँची चतुर्विंशन्ति प्रतिमा है। इस पर सं. 1504 का लेख है।

4) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 1.5'' ऊँची प्रतिमा है।

5) श्री जिनेश्वर देव की 1.5'' ऊँची प्रतिमा है।

6) श्री पद्मावती देवी की (सिंहासन पर विराजमान) 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1730 माघ सुदि 13 का लेख है।

7) देवी की 4'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1556 का लेख है।

8) देवी की 2'' ऊँची प्रतिमा है।

9) श्री धरणेन्द्र देव की 3'' ऊँची प्रतिमा है।

10) श्री सिद्धचक्र गोलाकार 4.5'' का है।

निज मंदिर के बाहर दोंनो ओर आलिए में :

1) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2066 का लेख है।

2) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

सभा मण्डप के बाहर आलिए में :

1) श्री जिनदत्तसूरी जी की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री अम्बिका देवी की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है।

3) श्री जिनकुशलसूरि जी की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है।

4) श्री जिनकान्ति सूरि जी की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है।

ऊपर प्रथम मंजिल पर :

1) श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक) कॉफी रंग के पाषाण की 21'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1424 माघ सुदि 5 का लेख है। यह मंदिर चमत्कारी व आकर्षक है।

2) श्री जिनेश्वर भगवान की (आदीश्वर) (मूलनायक के दाएं) की श्याम पाषाण की 21'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

3) श्री महावीर भगवान की (मूलनायक के बाएं) की श्वेत पाषाण की 21'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2005 माघ शु. 6 का लेख है।

गाँव के बाहर दादावाड़ी बनी हुई है। यतिगण की छतरियां भी बनी हुई है।

वार्षिक ध्वजा ज्येष्ठ शु. 15 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री निहालचंद जी लोढ़ा द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र - 9660241905, 01484 226052

इस चित्र में राजा को शिकार करते हुए दर्शाया गया है। इसको मुनि पुण्यविजय जी म.सा. ने संग्रहित किया है।

श्री चन्द्रप्रभ भगवान का मंदिर, पुरानी अरवड़-311404, तहसील शाहपुरा

यह पाटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 70 व तहसील मुख्यालय से 20 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर 100 वर्ष अधिक प्राचीन है। पूर्व की प्रतिमाएं नहीं हैं। पूर्व में यह आदिनाथ का मंदिर रहा है।

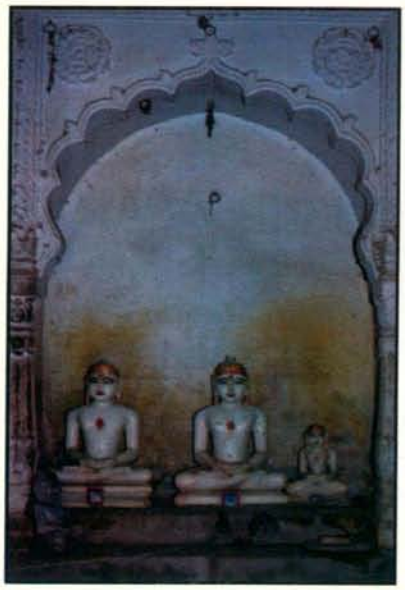

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1) श्री चंद्रप्रभ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री महावीर भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है।

3) श्री नेमिनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री जिनेश्वर भगवान की पाषाण की उत्थापित चार मूर्तियें हैं।

वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री मोहनलालजी धमानी द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र : मो. 98286 59407, 01484 22601

श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर, नई अरवड़-311404, तहसील शाहपुरा

यह घूमटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 80 व तहसील मुख्यालय से 30 किलोमीटर दूर ग्राम के प्रारम्भिक किनारे पर ही बना है। ग्रामवासी पुरानी अरवड़ से आकर बसे है। इसलिए नई अरवड़ कहलाता है। मंदिर श्री अमरसिंह नाबेड़ा द्वारा 7 वर्ष पूर्व ही बनाया है। श्री नाबेड़ा ने अपनी जमीन में ही स्थानक का निर्माण कराया और इसे स्थानक में एक भाग में मंदिर बनाकर प्रतिमा स्थापित की।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1) श्री मुनिसुव्रत भगवान की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री जिनेश्वर भगवान की 8'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है।
2) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 4'' का है। लेख अस्पष्ट है।
3) श्री अष्ठमंगल यंत्र 6''X2.5'' का है। लेख अस्पष्ट है।

वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री अमरसिंह जी नाबेड़ा द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र - मो. 98295 62282, 01484 226080

संसार में न कोई तुम्हारा मित्र है और न शत्रु
तुम्हारें अपने विचार ही शत्रु और मित्र
बनाने के लिए उत्तरदायी है।

श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, इटाडिया-311404, तहसील शाहपुरा

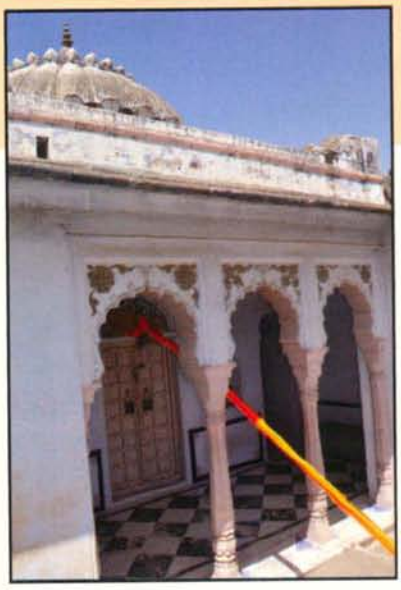

यह घूमटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 80 व तहसील मुख्यालय से 35 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में प्रथम मंजिल पर स्थित है। यह मंदिर केवल 25 वर्ष प्राचीन ही है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक) की श्याम पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2003 ज्येष्ठ कृष्णा 7 का लेख है।
2) श्री शान्तिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।
3) श्री ऋषभदेव भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की10'' ऊँची प्रतिमा है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री जिनेश्वर भगवान की 6'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1491 का लेख है।
2) श्री जिनेश्वर भगवान (काउसग्ग मुद्रा की) 4''ऊँची प्रतिमा है।
3) श्री पार्श्वनाथ भगवान 2''ऊँची प्रतिमा है।
4) श्री जिनेश्वर भगवान की 4'' ऊँची प्रतिमा है।
5) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 4.5'' का है।

मंदिर की दो दुकानें व जमीन हैं।

वार्षिक ध्वजा फाल्गुन वदि 3 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री मिठ्ठालाल जी भेलवाड़िया द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र - 9587069626, 9214528782

श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर, कोठिया-311404, तहसील शाहपुरा

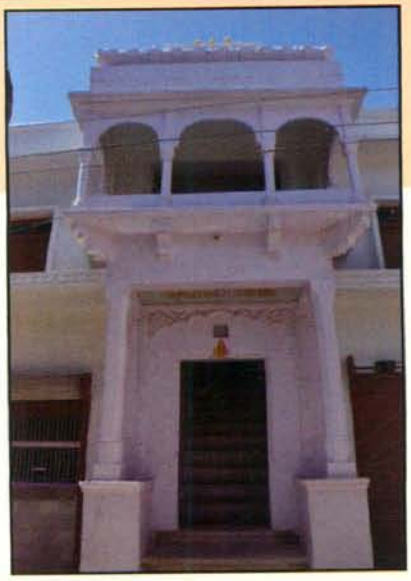

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 70 व तहसील मुख्यालय से 30 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर केवल 20 वर्ष प्राचीन ही है। लेकिन कहा जाता है कि यह मंदिर श्री आदिनाथ भगवान का था।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1) श्री मुनिसुव्रत भगवान की (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 16'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2045 ज्येष्ठ कृष्णा 7 का लेख है।

2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 12'' ऊँची प्रतिमा है।

3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की12'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट लेख है।

श्री ऋषभदेव भगवान की श्याम पाषाण की 8'' ऊँची प्रतिमा है। यही प्रतिमा पूर्व में मूलनायक रही है।

श्री शान्तिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1272 का लेख है।

उत्थापित धातु पाषाण की चल प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषण की 3'' ऊँची प्रतिमा है।
2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 4''ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1549 का लेख है।
3) श्री पार्श्वनाथ भगवान 4''ऊँची प्रतिमा है। कोई लेख नहीं है।
4) श्री सुमतिनाथ भगवान की 6'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1504 का लेख है।
5) श्री पद्मप्रभु भगवान की 5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1482 का लेख है।
6) श्री वासुपूज्य भगवान की 5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1403 का लेख है।

7) श्री जिनेश्वर भगवान की 6'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर से. 1531 का लेख है।

8) श्री सिद्धचक्र यंत्र 4.5'' गोलाकार है। इस पर वीर सं. 2517 का लेख है।

9) श्री अष्ठमंगल यंत्र 5.5''X3'' का है।

वेदी की दीवार पर पबासन देवी स्थापित है।

बाहर आलिओं में दोंनो ओर :

माणिभद्र देव की प्रतिक मूर्तिएं स्थापित है।

सभा मण्डप में :

1) श्री वरूण यक्ष देव की श्वेत पाषण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री दत्ता यक्षिणी श्वेत पाषाण 10''ऊँची प्रतिमा है।

3) श्री चक्रेश्वरी देवी की प्रतिमा स्थापित है।

1) दो कमरें बने हुए हैं।

2) चार दुकानें हैं जिसमें से दो में पोस्ट ऑफिस चल रहा हैं।

3) 3–4 बीघा जमीन हैं।

वार्षिक ध्वजा माघ सुदि 14 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री सम्पतसिंह जी छाजेड़ द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र : 01483-228188, श्री घेवरचंद जी 01482-22846

यह चित्र कपड़े पर दो भागों में बनी है। इसमें नाच–गान को दर्शाया गया है। यह 17वीं शताब्दी की है जिसका संग्रह मु. पुण्यविजय जी म.सा. ने किया।

श्री संभवनाथ भगवान का मंदिर, खामोर-311404, तहसील शाहपुरा

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 55 व तहसील मुख्यालय से 25 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर 250 वर्ष प्राचीन आदिनाथ भगवान का मंदिर था। इस मंदिर को श्री सरेमल जी चपलोत द्वारा लगभग सं. 1700 में निर्मित होने का उल्लेख है। जीर्णशीर्ण हो गया था, नूतन मंदिर का निमार्ण करा नूतन प्रतिमाएं विराजमान कराई गई है। जिसकी प्रतिष्ठा 6 वर्ष पूर्व ही सम्पन्न हुई।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1) श्री सम्भवनाथ भगवान का (मूलनायक) की श्याम पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1924 शाके 1789 का लेख है। परिकर सहित 31'' ऊँची है, प्रतिष्ठा सं. 2061 की है।

2) श्री महावीर भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2061 माघ कृ. 5 का लेख है।

3) श्री शान्तिनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर 2061 माघ कृ. 5 का लेख है।

उत्थापित धातु पाषाण की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री मुनिसुव्रत भगवान की 8'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 2055 चैत्र कृ. 4 का लेख है।

2) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 4.5'' का है। इस पर सं. 2054 का लेख है।

बाहर आलिओं में दोंनो ओर :

1) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर वीर सं. 2531 का लेख है।

2) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण 14''ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2061 माघ शु. 10 का लेख है।

वार्षिक ध्वजा पोष सुदि 10 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री सुगनचंद जी, मो. 97990 52867 एवं श्री पुखराज जी रांका, मो. 99503 91558 द्वारा की जाती है।

यह दोनों चित्र विजाति पत्र नामक पुस्तक जो राजनगर में सन् 1853 में भेजी गई है।
ये भी मुनि पुण्यविजयजी म.सा. की चित्रों से ही है।

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर बनेड़ा-311401, तह. बनेड़ा

यह शिखरबंद विशाल मंदिर जिला मुख्यालय से 30 किलोमीटर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर द्विमंजिला है। भूतल का मंदिर 600 वर्ष व प्रथम तल का 230 वर्ष प्राचीन बतलाया गया है। इसका आधार प्रतिमा है। यह ग्राम प्रथम श्रेणी का ठिकाना रहा है। यहाँ के शासक राणावत रहे हैं जिनकी पाग की बंद जहांगीर शाही थी । ये जैन धर्म के अच्छे पोषक थे। भीलवाड़ा जिले का यह विशालतम् मंदिर है जिसमें बड़ा चौक, सभामण्डप, भूतल से काफी ऊँचा 72 फीट ऊँचा शिखर है ।प्राचीन गोखड़े व 11 स्तम्भ है। प्राचीनकला युक्त सुन्दर बना हुआ है।

भूतल पर :

1) श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 29'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। प्रतिमा का अंगूठा व हाथ (हथेली) सूक्ष्म रूप से खण्डित है, पूजनीय है।

प्रथम तल पर :

1) श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्याम पाषाण की 43'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है।

दोनों ओर :

1) श्री ऋषभदेव भगवान की गुलाबी पाषाण की 31'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री आदिनाथ भगवान की गुलाबी पाषाण की 33'' ऊँची प्रतिमा है।

इन सभी प्रतिमाओं पर सं. 1840 शाके 1705 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री अजितनाथ भगवान की 8'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 2057 फा. शु 7 का लेख है।

2) श्री सुमतिनाथ भगवान की 6''ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1508 का लेख है।

3) श्री सिद्धचक्र यंत्र ताम्बे का 7'' गोलाकार है।

मूल भगवान के दाहिनी ओर (पृथक वेदी पर) :

1) श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 33'' प्रतिमा है।

2) श्री आदिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 29'' ऊँची प्रतिमा है।

इन दोनों प्रतिमाओं पर सं. 1840 शाक 1705 का लेख है।

पृथक आलिए में :

1) अधिष्ठायक देव की दो मूर्तियें स्थापित हैं।

मूल भगवान के बाई ओर (पृथक वेदी पर) :

1) श्री आदिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 33'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री आदिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 31'' ऊँची प्रतिमा है।

इन दोनों प्रतिमाओं पर सं. 1840 शाक 1705 का लेख है।

पृथक आलिए में :

1) अधिष्ठायक देव की पांच मूर्तियें स्थापित हैं।

बाहर हॉल में - पृथक आलियों में - मूल भगवान के बाई ओर :

1) श्री महावीर भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री चक्रेश्वरी देवी की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

3) श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथ भगवान की 12'' ऊँची प्रतिमा है।

इस पर सं. 1548 वै. शु. 3 का लेख है।

पृथक देवरी में :

1) श्री आदिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 10'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

2) श्री नेमीनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 12'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1602 का लेख है।

3) श्री मुनिसुव्रत भगवान की श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

दाहिनी ओर (पृथक देवरी में) :

1) श्री विमलनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 25'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

2) श्री नाकोड़ा भैराव जी की पीत पाषाण की 15'' ऊँचर प्रतिमा है।

3) श्री गोमुख यक्ष की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

4) श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1548 वै. शु. 3 का लेख है।

बाहर चौक में :

1) श्री माणिभद्र देव की श्वेत पाषाण की 21'' ऊँची प्रतिमा है।

प्रवेश के समय दायी ओर :

पूर्व में अलग से जैन स्थानक था। स्थानकवासी संत श्री वेणीचंद जी म. सा. द्वारा अभिग्रह लिया। तीन माह 10 दिन में फलीभूत हुआ जिसका शिलालेख है।

पांच मंगल मूर्तियां हैं –

एक प्राचीन प्रतिमा श्री चन्द्रप्रभ भगवान की चौक में स्थापित है जिस पर सं. 506 का लेख प्रतीत होता है।

मंदिर की 10 दुकानें 12 बीघा जमीन है जो किराए पर दी हुई है। उससें प्राप्त आय से दैनिक व्यय होता है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री जतनसिंह जी डांगी (01487 272040) श्री गुलाबसिंह जी चौधरी (01487 272015) द्वारा की जाती है।

मंदिर का बाहरी दृश्य

बनेड़ा इतिहास के झरोखे से

बनेड़ा के शासक महाराणा राजसिंह के चतुर्थ पुत्र भीमसिंह के वंशज है । भीमसिंह महाराणा जयसिंह से 7 वर्ष आयु में छोटे थे लेकिन वह निडर वीर था । उसने शाही सेना पर आक्रमण कर उसके कई क्षेत्र नष्ट कर दिये और उसने लाखों रूपये लूटे । औरंगजेब व महाराणा जयसिंह के बीच संधि हो जाने से भीमसिंह औरंगजेब की सेवा में जाकर उसकी सेवा स्वीकार कर ली । बादशाह ने उसे राजा की उपाधि, मेवाड़ की बनेड़ा और कई राज्य क्षेत्र (परगने) जागीर में दिये । इस प्रकार बनेड़ा मेवाड़ में रहा अन्य परगने मालवा में चले गये।

प्राचीन किला, बनेड़ा

यह प्राचीन किला राजा सरदारसिंह ने संवत् 1831 मे बनवाया था ।

श्री वासुपूज्य भगवान का मंदिर, मुशी-311404, तहसील बनेड़ा

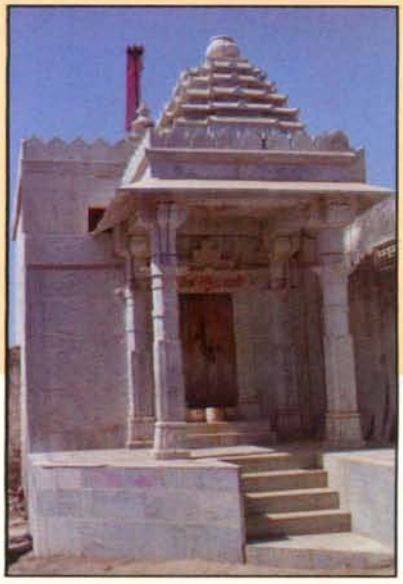

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 42 व तहसील मुख्यालय से 17 किलोमीटर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर 200 वर्ष प्राचीन श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर था। मंदिर जीर्ण-शीर्ण होने से 20 वर्ष पूर्व जिर्णोद्धार करवाया गया और श्री वासुपूज्य भगवान को मूलनायक के रूप में विराजमान कराया। जीर्णोद्धार का कार्य फण्ड के अभाव में पूर्ण नहीं हो पाया है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री वासुपूज्य भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 21'' ऊँची प्रतिमा है। यह प्रतिमा श्री जितेन्द्रसूरी जी म. सा. द्वारा प्रतिष्ठित है।

2) श्री ऋषभदेव भगवान की (मूलनायक के दांए) हल्का हरा रंगी पाषाण की 9''ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1864 का लेख है।

3) श्री सुमतिनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्याम (हल्का हरा रंग) पाषाण की 9''ऊँची प्रतिमा है।

उत्थापित धातु की चल प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री शान्तिनाथ भगवान की 8'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 2028 वै. शु. 6 का लेख है।

2) श्री चंद्रप्रभ भगवान की 3.5''ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1861 का लेख है।

3) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 6'' का है। इस पर वीर सं. 2498 वै.शु.6 का लेख है।

आलियों में :

1) श्री माणिभद्र देव की श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री चक्रेश्वरी देवी की श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। सभी प्रतिमाएं एक ही गब्बारे में स्थापित है।

मंदिर की 1½ बीघा जमीन है।

वार्षिक ध्वजा फा. बदि 10 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री सम्पतसिंहजी भण्डारी द्वारा की जाती है। जैन का एक ही परिवार है । सम्पर्क सूत्र : 94148 39019

यह चित्र 1727 (सन् 1670) कल्पसूत्र में है जो राजनगर (अहमदाबाद) में पेंट (Paint) की गई है। यह L.D. Institution of Indology Ahmedabad में है।

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर उपरेड़ा, 311408 तहसील बनेड़ा

यह घूमटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 40 व तहसील मुख्यालय से 15 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर 500 वर्ष प्राचीन है। मंदिर की बनावट व प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख के आधार पर यह सत्य प्रतीत होता है। एक समय था कि ग्राम में 20 परिवार रहते थे, वर्तमान में कोई जैन नहीं है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमा स्थापित है :

श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 21'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 1545 वैशाख .....चंदनलाल वल्द जीवराज.....का लेख है।

मंदिर में केवल एक ही प्रतिमा है। जैन समाज का एक भी घर नहीं है। मंदिर चारों तरफ से जीर्णशीर्ण हो रहा है, किवाड़ भी टूटा हुआ है। सम्भावना है कि एक ही बरसात में गिर सकता है।

वार्षिक ध्वजा भी नहीं चढ़ाई जाती है।

पूजा के लिए पुजारी होना बतलाया गया लेकिन पूजारी भी होना नहीं पाया गया। सम्भावना है, कभी कभी पक्षाल होता होगा ।

मंदिर की देखरेख (कहने के लिए) श्री लक्ष्मीनारायण जी गनोडिया (माहेश्वरी) करते है।

नोट – जिला मुख्यालय से मूर्तिपूजक समाज के किसी भी सदस्य को देखरेख के लिए नियुक्त करना चाहिए या प्रतिमा को अन्यत्र विराजमान करना चाहिए जिससे आशातना से बचा जा सके।

मंदिर की वास्तविक स्थिति के चित्र निम्न है :

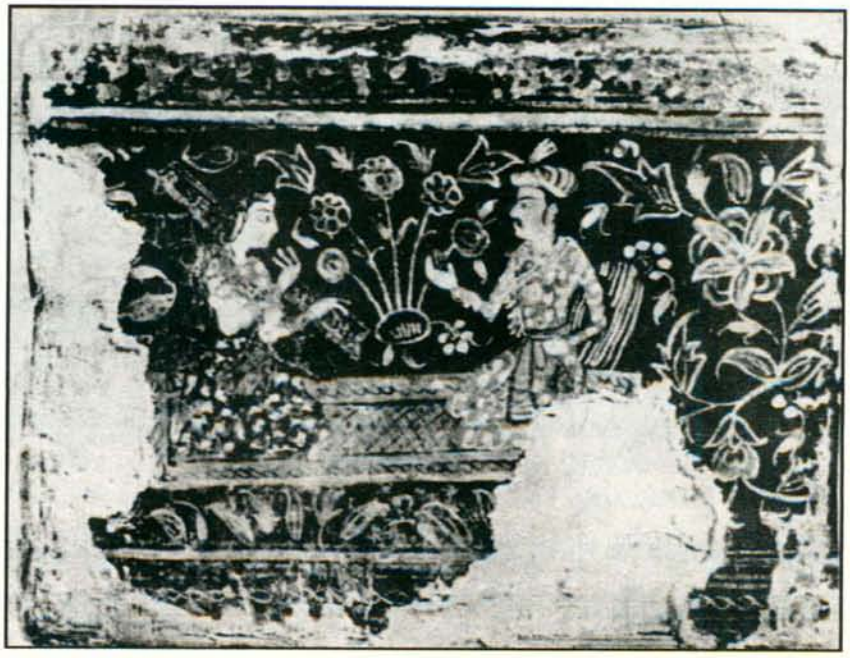

इस चित्र में एक राजा के सम्मुख एक महिला को साज बजाते हुए दर्शाया गया है ।
यह मुनि पुण्यविजय जी म.सा. द्वारा संग्रहित है ।

श्री चन्द्रप्रभ भगवान का मंदिर ढीकोला (311 404), तहसील बनेड़ा

यह पाटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 45 व तहसील मुख्यालय से 12 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर 800 वर्ष प्राचीन डांगी परिवार द्वारा निर्मित होना बतलाया गया। पूर्व में श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर था। इसका आधार प्राचीन मंदिर का ढांचा ही हो सकता है। यह मंदिर श्री मगनीराम जी डांगी द्वारा निर्मित है ।(डांगी परिवार की वंशावली से प्राप्त सूचना के आधार पर)

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री चन्द्रप्रभ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1152 (अस्पष्ट) का लेख है।

2) श्री चन्द्रप्रभ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 7''ऊँची प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट लेख है।

3) श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक के दाएं) परिकर का एक हिस्सा श्याम पाषाण की 8''ऊँची प्रतिमा 4'' की है।

श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 3'' ऊँची उत्थापित प्रतिमा है।

श्री शान्तिनाथ भगवान की धातु की उत्थापित पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1560 का लेख है।

बाहर आलियों में :

श्री माणिभद्र देव की पाषाण पर उत्कीर्ण हुए 21'' ऊँची प्रतिमा है।

मंदिर की 3 बीघा जमीन है व 40'X90' का एक भूखण्ड डूंगरी चौराया पर है।

पास में उपाश्रय है। **मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री रघुनाथ जी डांगी व श्री अनिल जी डांगी द्वारा की जाती है। सम्पर्क सूत्र : श्री ताराचंद जी, मो. 9460437255**

श्री सुमतिनाथ भगवान का मंदिर,घरटा-311401, तहसील बनेड़ा

यह घूमटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 55 व तहसील मुख्यालय से 30 किलोमीटर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर 300 वर्ष प्राचीन बतलाया गया है। इस मंदिर का निर्माण सं. 1900 में होने का उल्लेख है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री सुमतिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 16'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं.1821 का लेख है।

2) श्री शान्तिनाथ भगवान की 12'' ऊँची चतुर्विशंति प्रतिमा है। इस पर सं. 2064 का लेख है।

बाहर आलियों में :

1) श्री तुबरु यक्ष की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री महाकाली देवी की श्वेत पाषाण की 13''ऊँची प्रतिमा है।

सभा मण्डप में तीन तीर्थ पट्ट लगे है।

मंदिर का जीर्णोद्वार सं. 2045 में कराया व प्रतिष्ठा सं. 2065 फाल्गुन सुद 5 की कराई गई। मंदिर की 9 बीघा व 17 बिस्वा जमीन है जो पुजारी के पास है।

वार्षिक ध्वजा फाल्गुन सुदि 5 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की की व्यवस्था जैन समाज द्वारा की जाती है। जैन समाज के बापना व कोठारी के दो परिवार रहते है।

सम्पर्क सूत्र : श्री घेवरचंद जी बापना, मो. 94148 38730

श्री नवरत्नमल जी कोठारी, मो. 99509 85272

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, डाबला-311401, तहसील बनेड़ा

यह घूमटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 65 व तहसील मुख्यालय से 30 किलोमीटर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह ग्राम व मंदिर प्राचीन है। मंदिर का गम्भारा प्राचीन है, सभामण्डप अवश्य नूतन है। पास में मंदिर की खाली जमीन है। उल्लेखानुसार इस मंदिर का निर्माण सं. 1750 में हुआ। यह ग्राम तृतीय श्रेणी का ठिकाना रहा है। यहां के शासक राठौड़ कहलाते थे ।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्याम पाषाण की 7'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 15''ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1802 का लेख है।

3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 15''ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1861 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री अजितनाथ भगवान की 6'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1871 का लेख है।

2,3,4) श्री जिनेश्वर भगवान की 3'', 3.5'' व 1.5'' ऊँची प्रतिमाएं है। इस पर अस्पष्ट व घिसा हुआ लेख है।

5) अधिष्ठायक देव की दो मूर्तियां स्थापित है।

ग्राम में पहले 150 जैन परिवार थे। अब केवल 5 घर है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है।

मंदिर की व्यवस्था ओसवाल जैन समाज द्वारा की जाती है। समाज की ओर से श्री लालचंद जी खेराड़ा द्वारा की जाती है। सम्पर्क सूत्र - 01487 276226

जीर्णोद्धार की आवश्यकता है। व्यवस्था बहुत अच्छी नहीं है।

श्री ऋषभदेव भगवान का मंदिर, कोटड़ी-311603, तहसील कोटड़ी

यह मंदिर भीलवाड़ा से 30 किलोमीटर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर लोढ़ा परिवार कै द्वारा 200 वर्ष पूर्व बनाया गया है, ऐसा बताया गया। प्रतिमा प्राचीन है। समय (वि.स.) स्पष्ट नहीं है। इसलिए प्राचीनता का स्पष्ट आंकलन नहीं किया जा सकता। ग्राम प्राचीन है इसलिए मंदिर भी प्राचीन होना चाहिए। मंदिर प्राचीन होकर जीर्ण-शीर्ण हो रहा था-अत: जीर्णोद्धार कार्य चल रहा है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1) श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 12'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट लेख है। संवत् भी अस्पष्ट है। सम्भवतया: 1054 हो सकता है।
2) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है।
3) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण 5'' ऊँची प्रतिमा है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री अनन्तनाथ भगवान की 7'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर संवत् 1644 फाल्गुन सुदि 2 का लेख है।
2) श्री जिनेश्वर भगवान की 4'' ऊँची प्रतिमा है।
3) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 4'' का है।

देवरी में काँच की जड़ाई की हुई है, अंदर चाँदी के फूल भी होना प्रतीत होता है।

बाहर :

माणिभद्र की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस आलिए में भी टाइल्स जड़ी हुई है। इसके स्पष्ट है कि मंदिर प्राचीन है।

दूसरे आलिए तीन मालीपन्नायुक्त अधिष्ठायक देव की मूतियां स्थापित है।

वार्षिक ध्वजा अनियमित व अनिश्चित है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री सरदार सिंह जी व (9468655271) व श्री दिनेश जी भण्डारी (9772799416) द्वारा की जाती है।

श्री श्रेयांसनाथ भगवान का मंदिर, नन्दराय-311601 तहसील कोटड़ी

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 50 किमी , तहसील मुख्यालय से 20 किमी व बिगोद कस्बा से 10 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह स्थानक परिसर के बीच स्थापित है। यह मंदिर करीब 250 वर्ष प्राचीन बताया गया है। पूर्व में प्रतिमा श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर होने का उल्लेख है। यदि प्रतिमा का आधार माने जाने से मंदिर 250 वर्ष प्राचीन प्रतीत होता है। कुछ समय पूर्व ही श्री निपुणरत्न विजय जी म.सा. द्वारा जीर्णोद्धार कराया गया। मंदिर का श्री श्रेयासनाथ मंदिर ट्रस्ट बना हुआ है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1) श्री श्रेयांसनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1702 का लेख है।

2) श्री मुनिसुव्रत भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2066 का लेख है।

3) श्री महावीर भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण 14'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2066 मिगसर कृष्णा 13 का लेख है।

गर्भगृह में काँच का जड़ाई की हुई है।

वेदी के नीचे की वेदी पर :

1) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। लाछण स्पष्ट नहीं है। लेख नहीं है।

उत्थापित धातु की चल प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 3'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री मनुजेश्वर यक्ष की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।

3) श्री वस्तादेवी की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।

दोनो आलियों में काँच का जड़ाई है।

वेदी की दीवार पर पबासन देवी की प्रतिमा स्थापित है।

बाहर दोनो ओर आलियों में :

1) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण 11'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री गौतम स्वामी की पीत पाषाण की प्रतिमा है।

सभामण्डप के गुम्बज के भीतर सभी तीर्थकरों के रंगीन चित्र व कलात्मक रंगीन स्तम्भ है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा मिगसर कृष्णा 13 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख वर्द्धमान श्रावक संघ की ओर से श्री जगवीरसिंह जी चौधरी (01482-224912) श्री भंवरसिंह जी लोढ़ा (01482-234508) एवं श्री अमरसिंह जी डुंगरवाल (मो. 94146 87053) द्वारा की जाती है।

श्री सुमतिनाथ भगवान का मंदिर, माल का खेड़ा, तहसील कोटडी

यह मंदिर कोटड़ी से 10 किलोमीटर स्थित है।

यह चित्र सन् 1300 का उत्तराध्ययन सुखा बोध वृति के पाम पत्ती का है जिसे
आगम अवतार पुण्यविजय जी म.सा. ने संग्रहित किया गया है।
बायें श्री पार्श्वनाथ भगवान एवं दाऐं में श्री आदिनाथ भगवान को मय रायण वृक्ष के दर्शाया गया है।

श्री विमलनाथ भगवान का मंदिर, बनका खेड़ा-311011, तहसील कोटड़ी

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 20 व तहसील मुख्यालय से 15 किलोमीटर दूर है। यह मंदिर भीलवाड़ा से मांडलगढ़ जाने वाली सड़क पर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर 200 वर्ष प्राचीन इसका आधार पर पूर्व में स्थापित प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख है। यह मंदिर पूर्व में श्री चंद्रप्रभ भगवान का था। पूर्व में मंदिर जीर्णशीर्ण होने से श्री मनोहर विजय जी म. सा. के उपदेश से जनसहयोग द्वारा जीणोद्धार कराया गया। प्रतिष्ठा होना शेष है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1) श्री विमलनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री सम्भवनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है।

3) श्री महावीर भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण 25'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2035 का लेख है।

उत्थापित धातु की चल प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 7'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री जिनेश्वर भगवान की 12'' ऊँची चतुर्विंशति प्रतिमा है। इस पर सं. 2035 का लेख है।

3) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 6'' का है। इस पर सं. 2040 का लेख है।

4) श्री अष्ठमंगल यंत्र 6''X3.5'8 का है। इस पर सं. 2040 का लेख है।

5) श्री शान्तिनाथ भगवान की 8'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2040 श्रावण कृष्णा 5 का लेख है।

(6) श्री नमीनाथ भगवान की 6.5'' ऊँची प्रतिमा है।

बाहर आलिए में :

1) षष्ठमुखी यक्ष की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

2) विजया यक्षिणी की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

बाहर :

1) श्री माणिभद्र देव की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री अधिष्ठायक देव 16'' व 5'' ऊँची प्रतिमा है।

ऊपर (प्रथम मंजिल) :

पूर्व की स्थापित प्रतिमा मूलनायक के रूप में कमरे में स्थापित की गई।

श्री चंद्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 7'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1863 का लेख है।

परिक्रमा कक्ष बना हुआ है।

प्रतिष्ठा होना शेष है।

वार्षिक ध्वजा नही चढ़ती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री केसर सिंह जी चौधरी द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र - 98292-52520

अजर-अव्याबाध
शुद्ध आत्मा को रोग नहीं होता, व्याधि और पीड़ा नहीं होती,
शुद्ध आत्मा को अखण्ड जवानी होती है।
संपूर्ण आरोग्य और अनंत आनंद होता है।

श्री चन्द्रप्रभ भगवान का मंदिर, बड़ा महुवा-311011, तहसील कोटडी

यह घूमटबंद मंदिर भीलवाड़ा से 20 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर 500 वर्ष प्राचीन होता बताया गया है। यह मंदिर यति जी द्वारा बनाया गया, यति द्वारा समाज को सुपुर्द कर दिया। बाद में जीर्णशीर्ण होने पर मंदिर रामलाल पिता काशीराम जी डांगी द्वारा बनाया गया और सं. 1940 फाल्गुन वदि को प्रतिष्ठा श्री चन्द्रप्रभ भगवान की प्रतिमा विराजमान कराई। यह डांगी परिवार के पारिवारिक वंशावली के आधार पर इसमें खारीवाल परिवार के सहयोग से प्रदान किया।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री चन्द्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 12'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1598 मिगसर सुदि 6 का लेख है।
2) श्री अनन्तनाथ भगवान की पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1511 का लेख है।
3) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 5'' का है। अधिठाष्ता देव की प्रतिमा (प्राचीन) स्थापित है। मंदिर के बाहर दुकानें है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा अनियमित चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री पवन कुमार जी खारीवाल द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र - 9828137540, श्री शान्तिलाल जी खारीवाल (01482-290030)

चक्षु की आवश्यकता है।

॥ परमात्मतत्त्वं प्रणमामि नित्यम् ॥
जवानी, आरोग्य और आनंद आत्मा के होते है, शरीर के नहीं।
रोग-शोक और संताप से मुक्त आत्मा को हमारी वंदना है।

श्री चंचलेश्वर पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, चंचलेश्वर-311605, तहसील कोटड़ी

यह शिखारबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 75 व तहसील मुख्यालय से 25 किलोमीटर पारोली गांव से 6 किलोमीटर दूर बनास नदी के किनारे पर करीब 100 फीट ऊंचाई की पहाड़ी पर स्थित है। यह मंदिर करीब 700 वर्ष प्राचीन है। ऐसा कहा जाता है कि पूर्व में बनास भिणाय नगर का क्षेत्र सैंकड़ों किलोमीटर तक बनास नदी के किनारे फैला हुआ था। इस क्षेत्र की राजधानी भिणाय थी। ऐसी परम्परा थी जहां पर किसी राज्य की स्थापना होती वहां जैन लोग भी स्थापित हो जाते और जैनी लोग अपने पूजा-पाठ के लिये मंदिर की स्थापना करते थे। इसी परम्परा के अनुसार ऐसी दन्तकथा है कि यहां के श्री नाथू कावड़िया के पुण्य से एक जैन यति पधारें उन्होंने उपदेश दिया और वे स्वयं चाहते थे ऐसा धार्मिक कार्य करें जिससे यहां पर अति सुंदर शुद्ध व गहरी वाव बनाने का कार्य प्रशंसनीय है। जो आज भी उनको याद कराती है। कावड़िया-नाथू शाह वाव, दुर्ग भिणाय वाव आदि नामों से आज भी प्रचलित है। इस वाव की प्राचीनता करीब सात सौ वर्षों से प्राचीन है। अतः यह मंदिर 700 वर्ष प्राचीन है। नाथू ने वाव बनाने के पूर्व ही चंचलेश्वर पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर बनवा दिया। आज भी यहां स्थापित दुर्ग (खण्डहर)- भिणाय का तालाब आदि से आज भी प्राचीनता प्रभावित होती है।

इस मंदिर का समय-समय पर जिर्णोद्धार होने का उल्लेख मिलता है लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि इस मंदिर का जिर्णोद्धार कम ही हुआ है। संवत 1811 में श्री खुशालविजय जी म.सा. द्वारा रचित पार्श्वनाथ नाम माला था तीर्थावली में चंचलेश्वर पार्श्वनाथ का उल्लेख है।

मंदिर में स्थापित प्रतिमा बालू से निर्मित है। इसके लिए भी ऐसा कहा जाता है कि बनास नदी के पास

एक गाय प्रतिदिन आकर एक ही स्थान पर दूध छोड़ देती जिससे गाय–मालिक (गौ पालक) इससे परेशान था कि गाय का दूध कहां जाता है ? एक दिन गाय के पीछे–पीछे गया तो स्वयं ने गाय को दूध छोड़ते हुए देख कर आश्चर्यचकित हो गया।

इधर नाथू श्रावक ने स्वप्न में देखा कि अधिष्ठायक देवी ने संकेत दिया कि नदी में उस स्थान पर पार्श्व प्रभु की प्रतिमा है, निकाल कर चूल पर्वत पर मंदिर का निर्माण कर प्रतिष्ठा कर, संकेतिक स्थान पर प्रतिमा प्राप्त हुई। मंदिर का निर्माण कराया, प्रतिष्ठा कराई। इस कथा के अनुसार ऐसा प्रतीत होता है कि नाथू कावड़िया, नाथू श्रावक व गौपालक एक ही व्यक्ति होगा क्योंकि प्राचीन काल में प्रायः श्रावकों के पास खेती होती थी, पशुपालन का कार्य भी करते थे। यह प्रतिमा चमत्कारिक है। ऐसी कई चमत्कारी घटनाएं सुनी जा सकती है।

चमत्कार के कारण ही श्वेताम्बर व दिगम्बर समाज दोनों ही भक्ति भाव रखते है। पूजा पाठ करते है। दोनों समाज के बीच विवाद चल रहा है। प्रतिमा पर विलेपन की आवश्यकता है तथा जिर्णोद्धार की आवश्यकता है। तलहटी पर भी पार्श्वनाथ का मंदिर स्थापित है। उच्चतम न्यायालय के निर्णय अनुसार श्वेताम्बर समाज को भी श्वेताम्बर मूर्ति के पास एक मूर्ति दिगम्बर समाज ने भी स्थापित की है । वहां पर पूजा करते हैं ।

पहाड़ी पर मंदिर स्थापित होने के कारण वहां का गावं, प्राकृतिक सौंदर्य, मनमोहक है। यात्री के लिए विश्राम स्थल बने हुए है। कोई सुविधा नहीं है।

कई वर्षो से कोटड़ी जहाजपुर के श्वेताम्बर समाज के श्रावक व्यवस्था देखते रहे है। वर्तमान में दिगम्बर समाज द्वारा व्यवस्था देखता है। मंदिर की देखरेख के लिए एक पेढी है जो श्री चंचलेश्वर पार्श्वनाथ जैन मंदिर के नाम से जानी जाती है। भगवान के जन्म कल्याणक के उपलक्ष पर पोष वदि 9 व 10 को मेला लगता हैं।

श्री चिन्तामणी पार्श्वनाथ भगवान मूर्ति पूजक संघ पेढ़ी, भीलवाड़ा-311001

सम्पर्क सूत्र- पी. पी. (श्वेता.) 01482-224430 (भीलवाड़ा)

श्री नेमिनाथ (श्री पार्श्वनाथ) भगवान का मंदिर पारोली, कोटड़ी-311202

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 60 व तहसील मुख्यालय से 30 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर 100 वर्ष से प्राचीन है। प्रतिमा मंदिर प्रथम मंजिल पर है। मंदिर के मुख्य दरवाजे पर श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर लिखा हुआ है और भूमि भी श्री पार्श्वनाथ भगवान के नाम से आंवटित है ।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1) श्री नेमिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्याम पाषाण की 17'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।
2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2008 का विजयानन्द सूरी जी का लेख है।
3) श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 11' ऊँची प्रतिमा है। इस पर अपठनीय लेख है।

उत्थापित धातु की चल प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 4'' ऊँची प्रतिमा है।
2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 3'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1658 का लेख है।
3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 3'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।
4) समवसरण (चतुर्मुखी) 3'' ऊँची है। इस पर से. 1772 का लेख है।

बाहर :

1) श्री माणिभद्र देव की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री धरणेन्द्र देव की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1658 का लेख है।

3) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषण की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

देवी की गोद में बालक है, शेर पर सवार है। अतः अम्बिका देवी है।

एक जोड़ी चक्षु की आवश्यकता है।

मंदिर की 12 बीघा जमीन पार्श्वनाथ भगवान मंदिर के नाम से है व दुकाने स्थानक (उपाश्रय) है। परिक्रमा कक्ष नहीं है।

वार्षिक ध्वजा वैशाख सुदि 8 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री घीसूलाल जी गुगलिया द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र - 7665945570

बाधाओं को देखकर विचलित न हों।
विश्वास रखें,
जीवन में निन्यावें द्वार बंद हो जाते हैं,
तब भी कोई-न-कोई एक द्वार जरूर खुला रहता है।

यह चित्र आत्माराम जी जैन जूना भण्डार बड़ोदरा में संवत् 1317 की है ।
यह चित्र कल्पसूत्र व कलकाकथा के ताण पत्ते पर बनाये गये हैं जिसमें छोटी आंख बनी है ।

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर पारोली-311302, कोटड़ी

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय 60 व तहसील मुख्यालय किलोमीटर से 30 किलोमीटर दूर स्थित है। यह मंदिर 700 वर्ष पूर्व प्राचीन है। इसका आधार मंदिर की बनावट व प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख है। मंदिर का विवाद श्वेताम्बर-दिगम्बर के बीच उच्चतम न्यायालय में विचाराधीन था, निर्णय होने पर दिगम्बर समाज को उसकी पूजा पद्धति के आधार पर स्वीकृति प्रातः 6 से 9 बजे तक प्रदान की है। चाबी श्वेताम्बर समाज के सदस्यों के पास रहती है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1) श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक) हल्के हरे रंग की पाषाण की 51'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 1335 का लेख है। प्रतिमा पर एक मुष्टि केश जो शेष रह गये वे स्पष्ट दिखाई देते हैं।
2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की(मूलनायक के बाएं) श्याम पाषाण की 16'' ऊँची प्रतिमा है।
3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्याम पाषाण 16'' ऊँची प्रतिमा है। चक्षु नहीं है।
1) श्री आदिनाथ भगवान की उत्थापित धातु 6'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1536 का लेख है।

परिक्रमा कक्ष बना हुआ है। जिर्णोद्वार की आवश्यकता है ।

वार्षिक ध्वजा विवाद के कारण नहीं चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री घीसूलाल जी गुगलिया द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र - 7665945570

श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर दांतड़ा-311603, तहसील कोटड़ी

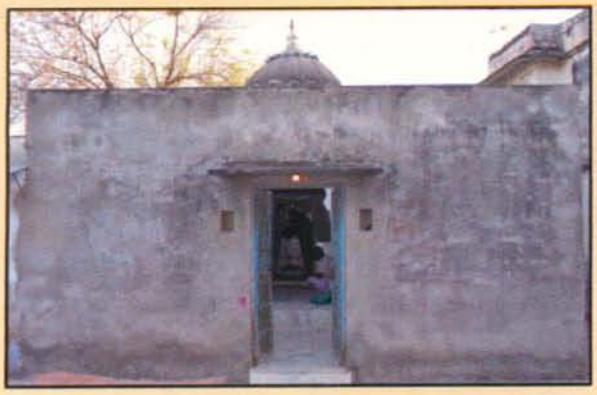

यह घूमटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 55 व तहसील मुख्यालय से 25 किलोमीटर ग्राम के मध्य में स्थित है। भीलवाड़ा से कोटड़ी, कोटड़ी से दांतड़ा जाया जाता है। यह मंदिर करीब 200 वर्ष प्राचीन है। मंदिर की बनावट इसका आधार है। यह तृतीय श्रेणी का ठिकाना रहा है, जिसके शासक सांगावत कहलाते थे।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 12'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है। लांछन भी स्पष्ट नहीं है। बोलचाल में पार्श्वनाथ बोला जाता है।

परिक्रमा कक्ष बना हुआ है। बाहर अधिष्ठायक देव की मूर्ति है।

मंदिर के नाम पर श्री अमरसिंह जी बंब ने 5 बीघा भूमि भेंट दी है लेकिन मंदिर के नाम पर हस्तान्तर नहीं हुई है।

प्रतिमा के पीछे टाइल्स लगी हुई है। दो वर्ष पूर्व समाज ने अपने स्तर पर जीणोद्वार कराया है।

वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री दोलतसिंह जी व श्री अमरसिंह जी बंब द्वारा की जाती है। सम्पर्क सूत्र - 9460352990

चक्षु की आवश्यकता है।

जिर्णोद्धार की आवश्यकता है ।

श्री शान्तिनाथ भगवान का मंदिर,आसींद-311301

यह घुमटबन्द मंदिर भीलवाड़ा से 55 किलोमीटर दूर है। यह मंदिर व उपाश्रय के प्रयोग में आता है । उपाश्रय में प्रतिमा स्थापित है। यह भी बतलाया गया है कि मंदिर 200 वर्ष प्राचीन रहा है। इसी उपाश्रय में अमृत भारती विद्या मंदिर संचालित है। दोनों ओर कमरे बने हुए है। यह उपाश्रय केवल किराया प्राप्ति व किसी समाज के सदस्य के मृत्यु पर बैठक के प्रयोग में आता है। उल्लेखानुसार यह मंदिर सं. 1800 के लगभग का निर्मित है। मंदिर व मंदिर के ऊपर की मंजिल में बालक जूते लेकर आते-जाते हैं जो मंदिर परम्परा के विरूद्ध है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1) श्री शान्तिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1860 वे. सुदि 3 का लेख है।
2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 12'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1860 वै. सुदि 3 का लेख है।
3) श्री जिनेश्वर भगवान की 7'' ऊँची उत्थापित प्राचीन प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं हैं।
4) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 8'' ऊँची उत्थापित प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।
5) श्री भैरव की श्याम पाषाण की 4'' ऊँची प्रतिमा है।
6) श्री अधिष्ठायक देव की तीन मूर्तियें हैं।

वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है।

मंदिर की व्यवस्था तेरापंथ जैन समाज की ओर से देखी जा रही है।

इस प्रकरण का न्यायालय में विवाद चल रहा है।

सम्पर्क सूत्र - श्री गणेशलाल जी चोरड़िया, फोन : 01480-220241

आसीन्द के शासक कुशवाह के रावत श्री अर्जुनसिंह के चौथे पुत्र अजितसिंह के वंशज थे। उन्हें रावत की उपाधि प्राप्त थी। अन्त में शासक निःसन्तान मृत्यु हो जाने से महाराणा फतहसिंह ने इस क्षेत्र को खालसे किया ।

श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर चेनपुरा-311301, तहसील आसींद

यह घूमटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 60 व तहसील मुख्यालय से 18 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर करीब 200 वर्ष प्राचीन बतलाया गया। खण्डहर हो जाने से वि.सं. 2053 में उसी स्थान पर नूतन मंदिर बनवाया और प्रतिष्ठा कराई गई।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री मुनिसुव्रत भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 18'' की प्रतिमा है। इस पर श्री राजेन्द्रसूरि जी पढ़ने में आता है ।

2) श्री अजितनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर श्री जितेन्द्रसूरि जी द्वारा प्रतिष्ठित का लेख है।

3) श्री शान्तिनाथ भगवान की (मूलनायक के बांए) श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

दोनो ओर आलियों में - दाहिनी ओर :

1) श्री महावीर भगवान की धातु की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2052 का लेख है।

बांई ओर :

1) श्री वासुपुज्य भगवान की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है । इस पर सं. 2050 का लेख है ।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री मुनिसुव्रत भगवान की 8'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2051 चैत्र सुदि 4 का लेख है।

2) श्री शान्तिनाथ भगवान की 8'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2052 वैशाख सुदि 4 का लेख है।

निज मंदिर के बाहर - दाहिनी ओर :

1) श्री माणिभद्र देव की श्याम पाषाण की 8'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2051 चैत्र सुदि 4 का लेख है।

2) श्री महावीर भगवान की धातु की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2052 का लेख है।

बाई ओर :

पद्मावती देवी की श्याम पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है। बाहर चार स्तम्भ हैं। चित्रकारी भी बनी हुई है। शत्रुंजय व अष्टापद तीर्थ के चित्रपट्ट बने हुए है।

सभामण्डप में :

1) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री रत्नप्रभ सूरि जी की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री गजानन (गणेश) की श्याम पाषाण की 21'' ऊँची प्रतिमा है।

3 मंगल मूर्तियां स्थापित हैं।

वार्षिक ध्वजा ज्येष्ठ कृष्णा 8 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की व्यवस्था स्थानीय श्वेताम्बर जैन समाज द्वारा की जाती है। समाज की ओर से श्री पुखराज जी तातेड़ कार्य देखते है। सम्पर्क सूत्र : 9928465186

बच्चों पर निवेश करने की सबसे अच्छी चीज है
अपना समय और अच्छे संस्कार।
ध्यान रखें,
एक श्रेष्ठ बालक का निर्माण
सौ विद्यालय को बनाने से भी बेहतर है।

श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर मोड़ का निम्बाहेड़ा-311024, तहसील आसींद

यह घूमटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 40 किमी, तहसील मुख्यालय से 25 किमी व मुख्य मार्ग से 3 किलोमीटर भीतर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर करीब 800 वर्ष प्राचीन बतलाया गया है। प्राचीनता का स्पष्ट प्रमाणीकरण नहीं होता लेकिन पाषाण की प्रतिमाओं पर व धातु की प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेख प्राचीनता की ओर इंगित करता है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1226 (1826) (अस्पष्ट) का लेख है।
2) श्री चन्द्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1548 (1948) का लेख है।
3) श्री नेमिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1226 (1826) वैशाख सुदि 3 का लेख है।

इन तीनों प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण संवत् स्पष्ट नहीं है। कोष्ठक में दिया गया भी सही हो सकता है। पुनः परीक्षण किया जा सकता है।

उत्थापित धातु की चल प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 7'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1534 फा. शु. 2 का लेख है।
2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मयपरिकर) 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1634 माघ वदि 8 का लेख है।

3) माणिभद्र जी 9'' ऊँची प्रतिमा है । इस पर सं. 2023 का लेख है।

4) श्री जिनेश्वर भगवान की 2'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1316 माघ सुदि 9 का लेख है।

5) श्री जिनेश्वर भगवान की 3'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1215 लेख है।

6,7,8) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 2'', 2'', 1.5'' ऊँची प्रतिमा है।

9–11) श्री पार्श्वनाथ भगवान की सिंहासन पर श्री चतुर्मुखी प्रतिमाएं 5'' ऊँची खण्डित प्रतिमा है। मंदिर का जिर्णोद्धार की आवश्यकता है।

12) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 3'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1552 का लेख है।

13) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 2.5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1605 का लेख है।

बाहर आलियों में :

1) श्री पार्श्व यक्ष की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर विशाल विजय जी का नाम दिखाई देता है।

2) श्री पद्मावती देवी की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

टाईल्स लगी है।

ऐसी जानकारी मिली है कि कृषि भूमि है लेकिन ज्ञात नहीं है।

मंदिर का दैनिक खर्च जन सहयोग द्वारा किया जाता है।

वार्षिक ध्वजा भादवा सुदि 2 को चढ़ाई जाती है । ध्वजा दण्ड नहीं है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री प्रकाश जी व बाबूलाल जी जैन करते हैं ।

सम्पर्क सूत्र : श्री प्रकाश जी, मो. 99830 04900 व श्री बाबूलाल जी मो. 77427 03330

धीरज मत खोओ।
हीनता और हताशा तुम्हें शोभा नहीं देती।
अपने आत्म-विश्वास को बढ़ाओं
फिर से प्रयास करो,
तुम्हें सफलता अवश्य मिलेगी।

श्री ऋषभदेव भगवान का मंदिर, पुरानी परासोली-311204, तहसील आसींद

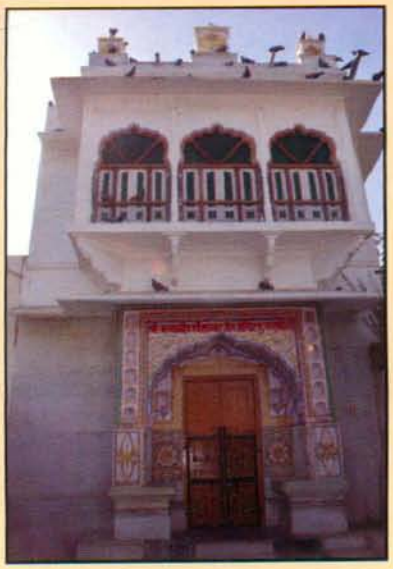

यह घूमटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 60 व तहसील मुख्यालय से10 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। 250 वर्ष प्राचीन यह मंदिर श्री जोरावरमल जी बापना द्वारा सं. 1800 में निर्मित है। इस ग्राम में श्री बापणा की कचहरी लगती थी । एक समय श्री बापणा की माताजी भी साथ में ग्राम में आई। वे बिना दर्शन के पानी भी नहीं पीती थी। ग्राम में मंदिर नहीं था। श्री बापना ने मंदिर का निर्माण कराया। समय के अनुसार मंदिर खण्डहर हो गया। जिसके फलस्वरूप मंदिर का जिर्णोद्धार सं. 2040 में हुआ और प्रतिष्ठा सं. 2066 में निपुण रत्न विजय जी म.सा. द्वारा सम्पन्न हुई। उल्लेखानुसार यह मंदिर जोरावरमल जी चन्दनमल जी ने सं. 1900 के लगभग में बनाया। यह प्रथम श्रेणी का ठिकाना रहा है। इसके शासक चौहान कहलाते थे।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री ऋषभदेव भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 9'' की ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

2) श्री पार्श्वनाथ (शंखेश्वर) भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है।

3) श्री शान्तिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 12'' ऊँची प्रतिमा है।

4) श्री पार्श्वनाथ (चिन्तामणि) भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 17' ऊँची प्रतिमा है।

5) श्री महावीर भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 8'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री शीतलनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2056 माघ कृष्णा 5 का लेख है।

आलियों में :

1) श्री गौमुख यक्ष की श्याम पाषाण की 12'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री चक्रेश्वरी देवी की श्याम पाषाण की 12'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2066 का लेख है।

उत्थापित धातु की चल प्रतिमाएं व यंत्र :

1–2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा है।

3) श्री श्रावक की मूर्ति है।

4) श्री नवगृह गोलाकार ताम्र यंत्र 6.5'' का है।

सभा मण्डप में :

1) श्री माणिभद्र देव की चाँदी की परत चढ़ी 14'' ऊँची प्राचीन चमत्कारी प्रतिमा है।

2) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

3) श्री अधिष्ठायक देव की मूर्ति स्थापित है।

तीन मंगल मूर्तियाँ स्थापित है।

मंदिर के प्रवेश द्वार ऊपर तीन देवरियों में तीन प्रतिमाएं स्थापित है।

पास में उपाश्रय है।

मंदिर की 12 बीघा जमीन है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा फाल्गुन वदि 13 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की व्यवस्था स्थानीय स्थानकवासी श्रावक संघ द्वारा की जाती है। समाज की ओर से श्री पारसमल जी कांठेड द्वारा व्यवस्था देखी जाती है। सम्पर्क : 014780-220701, 09828336972

नोट : मेवाड़ के महाराणा भीमसिंह के समय में देश (मेवाड़) की आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो गई थी और मेवाड़ की आर्थिक सुधार के लिए श्री जोरावरमल जी बापणा को इन्दौर से मेवाड़ बुलाकर मेवाड़ के व्यापार का लेन देन उनके माध्यम से होने लगा। उसी आधार पुरानी परासोली ग्राम में उनकी कचहरी स्थापित की और वहाँ से इस क्षेत्र का व्यापार का लेन–देन करते थे।

श्री नमिनाथ भगवान का मंदिर जगपुरा-311304, तहसील आसींद

यह घूमटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 60 व तहसील मुख्यालय से 18 पुरानी पारसोली से 3 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। उल्लेखानुसार यह मंदिर सं. 1900 में संघ द्वारा निर्मित है। मंदिर जीर्णशीर्ण होने पर आंशिक जिर्णोद्धार श्री जितेन्द्र सूरि जी म. सा. ने सं. 2048 में कराया गया। पूर्व में श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर था। वर्तमान में नमिनाथ भगवान का है। यह ग्राम तृतीय श्रेणी का ठिकाना रहा है जिसके शासक राठौड़ थे।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री नमिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 19'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2005 माघ सुदि 6 का लेख है।

2) श्री महावीर भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2008 ज्येष्ठ शुक्ला 5 का लेख है।

3) श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्याम पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2010 का लेख है।

4) उत्थापित धातु की जिनेश्वर भगवान की 7 पंचतीर्थी प्राचीन प्रतिमा है। इस पर लेख अपठनीय है।

बाहर :

1) श्री भृकुटि यक्ष श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री गन्धारी की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

अस्वच्छता है परिक्रमा कक्ष बना है। सभा मण्डप की गुम्बज पर चित्रकारी बनी हुई है, जिर्णोद्धार की आवश्यकता है।

मंदिर की 5 बीघा जमीन है जो पुजारी के पास है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है।

इस मंदिर की देखरेख जैन समाज की ओर से एडवोकेट श्री गोतम जी द्वारा की जाती है।

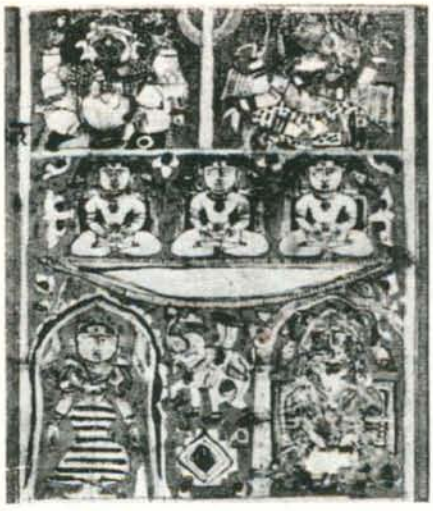

ये चित्र मुनि पुण्यविजय जी म.सा. द्वारा लिखित भाषा शंत्रुजय महात्म में सन् 1468 की है। इस चित्र में गणेश का चित्र भी अंकित है।

हमें जो मिला है, हमारी पात्रता से ज्यादा मिला है।
यदि आपके पाँव में जूते नहीं है,
तो अफसोस मत कीजिये।
दुनिया में कई लोगों के पास तो पाँव ही नहीं है।

श्री महावीर भगवान का मंदिर जेतगढ़, 311302, तहसील आसींद

यह घूमटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 60 व तहसील मुख्यालय से20 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। उल्लेखानुसार यह मंदिर संवत् 1989 में संघ द्वारा निर्मित है। अत: 80 वर्ष प्राचीन बतलाया गया।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री महावीर भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 19'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1989 माघ शु. 15 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1–3) श्री जिनेश्वर भगवान की 3'', 2'', 1'' ऊँची प्रतिमा है।

4) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 3' ऊँची प्रतिमा है।

बाहर :

दो अधिष्ठायक देव की मूर्तियें स्थापित है ।

इस मंदिर की 4 बीघा भूमि व एक दुकान है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा भादवा सुदि 5 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री लादुलाल जी रांका, मो. 94139 557471 एवं श्री महावीर जी रांका, मो. 99830 64540 द्वारा की जाती है

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर बदनोर-311302, तहसील आसींद

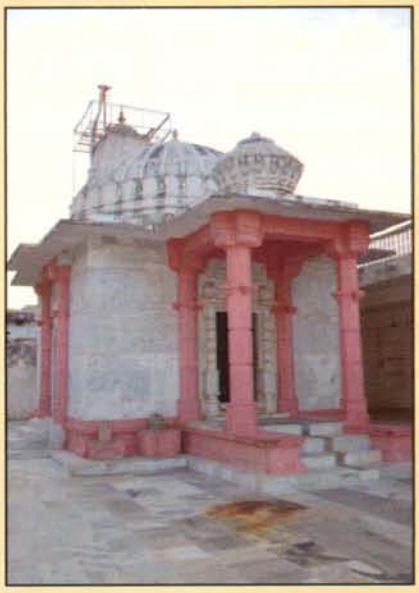

यह शिखरबंद विशाल मंदिर जिला मुख्यालय से 70 व तहसील मुख्यालय से 16 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में राजमहल के पास में स्थित है। यह मंदिर 900 वर्ष प्राचीन बतलाया है। ग्राम के स्थापित होने के साथ साथ मंदिर भी निर्मित हुआ। पूर्व में यह मंदिर ईटों का संवत् 1169 आषाढ़ सुदि 2 का निर्मित है और प्रतिष्ठा सं. 1197 में सम्पन्न हुई। अंतिम जिर्णोद्धार 15 वर्ष पूर्व श्री जितेन्द्रसूरि जी की निश्रा में सम्पन्न हुआ। यह प्रथम श्रेणी का ठिकाना रहा है। यहाँ के शासक राठौड़ कहलाते थे । यह महल श्री जयमल ने बनाया। श्री जयमल राठौड़ मेवाड़ की सेना का नेतृत्व करते हुए अकबर की सेना का सामना वीरता से करते हुए सन् 1568 में चित्तौड़ में शहीद हुए । इनकी प्रतिमा नगर के बस स्टेण्ड पर लगी हुई है । इसके पागबंद खड़क्याकण था। बीच में मुगलों के आक्रमण से टूटता रहा, जीर्णोद्धार भी होते रहे, कोई उल्लेख नहीं मिलता।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 15'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1865 माघ सुदि 2 का लेख है।

2) श्री चन्द्रप्रभ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 19'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1860 वै. सुदि 3 का लेख है।

3) श्री सम्भवनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 19'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1860 वै. सुदि 3 का लेख है। नीचे पेन्ट से चन्द्रप्रभ भगवान का नाम लिखा है ।

4) श्री चन्द्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1860 वै. सुदि 3 का लेख है।

5) श्री चन्द्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 14'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1860 वै. सुदि 3 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री शान्तिनाथ भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2042 का लेख है।

2–3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 2'', 2'' ऊँची प्रतिमा है।

4) श्री जिनेश्वर भगवान की 2'' ऊँची प्रतिमा है।

5) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 6'' का है। इस पर राजा धनपतसिंह का लेख है।

6) श्री अष्ठमंगल यंत्र 6''X3'' का है। इस पर वीर सं. 2519 का लेख है।

7) श्री जिनेश्वर भगवान की 8'' ऊची प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट अपठनीय लेख है।

बाहर अलियों में :

1) श्री गौमुख यक्ष की श्वेत पाषाण की 14'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री चक्रेश्वरी देवी श्याम पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

सभा मण्डप में दाहिनी ओर :

1) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री चन्द्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1860 का लेख है।

3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर भट्टारक सदा सुख द्वारा प्रतिष्ठित होने का लेख है।

4) श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर भट्टारक सदा सुख का वै. सुदि 3 का लेख है।

5) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1860 का लेख है।

बाई ओर :

1) श्री अधिष्ठायक देव की 12'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1860 का लेख है।

3) श्री पार्श्वनाथ (शंखेश्वर) श्वेत पाषाण की 21'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1860 का लेख है।

वन्द्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 19'' व 13'' ऊँची प्रतिमा है। इन पर सं. ० का लेख है।

सुपार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची उत्थापित प्रतिमा है। मंदिर में एक गर्भगृह है। कहा जाता है कि मुगल काल में आक्रमण होने के कारण सभी प्रतिमाओं को सुरक्षित स्थान पर विराजमान कराई।

इस गर्भगृह में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1) श्री जिनेश्वर (शान्तिनाथ) भगवान की हरे पाषाण की 9'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

2) श्री सुमतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण 12'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

3) श्री जिनेश्वर भगवान की पिंक पाषाण 13'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

4) श्री जिनेश्वर भगवान की हरे पाषाण की 11'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

5) श्री पार्श्वनाथ भगवान की नीला पाषाण की 7'' ऊँची प्रतिमा है।

6) श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

7) श्री जिनेश्वर भगवान की (परिकर सहित) श्वेत पाषाण की 21'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

8) श्री ऋषभदेव भगवान की (परिकर सहित) श्वेत पाषाण की 31'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर सं. 1501 ज्येष्ठ वदि 14 का लेख है।

9) दो हाथी श्वेत पाषाण के जिनमें से एक सूण्ड टूटी हुई है।

बाहर – ऊपर :

1) श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 25'' ऊँची प्राचीन खण्डित प्रतिमा है। इस पर सं. 1799 का लेख है।

2) श्री कुन्थुनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 27'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

मंदिर की 10 बीघा जमीन है जो पुजारी के पास है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा वैशाख सुदि 13 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की व्यवस्था जैन समाज की ओर से श्री लादूलाल जी मलावत देखते है।

सम्पर्क सूत्र - 80585 22873, 01480-225806

नोट : बरामदा में एक तहखाना (भूतल) बना है जिसमें प्राचीन खण्डित प्रतिमाएं है जो मुगलों के समय में आक्रमण होने के कारण प्रतिमाएं छिपाई जाती रही होगी ।

ये चित्र पूज्य श्री बृजेशकुमार जी की कृतज्ञता में बाल गोपाल स्तुति, कांकरोली से सम्बन्धित है।

क्रोध प्रेम का नाश करता है,
मान विनय का नाश करता है,
माया मित्रता का नाश करता है,
लोभ सर्वनाश करता है

श्री संभवनाथ भगवान का मंदिर पाटण-311302, तहसील आसींद

यह घुमटबंद मंदिर है। यह मंदिर जिला मुख्यालय से 105 व तहसील मुख्यालय से 22 किलोमीटर दूर है। यह मंदिर बहुत प्राचीन है। पूर्व में यह यति जी का मंदिर था। उल्लेखानुसार यह पूर्व में आदिनाथ भगवान का मंदिर रहा है और इसका निर्माण सं. 1500 के लगभग हुआ।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री संभवनाथ भगवान की (मूलनायका) श्वेत पाषाण की 12'' की ऊँची उत्थापित प्रतिमा है। इस पर सं. 1963 चैत्र सुदि 13 का लेख है।
2) श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 7'' ऊँची उत्थापित प्रतिमा है।
3) श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 6'' ऊँची उत्थापित प्रतिमा है।

श्री जिनेश्वर भगवान की पाषाण की 3'' ऊँची उत्थापित प्राचीन है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 2'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।
2) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 5'' का है। इस पर सं. 2054 माघ सुदि 13 का लेख है।

आलिए में :

अधिष्ठायक देव की चार मूर्तियां हैं।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है।

इस मंदिर की व्यवस्था पूर्व में यति द्वारा की जाती थी, कुछ विवाद होने से यति से जैन समाज ने व्यवस्था अपने अधिकार में ली व यति का ग्राम छोड़कर जाने को बाध्य किया।

समाज की ओर से श्री सोहनलाल जी नाहर एवं श्री शांतिलाल जी नाहर (मो. 9680920867) व्यवस्था देखते है। सम्पर्क सूत्र : 01480-226104, 94603 54521

श्री अजितनाथ भगवान का मंदिर शंभूगढ़-311302, तहसील आसींद

यह घूमटबंद विशाल मंदिर जिला मुख्यालय से 47 व तहसील मुख्यालय से 17 किलोमीटर दूर ग्राम के एक किनारे पर स्थित है। मंदिर विशाल, ऊँचे स्तर, किला स्वरूप बना हुआ है। ग्राम सं. 1921 में बसा, उसके साथ ही मंदिर का निर्माण हुआ। ग्राम व मंदिर को हिम्मत सागर जी यति द्वारा बसाया व बनाया गया। पूर्व में मंदिर की व्यवस्था उदयपुर महाराणा के द्वारा की जाती थी, बाद में मंदिर जीर्ण-शीर्ण की अवस्था के हो जाने सं. 2056 में श्री जितेन्द्रसूरि जी म.सा. व यति श्री भगवती सागर जी के सहयोग से जिर्णोद्धार कराया गया।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री अजितनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 35'' की ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।
2) श्री शान्तिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 12'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2050 का लेख है।
3) श्री सुमतिनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 12'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2050 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री सम्भवनाथ भगवान की 10'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1570 का लेख है।
2) श्री शान्तिनाथ भगवान की 6'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1663 का लेख है।
3) श्री सुमतिनाथ भगवान 6'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1525 का लेख है।
4–13) इन प्रतिमाओं के अतिरिक्त विभिन्न नाप की दस प्रतिमाएं है लेकिन यति जी की परिचित ने विवरण लेने से मना करने से, कार्य नहीं किया।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा संवत्सरी पर चढ़ाई जाती है तथा यह भी बताया कि भादवा सुदि प्रतिपदा (भगवान के जन्मवाचन के दिन चढ़ाई जाती है)

मंदिर की व्यवस्था श्री भगवती सागर जी यति द्वारा की जाती है।

सम्पर्क : 01480-223758

श्री महावीर भगवान का मंदिर इनबरकिया-311302, तहसील आसींद

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 55 व तहसील मुख्यालय से 12 किलोमीटर ग्राम में प्रवेश करते ही दांई ओर स्थित है। यह नूतन मंदिर है मंदिर के लिए भूमि क्रय करके निर्माण कराया और प्रतिष्ठा दि. 10-12-2010 को कराई। इस मंदिर की भूमि जब पड़त पड़ी थी तब मंदिर के सामने ही एक जाट परिवार रहता है । उस जाट कोई चार वर्ष पूर्व स्वप्न में देखा कि इस रास्ते पर साधु महाराजा निकल रहे हैं, उन्होंने कहा कि यह जमीन किसकी है तो उत्तर दिया कि भगवान की है (मेरी है) तो यहाँ भगवान का मंदिर बनेगा । दूसरे दिन महता परिवार को यह बात बतलाई, उन्होंने हंसी में टाल दिया । संयोग ऐसा बना कि महता परिवार ने भूमि क्रय कर मंदिर बनाया।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री महावीर भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 23" की ऊँची प्रतिमा है।
2) श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 19" की ऊँची प्रतिमा है।
3) श्री मुनिसुव्रत भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 19" की ऊँची प्रतिमा है।
4) श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 19" ऊँची प्रतिमा है।
5) श्री पार्श्वनाथ (शंखेश्वर) भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 19" ऊँची प्रतिमा है।

इन पाँचों प्रतिमा की प्रतिष्ठा संवत् 2067 मिगसर सुदि 5 (दिनांक 10.12.10) को प्रतिष्ठा पं. श्री निपुणरत्न विजय जी मं. सा. की निश्रा में सम्पन्न हुई।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री शन्तिनाथ भगवान की 12'' ऊँची चतुविशंति प्रतिमा है। इस पर सं. 2067 माघ कृष्णा 13 का लेख है।

2) जिनेश्वर (पद्प्रभ) की 8'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 2044 का लेख है।

3) श्री शान्तिनाथ भगवान 9'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 2067 माघ कृ. 13 का लेख है।

4–5) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 9'' व 6'' का है। इस पर सं. 2067 का लेख है।

6) श्री सिद्धचक्र गोलाकार 4'' का है। इस पर सं. 2025 माघ सुदि 13 का लेख है।

7) अष्ठमंगल यंत्र 6''X3.5'' का है। इस पर सं. 2066 का लेख है।

दोनों ओर आलियों में :

1) श्री गौतम स्वामी की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण का 12'' ऊँची प्रतिमा है।

इन दोनों प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा भी 10.12.10 को सम्पन्न हुई।

सभा मण्डप के दोनों ओर आलियों में :

1) श्री माणिभद्र की श्वेत पाषाण की (हाथी पर सवार) 13'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री नाकोड़ा भैरव पीत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है।

3) श्री मातंग यक्ष की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।

4) श्री सिद्धयिका देवी की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा मिगसर सुदि 5 को चढ़ाई जाती है।

समाज की ओर से श्री थानसिंह जी महता व श्री महावीर जी महता व्यवस्था देखते है।

सम्पर्क सूत्र - 9982174813, 9667911149

श्री ऋषभदेव भगवान का मंदिर कवल्यास-311302, तहसील आसींद

यह पाटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 40 व तहसील मुख्यालय से 35 किलोमीटर दूर है। यह मंदिर करीब 150 वर्ष प्राचीन बतलाया गया है। यह तृतीय श्रेणी का ठिकाना है। इसके शासक सांगावत कहलाते थे।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 12'' की ऊँची प्रतिमा है। कोई लेख व लांछन नहीं है। साधारण बोलचाल की भाषा में ऋषभदेव भगवान की प्रतिमा कहते है।
2) श्री पद्मप्रभ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 8'' की ऊँची प्रतिमा है।
3) श्री शान्तिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 14'' की ऊँची उत्थापित प्रतिमा है।
4) श्री पद्मप्रभ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 8'' ऊँची प्रतिमा है।
5) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्याम पाषाण की 4'' ऊँची प्रतिमा है।

ऐसी भी जानकारी मिली कि मंदिर की भूमि भी है। जांच करने की आवश्यता है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है।

मंदिर की व्यवस्था जैन समाज की ओर से श्री लक्ष्मीलाल जी डुंगरवाल करते है।

सम्पर्क सूत्र 01480 - 228191

श्री महावीर भगवान का मंदिर मोतीपुर-311302, तहसील आसींद

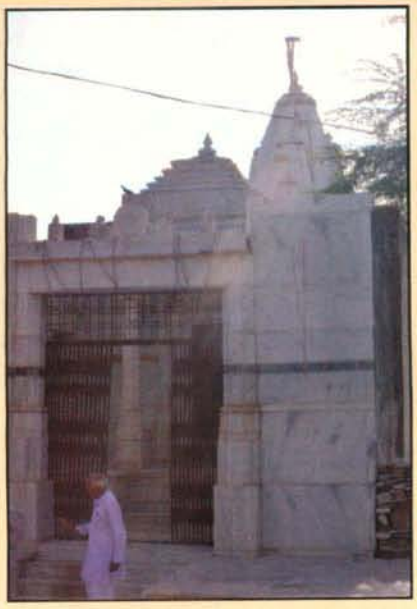

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 55 व तहसील मुख्यालय से 18 किलोमीटर दूर है। यह मंदिर 100 वर्ष से अधिक प्राचीन है। पूर्व के ग्राम की बस्ती ग्राम में प्रवेश करते ही स्थापित थी। वहाँ पर प्राचीन मंदिर था। जिसमें श्री केशरिया जी की प्रतिमा स्थापित थी। खण्डहर मंदिर का ढांचा आज भी विद्यमान है। मंदिर वहाँ पर बनाने की योजना थी लेकिन मनुष्यों में वैचारिक मतभेद के कारण निर्माण नहीं कराया गया।

श्री रामपाल जी स्वर्णकार निवासी कवल्यास जो पहले इसी ग्राम (मोतीपुर) के रहने वाले थे। उन्होंने अपने मकान की जमीन मंदिर को भेंट में प्रदान की और मंदिर का निर्माण करा 23.01.2006 को आचार्य श्री अशोक रत्न सूरि जी म. सा. की निश्रा में प्रतिष्ठा कराई।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री महावीर भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 27'' की ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 9'' की ऊँची प्रतिमा है।

3) श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 9'' की ऊँची प्रतिमा है।

दोनों ओर आलियों में :

1) श्री मातंग यक्ष की श्वेत पाषाण की 12'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री सिद्धायिका देवी की श्वेत पाषाण का 12'' ऊँची प्रतिमा है।

बाहर :

1) श्री केशरिया जी की श्याम पाषाण की 4'' ऊँची प्रतिमा है। यह प्रतिमा पूर्व में प्राचीन मंदिर में स्थापित थी।

2) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 14' ऊँची प्रतिमा है।

खण्डहर मंदिर एक दृष्टि में

पूर्व में स्थापित मंदिर खण्डहर हो गया व बस्ती भी अन्यत्र (समीप ही) स्थानान्तरित हो जाने से नूतन मंदिर का निर्माण कराया ।

सभी प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा 23.1.2006 में सम्पन्न हुई।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा माघ वदि 8 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की व्यवस्था जैन समाज द्वारा की जाती है।

समाज की ओर से श्री शान्तिलाल जी बोहरा, मो. 9785566292

श्री भंवरलाल जी बोहरा, मो. 8058285111

संसार में न कोई तुम्हारा मित्र है और न शत्रु,
तुम्हारें अपने विचार ही शत्रु और
मित्र बनाने के लिए उत्तरदायी है।

श्री धर्मनाथ भगवान का मंदिर जयनगर-311302 तहसील आसींद

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 73 व तहसील मुख्यालय से 17 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर 400 वर्ष प्राचीन बतलाया गया है। पूर्व में यह यति जी का निवास स्थान तथा छात्रों को पढ़ाने का कार्य करते थे। पूर्व में यह घर देरासर था जिसमें श्री शान्तिनाथ भगवान विराजित थे । उल्लेखानुसार यह मंदिर सं. 1775 के लगभग निर्मित है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री धर्मनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 19'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2050 मिगसर वदि 3 का लेख है।

2) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 4'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री सुमतिनाथ भगवान की 7'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1521 माघ सुदि 6 का लेख है।

2) श्री आदिनाथ भगवान की 6'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1521 माघ सुदि 6 का लेख है।

3) श्री पार्श्वनाथ भगवान 3'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1623 का लेख है।

4) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 3'' ऊँची का है। इस पर अस्पष्ट लेख है।

बाहर :

1) श्री माणिभद्र देव जी श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री पद्मावती देवी श्री श्वेत पाषाण 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख है।

मंदिर की 2.5 बीघा जमीन समाज के सदस्यों के पास है। पास में उपाश्रय भी है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा मगसर सुदि प्रतिपदा को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की व्यवस्था समाज की ओर से श्री चांदमल जी रांका देखते है। दैनिक कार्य श्री शान्तिलाल जी रांका द्वारा देखा जाता है। सम्पर्क सूत्र : मो. 94145 74171

यह चित्र सन् 1550–1570 का है जो पंचकामना विश्वविद्यालय मे हैं। इसमें राजा अमरशक्ति, उसके पुत्र व मंत्री है। इसमें राजपूज शैली की वेशभूषा, मछली जैसी आँखों को कलात्मक दृष्टि से दर्शाया गया है।

धन और व्यवसाय में इतने भी व्यस्त मत बनिये कि, स्वास्थ्य, परिवार और अपने कर्तव्यों पर ध्यान न दे पाएँ।

श्री वासुपूज्य भगवान का मंदिर आकड़ सादा-311302 तहसील आसींद

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 70 व तहसील मुख्यालय से 16 किलोमीटर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर करीब 200 वर्ष प्राचीन बतलाया गया है। इसकी पुष्टि प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख से होती है। जीर्णोद्धार सं. 2065 में श्री निपुणरत्न विजय जी म. सा. की निश्रा में सम्पन्न हुआ। यह पूर्व में श्री चन्द्रप्रभ भगवान का मंदिर था।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री वासुपूज्य भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 19'' की ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर सं. 1868 मिगसर सुदि 3 का लेख है।
2) श्री चन्द्रप्रभ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 9'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1868 मिगसर सुदि 3 का लेख है।
3) श्री नेमिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 9'' की ऊँची प्रतिमा है।

नीचे की वेदी पर :

श्री चन्द्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1868 मिगसर सुदि 3 का लेख है।

उक्त प्रतिमाओं में से एक प्रतिमा नई है, शेष प्राचीन है।

बाहर - आलियों में :

1) श्री चण्डादेवी की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। (बाईं ओर)
2) श्री कुमार यक्ष की श्वेत पाषाण का 13'' ऊँची प्रतिमा है। (दाईं ओर)

इन दोनों प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा 10.12.10 को सम्पन्न हुई।

सभा मण्डप में :

1) श्री गौतम स्वामी की श्वेत पाषाण की 5'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री माणिभद्र की प्राचीन प्रतिमा स्थापित है।

मंदिर की 5 बीघा जमीन है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा फाल्गुन कृष्णा 10 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की व्यवस्था जैन समाज की ओर से की जाती है और समाज की ओर से श्री घेवरचंद जी संचेती व राजेन्द्र जी बाबेल व्यवस्था को देखते है।मो. 9772185841

यह चित्र बाल गोपाल स्तुति, कांकरोली के पूज्य श्री बृजेश कुमार जी द्वारा संग्रहित है जो 40-50 वर्ष की पुस्तक में लकड़ी व केनवास के पट्टों में पाए जाते हैं। यह चित्र 18 वीं व 19 वीं शताब्दी का है

**जैसे व्यवहार की तुम दूसरों से अपेक्षा रखते हो,
वैसा ही व्यवहार तुम दूसरों के प्रति करों।**

श्री नेमीनाथ भगवान का मंदिर दोलतगढ़-311301, तहसील आसींद

यह घूमटबंद भव्य मंदिर जिला मुख्यालय से 55 व तहसील मुख्यालय से 14 किलोमीटर दूर स्थित है। यह मंदिर बहुत प्राचीन है। पूर्व में इस मंदिर परिसर में यति जी का निवास स्थान था। कमरे आदि बने हुए है। यह मंदिर लांछण के आधार पर (बकरे) कुंथुनाथ भगवान, प्रचलन के आधार पर ऋषभदेव व लेख के आधार पर श्री नेमिनाथ भगवान का मंदिर है। उल्लेखानुसार यह मंदिर लगभग सं. 1900 में श्री किशनलाल जी नवलखा द्वारा बनाया गया है। यह तृतीय श्रेणी का ठिकाना रहा है। यहाँ के शासक चुण्डावत कहलाते थे।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री नेमिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1986 ज्येष्ठ वदि 3 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री जिनेश्वर भगवान की 6'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1593 वै. सु. 5 का लेख है।
2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 5'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर वि. सं. 1914 (अस्पस्ट) वै. सु. 6 का लेख है।
3) श्री मुनिसुव्रत भगवान की 6'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1519 आषाढ़ वदि 5 का लेख है।
4) श्री सिद्धचक्र यंत्र ताम्बे का गोलाकार 4.5'' का है।
6) श्री सिद्धचक्र गोलाकार 4'' का है।

सभा मण्डप में प्राचीन चित्रकारी है सम्भवतया प्राचीन मंदिर रहा है। ऐसी जानकारी मिली है की मंदिर की जमीन भी है, जानकारी करना चाहिए। जीर्णशीर्ण है, जिर्णोद्धार की आवश्यकता है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा भादवा सुदि 5 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख स्थानीय तेरापंथ श्वेताम्बर सभा द्वारा श्री बाबूलाल जी नवलखा द्वारा की जाती है। सम्पर्क सूत्र : मो. 9982651408

श्री जिनेश्वर भगवान का मंदिर तिलोली-311301, तहसील आसींद

यह घूमटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 60 व तहसील मुख्यालय से 18 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर करीब 500 वर्ष प्राचीन बताया गया है। इस मंदिर का निर्माण सं. 1930 में होने का उल्लेख है। यह तृतीय श्रेणी का ठिकाना रहा है। यहाँ के शासक सांगावत कहलाते थे।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

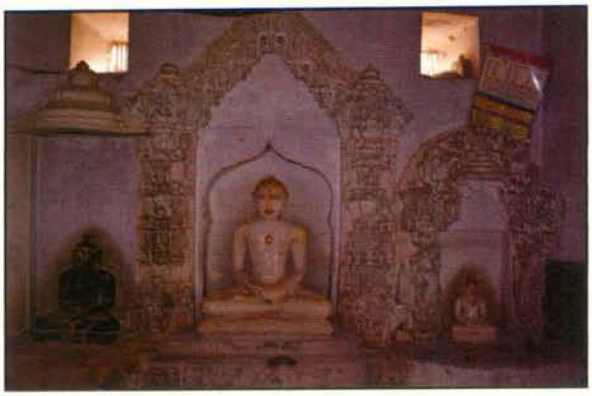

1) श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 25'' की ऊँची प्रतिमा है। प्रतिमा का परिकर (तोरणद्वार) प्राचीन है, कई स्थानों से खण्डित है। प्रतिमा भी प्राचीन है व खनन से प्राप्त हुई है।
2) श्री ऋषभदेव भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्याम पाषाण की 9'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1587 का लेख है।
3) श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 9'' की ऊँची उत्थापित प्रतिमा है। इस पर सं. 1252 का लेख है। इस पर तोरण द्वार है।

ये तीनों ही प्रतिमाएं खनन से प्राप्त हुई।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा भादवा सुदि 5 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख जैन समाज द्वारा श्री पारसमल जी बापना द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र - मो. 9587564710

बाहर :

श्री माणिभद्र देव की श्याम पाषाण की प्रतिमा है ऐसा सुना जाता है कि प्राचीन काल में यति द्वारा मंदिर उडाकर ला रहे थे, यहाँ किसी कारण से गिरा उसके एक ही प्रकार के पत्थर गिरे जो अभी भी मकानों के बाहर देखे जा सकते है। जीर्णोद्धार की अति आवश्यकता है।

श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर लाछुड़ा-311 301, तहसील आसींद

यह घूमटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 46 व तहसील मुख्यालय से 20 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर करीब 200 वर्ष प्राचीन बताया गया है। सभामण्डप नया बना है। मूल मंदिर प्राचीन है। इस मंदिर का निर्माण सं. 1875 मे होने का उल्लेख है। यह तृतीय श्रेणी का ठिकाना रहा है। इसके शासक राठौड़ कहलाते थे।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 17'' की ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 9'' की ऊँची प्रतिमा है।

3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्याम पाषाण की 10'' की ऊँची प्रतिमा है।

4) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 6'' ऊँची प्रतिमा है।

5) श्री पार्श्वनाथ (शंखेश्वर) भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। ये सभी प्रतिमाएं उत्थापित है।

इनमें पाँचों प्रतिमा की प्रतिष्ठा संवत् 2067 मिगसर सुदि 5 (दिनांक 10.12.10) को पं. श्री निपुणरत्न विजय जी म. सा. श्री निश्रा में सम्पन्न हुई।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा भादवा सुदि 5 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख जैन श्वेताम्बर तेरापंथ समाज द्वारा श्री अमरचंद जी चोरड़िया द्वारा की जाती है। सम्पर्क सूत्र - 97835 54159

श्री विमलनाथ भगवान का मंदिर बरसनी-311302, तहसील आसींद

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 65 व तहसील मुख्यालय से 16 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर करीब 450 वर्ष प्राचीन है। इसकी पुष्टि प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख के आधार पर भी होती है। समय के अनुसार जीर्ण-शीर्ण हो जाने से जिर्णोद्धार सं. 2055 में सम्पन्न हुआ। उल्लेखानुसार यह पूर्व में पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर था। निर्माण सं. 1800 के लगभग में हुआ था।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री विमलनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 15'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. (2050) 2060 का लेख है।

2) श्री शीतलनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 10'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. (2050) 2060 का लेख है।

3) श्री शान्तिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 10'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2050 का लेख है।

4) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 7'' ऊँची उत्थापित प्रतिमा है। इस पर सं. 1632 का लेख है। पूर्व में यह प्रतिमा ही विराजमान थी।

बाहर आलियों में :

1) श्री माणिभद्र देव की श्याम पाषाण 9'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री पद्मावती देवी की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

तीन मंगल मूर्तियाँ प्रतिष्ठित है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा चैत्र कृष्णा 11 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की 5 बीघा जमीन है। जो समाज के पास ही है। इससे प्राप्त आय से मंदिर की व्यवस्था की जाती है।

मंदिर की व्यवस्था श्री उमरावसिंह जी कोठारी द्वारा की जाती है। सम्पर्क सूत्र - 95710 68880

श्री ऋषभदेव भगवान का मंदिर अंटाली-311302 तहसील आसींद

यह शिखरबंद विशाल मंदिर जिला मुख्यालय से 30 व तहसील मुख्यालय से 20 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर करीब 900 वर्ष प्राचीन बताया गया है। इसकी पुष्टि स्थापित प्रतिमा से भी होती है मंदिर जीर्णशीर्ण होने की अवस्था में सं. 2007 में जीर्णोद्धार हुआ। उल्लेखानुसार इस मंदिर का निर्माण मानाजी बाबेल द्वारा सं. 1500 के लगभग कराया गया। यह तृतीय श्रेणी का ठिकाना रहा है। इसके शासक राठौड़ कहलाते थे।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री ऋषभदेव भगवान की (मूलनायक) श्याम पाषाण की 29" की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1170 का लेख है।

2) श्री मुनिसुव्रत भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 27" की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1119 का लेख है।

3) श्री चन्द्रप्रभ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 25" की ऊँची प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट व अपठनीय लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री सम्भवनाथ भगवान की 9" ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 2051 का लेख है।

2) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 4" का है। इस पर सं. 2051 का लेख है।

बाहर :

1) श्री शासन देवी की श्वेत पाषाण की 4.8" ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 38" ऊँची प्रतिमा है।

सभा मण्डप में दाहिनी ओर :

1) श्री शान्तिनाथ भगवान की 37'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर केवल 11.....पढ़ने मे आता है।

2) श्री जिनेश्वर भगवान की 35'' (परिकर सहित) ऊँची प्रतिमा है।

बाई ओर :

1) श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 29'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 23'' ऊँची खड़ी चतुर्विशंति प्रतिमा है।

3) श्री जिनेश्वर भगवान (स्तम्भ पर) की श्याम पाषाण की 21'' ऊँची प्रतिमा है।

4) श्री अधिष्ठायक देव की चार मूर्तियाँ स्थापित है।

प्राचीन स्तम्भ व तोरणद्वार बने हुए है। मंदिर की 4 बीघा जमीन है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा अक्षय तृतीय को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की व्यवस्था स्थानीय जैन समाज द्वारा दी जाती है।

समाज की ओर से श्री घेवरचन्द जी बाबेल द्वारा व्यवस्था की जाती है।

सम्पर्क सूत्र - 01480 226612, 9982562128

जितनी बार हमारा पतन हो,
उतनी बार उठने में गौरव है।

श्री वासुपूज्य का भगवान का मंदिर अमेसर-311302, तहसील आसींद

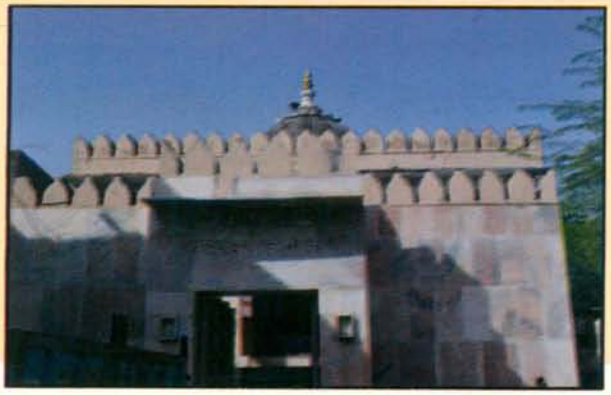

यह घूमटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 55 व तहसील मुख्यालय से 13 किलोमीटर दूर है। यह मंदिर 100 वर्ष प्राचीन बतलाया जाता है। जीर्णोद्धार 10 वर्ष पहले कराया गया था। उल्लेखानुसार पूर्व में यह मंदिर श्री आदिनाथ भगवान का लगभग सं. 1900 का बना हुआ है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री वासुपूज्य भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 17" की ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री शान्तिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 9" की ऊँची प्रतिमा है।

3) श्री महावीर भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 9" की ऊँची प्रतिमा है।

नीचे की वेदी पर :

1) श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 12" की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1977 वै. सुदि 7 का लेख है।

उत्थापित धातु की चल प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री आदिनाथ भगवान की 8" ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 2054 माघ सुद 13 का लेख है।

2–3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 2" व 2" ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमाएं है।

4) श्री सिद्धचक्र गोलाकार 4" का है। इस पर सं. 2054 का लेख है।

बाहर सभा मण्डप में :

1) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 12'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री अधिष्ठायक (मणिभद्र देव) की 21'' ऊँची प्रतिमा है।

3) श्री पद्मावती देवी की श्याम पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। यह प्रतिमा सं. 2055 की प्रतिष्ठित है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा चैत्र वदि 11 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर के नीचे दुकान तथा नोहरा है।

मंदिर की व्यवस्था स्थानीय जैन समाज की ओर से श्री पारसमल जी पिपाड़ा, मो. 94686 04748 देखते है।

इसका दैनिक व्यय बोली से प्राप्त आय जो मयादि खाते में जमा है उससे प्राप्त ब्याज की आय से की जाती है ।

यह चित्र संग्रहणी सुत्र से 1694 में कोम्बे में चित्रित किया गया है।
यह चित्र भी पुण्यविजय जी म.सा. ने संग्रहित किया है।

जो दु:ख आने से पहले ही दु:ख मानता है, वह आवश्यकता से ज्यादा दु:ख उठाता है।

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर संग्रामगढ़-311302, तहसील आसींद

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 80 व तहसील मुख्यालय से 15 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर करीब 300 वर्ष प्राचीन बतलाया गया है। मंदिर लगभग खण्डहर हो गया था। इस मंदिर को श्री बछराज जी पिता जमना जी डांगी ने सं. 1845 माघ सुदि 7 को निर्माण कराया, 20 वर्ष पूर्व जीर्णोद्धार कराया गया। उल्लेखानुसार यह मंदिर करीब सं. 1700 के लगभग का बना है। यह द्वितीय श्रेणी का ठिकाना रहा है। इसके शासक सांगावत कहलाते थे।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्याम पाषाण की 25" ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है लेकिन विशाल परिकर 51" ऊँचा स्थापित है।

2) श्री पद्मप्रभ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 9" ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1889 का लेख है।

3) श्री चन्द्रप्रभ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 12" ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1889 वै. सुदि 5 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री अभिनन्दन भगवान की 9" ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2045 चैत्र शु. 3 बुधवार का लेख है।

2) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 5" का है।

3) श्री अष्ठमंगल यंत्र 6"X3.5 का है। इस पर सं. 2019 का लेख है।

बाहर सभा मण्डप में :

1) श्री अधिष्ठायक देव की प्रतिमा है। माणिभद्र देव बोला जाता है।

खण्डित प्रतिमाएं :

1) पार्श्वनाथ भगवान की हरा पाषाण की प्रतिमा है। इस पर सं. 1889 का लेख है।

2) चन्द्रप्रभ भगवान व अन्य दो प्रतिमाएं भी खण्डित है।

मंदिर के साथ प्राचीन उपाश्रय है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा वै. सुदि 5 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की व्यवस्था स्थानीय जैन समाज द्वारा देखी जाती है। जैन समाज की ओर से श्री अभिषेक कुमार चौधरी द्वारा व्यवस्था देखी जाती है। सम्पर्क सूत्र - 99827 98700

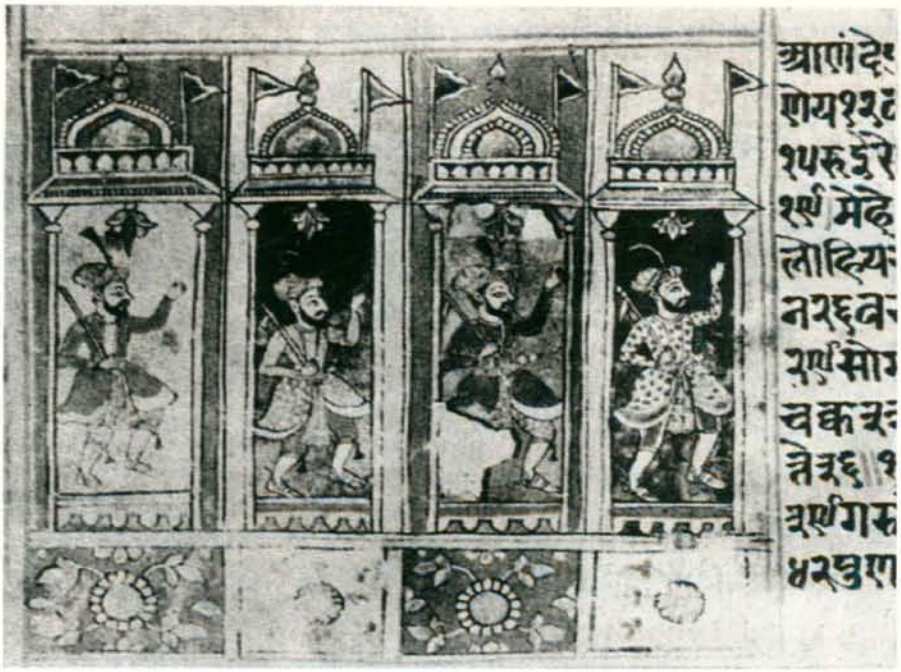

यह चित्र समग्रहणी सूत्र से जो राघवन ने सन् 1638 में बनाया है। इसमें नृत्य कला को दर्शाया गया है यह चित्र राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली में संग्रहित है।

कष्ट सहने करने का अभ्यास
जीवन की सफलता का परम सूत्र है।

श्री पार्श्वनाथ भगवान मन्दिर, हुरड़ा-311202, तहसील हुरड़ा

यह शिखरबंद मन्दिर जिला मुख्यालय से 70 किलोमीटर दूर है। रेलवे स्टेशन गुलाबपुरा से 7 किलोमीटर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मन्दिर 300 वर्ष प्राचीन बताया जाता है।

इस मन्दिर में निम्न प्रतिमा स्थापित है :

(1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 15" ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1798 का लेख है।

(2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 15" ऊंची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

(3) श्री ने ि मनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 11" ऊंची प्रतिमा है।

बाहर आलियों में :

(1) श्री अधिष्ठायक देव की मूर्ति स्थापित है।

(2) श्री पादुको जोड़ी स्थापित है। किन की है, स्पष्ट नहीं है। किनारे पर लेख से 1798 का लेख है।

सभामण्डप में :

प्राचीन चित्रकारी की हुई है। मंदिर की 18 बीघा जमीन है जो पुजारी के पास है।

वार्षिक ध्वजा भी चढ़ाई जाती है।

मंदिर की व्यवस्था श्री पार्श्वनाथ जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट द्वारा की जाती है। ट्रस्ट की ओर से श्री सुशील जी जैन देख रेख करते है। सम्पर्क : मो. 9414933253, जीणोद्धार की आवश्यकता है ।

श्री गौड़ी पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, हुरड़ा-311202, तहसील हुरड़ा

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 70 किलोमीटर दूर है। दोनों जैन मंदिर पास पास ही स्थित है। यह मंदिर भी 300 वर्ष प्राचीन बतलाया गया।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 12" ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1909 का लेख है।

(2) श्री धर्मनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 9" ऊंची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

(3) श्री धर्मनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 9" ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1868 का लेख है।

(4) श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 11" अति प्राचीन प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

आलिए में : यति श्री महाराज की पादुका स्थापित है। इस पर सं. 1954 का लेख है।

सभामण्डप से प्रवेश करते समय दाईं ओर कलात्मक झरोखा बना हुआ है। कहा जाता है कि इस स्थान पर साधुभागवंत / यति जी बिराज कर उपदेश प्रदान करते थे।

बाहर आलियों में :

(1) श्री माणिभद्र देव की श्वेत पाषाण की 8" ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री यक्षिणी देवी की श्वेत पाषाण की 8" ऊंची प्रतिमा है।

(3) श्री अधिष्ठायक देव की मूर्ति स्थापित है। मंदिर के साथ दोनों ओर कमरे बने हुए है।

मंदिर की व्यवस्था में पार्श्वनाथ श्वेताम्बर ट्रस्ट द्वारा की जाती है। लेकिन पूर्व में यति के पास था। इसलिये इसका विवाद उच्च न्यायालय में विचाराधीन है।

वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है। वर्तमान में ट्रस्ट की ओर से सुशील जी जैन व्यवस्था देखते है। सम्पर्क : 9414933253। जीर्णोद्धार की आवश्यकता है।

श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, आगुचा-311202 तहसील हुरड़ा

यह पाटबंद मंदिर है। यह जिला मुख्यालय से 70 किलोमीटर व तहसील मुख्यालय से 6 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर 750 वर्ष प्राचीन बतलाया गया। ग्राम भी प्राचीन है। मंदिर गांव के साथ ही बना बताया जाता है। प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख को देखने से 750 वर्ष प्राचीन है लेकिन यह मंदिर यति श्री छोटालाल जी द्वारा सं. 1900 के लगभग में बनाने का उल्लेख है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 12'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1830 का लेख है।

उत्थापित धातु की चल प्रतिमाएं :

(1) श्री शांतिनाथ भगवान की 7'' ऊंची पंच तीर्थी इस पर सं. 1513 का लेख है।

(2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 7'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1255 का लेख है।

(3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 2.5'' ऊंची प्रतिमा है।

मंदिर की 40 बीघा जमीन है विवादास्पद है।

वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देख रेख श्री राजेन्द्र प्रसाद पुत्र श्री भंवरलाल जी यति करते है।

सम्पर्क सूत्र :- मो. 9799109738

फतहलाल जी कांठेड - मो. 9784881100

श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, गुलाबपुरा-311202, तहसील हुरड़ा

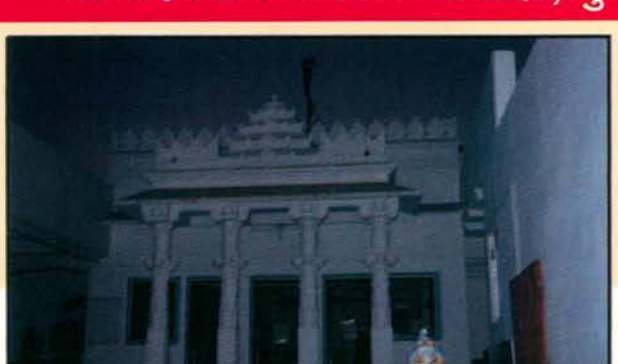

यह शिखरबंद विशाल मंदिर जिला मुख्यालय से 65 व तहसील मुख्यालय से 6 किलोमीटर दूर मुख्य सड़क के किनारे पर स्थित है। इस मंदिर का विशाल प्रवेश द्वार भव्य व कलात्मक है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 24'' व परिकर सहित 35'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2049 का. सुदि 10 शुक्रवार का लेख है।

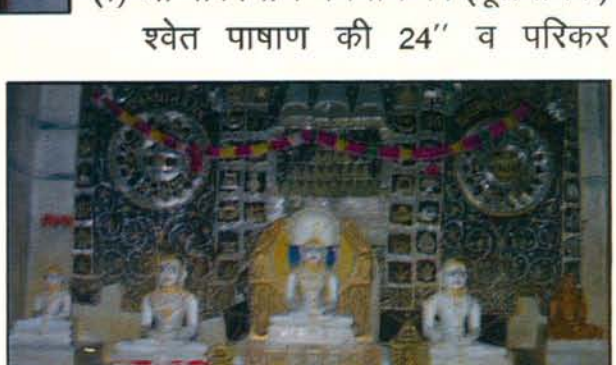

(2) श्री वासु पूज्य भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 19'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1992 वै. सु. 10 का लेख है।

(3) श्री ऋषभदेव भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 10'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1992 का लेख है।

(4) श्री नेमिनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 19'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर श्री जितेन्द्र मुनिजी द्वारा प्रतिष्ठित लेख है।

(5) श्री शीतलनाथ की (मूलनायक के बाएं) पीत पाषाण की 11'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

उत्थापित धातु की चल प्रतिमाएं व अन्य :

(1) श्री शांतिनाथ भगवान की 12'' चतुर्विंशति प्रतिमा है। इस पर सं. 2049 मि. सु. 10 का लेख है।

(2) श्री नेमिनाथ भगवान की 4'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2025 का लेख है।

(3) श्री शीतलनाथ भगवान की 8'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2049 का लेख है।

(4) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 5'' का है। इस पर सं. 2049 का लेख है।

आलिए में :

श्री माणिभद्र की मूर्ति है।

आलिए में :

13''x13'' की चौकी पर श्री जिनदत्त सूरि व श्री जिनकुशलसूरि की पादुका स्थापित है। चौकी पर सं. 1992 कार्तिक सु. 5 का लेख है। मंदिर के पीछे बड़ा नोहरा है व मंदिर की 16 दुकानें है जो किराए पर है। मंदिर की वार्षिक ध्वजा आषाढ़ वदि 10 को चढ़ाई जाती है ।

मंदिर की व्यवस्था श्री जैन श्वेताम्बर मंदिर ट्रस्ट द्वारा श्री भीमसिंह जी संचेती (9414113651)एवम् श्री मिलापचंद जी चपलोत (9413357661)करते है।

नोट : मूर्तिपूजक सम्प्रदाय – स्थानकवासी के बीच विवाद है। स्थानकवासी समाज का मंदिर की दुकानों पर कब्जा है और आय मंदिर खाते में जमा नहीं करवाते है। यह सामान्य ज्ञान है कि जिसकी दुकानें है, वहीं मालिक है । यहां मालिक भगवान है तो आय मंदिर के खाते में जमा होनी चाहिए।

मोहनीय कर्म
किसी को हसाता है किसी और को रूलाता हैं,
कभी लड़ाता है तो कभी मिलाता हैं,
कभी डराता है तो कभी भटकाता हैं,
किसी को खुश करता हैं तो किसी को नाखुश करता हैं,
यह कर्म से धर्म, गुरू और भगवान
के विषय में शंका होती हैं ।

श्री नमिनाथ भगवान का मंदिर, खेजड़ी-311202, तहसील हुरड़ा

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 85 व तहसील मुख्यालय 27 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर 950 वर्ष से अधिक प्राचीन बतलाया गया। समय-काल के अनुसार मंदिर खण्डहर हो गया था जिसको बाहरी संस्थाओं के सहयोग से जिर्णोद्धार होकर प्रतिमाओं को बिराजमान कराई। मंदिर के दोनों तरफ कमरे बने हुए है। पूर्व में यह मंदिर श्री केशरिया जी का था।

उल्लेखानुसार यह मंदिर सं. 1800 के लगभग में बना।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री नमिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 19" ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री मुनिसुव्रत भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 13" ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2049 मिगसर सुदि 10 का लेख है।

(3) श्री शांतिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 13" ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1956 का लेख है।

उत्थापित धातु की चल प्रतिमाएं :

(1) श्री कुंथुनाथ भगवान की 9" ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2049 का लेख है।

(2) श्री शांतिनाथ भगवान की 10" ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1571 का लेख है।

(3) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 3" ऊंची उत्थापित प्रतिमा है। पास में उपाश्रय बना हुआ है। मंदिर का प्राचीन शिलालेख भी है जिसका चित्र इस प्रकार है ।

वार्षिक ध्वजा पोष वदि 3 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की व्यवस्था स्थानीय जैन समाज द्वारा देखी जाती है।

समाज की ओर से श्री भँवरलाल जी बापना (9950985287) श्री पारसमल जी बाबेल (9460988621) द्वारा देखी जाती है। श्री रंगलाल जी चौधरी व्यवस्थापक का कार्य करते है ।

श्री चन्द्रप्रभ भगवान का मंदिर, टोकरवाड़-311202, तहसील हुरड़ा

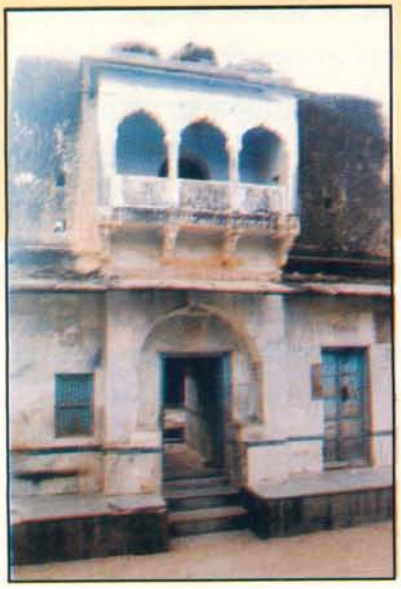

यह मंदिर जिला मुख्यालय से 50 व तहसील मुख्यालय से 20 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर 520 वर्ष प्राचीन होना बतलाते है। जीणोद्धार करा प्रतिष्ठा सं. 2022 फाल्गुन शु. 3 को मुनि श्री विशाल विजय जी म.सा. की निश्रा में सम्पन्न हुई।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री चन्द्रप्रभ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 13'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री शांतिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 9'' ऊंची प्रतिमा है।

(3) श्री सुमतिनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 9'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर श्री राजतिलक सूरि जी पढ़ने में आता है।

उत्थापित धातु की प्रतिमा :

(1) श्री अजितनाथ भगवान की 5'' ऊंची पंच तीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1510 का लेख है।

बाहर :

श्री माणिभद्र देव की श्वेत पाषाण की 1'' ऊंची प्रतिमा है। मंदिर की 5 बीघा कृषि भूमि है। इससे प्राप्त आय से मंदिर की व्यवस्था की जाती है।

वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है।

ग्राम में जैन समाज का केवल एक ही मकान है जिसके तीन भाई अन्यत्र रहते है। इस प्रकार 3 परिवार है।

इस मंदिर की व्यवस्था स्थानीय जैन समाज की ओर से श्री उग्रसिंह बोरदिया व भागचंद चौधरी द्वारा की जाती है। सम्पर्क सूत्र - 9460420350

श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर, कनकपुरा (कानिया)-311202, तहसील हुरड़ा

यह घूमटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 60 व तहसील मुख्यालय से 15 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। पूर्व में यह ग्राम अजमेर जिला में सम्मिलित था। करीब 3 वर्ष से भीलवाड़ा जिले के अधीन हुआ है। यह मंदिर करीब 500 वर्ष प्राचीन बतलाया गया है। पूर्व में शान्तिनाथ भगवान का मंदिर था। जीर्ण-शीर्ण होने के कारण सं. 2051-52 में जिर्णोद्धार हुआ और मुनिसुव्रत भगवान की प्रतिमा बिराजमान कराई। उल्लेखानुसार यह मंदिर लगभग सं. 1700 में बना बताया है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री मुनिसुव्रत भगवान (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 19'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री शांतिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 11'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1595 का लेख है। यह पूर्व में मूलनायक है ।

(3) श्री महावीर भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 10'' ऊंची प्रतिमा है।

दो प्रतिमाओं (1 व 3) की प्रतिष्ठा सं. 2051 में सम्पन्न हुई।

उत्थापित धातु की चल प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री महावीर भगवान की 8'' ऊंची पंच तीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 2050 वै.सु. 4 का लेख है।

(2) श्री पद्मावती देवी की 5'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1715 का लेख है।

(3) श्री यक्ष देव की 4.5'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1668 आ. सु. 10 का लेख है।

(4) श्री त्रिमूर्ति देव की 3'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1322 वै. सुदि 6 सोमवार का लेख है।

(5) श्री देव की 3'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

(6) श्री सिद्धचक्र गोलाकार 5'' का है। इस पर सं. 2050 का लेख है।

(7) श्री अष्ठमंगल यंत्र 6'' x 4'' का है। इस पर सं. 2034 ज्येष्ठ सु. 2 का लेख है।

(8) ताम्र पत्र 6'' x 3'' का है।

(9) जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 4'' ऊंची प्रतिमा है।

(10) अधिष्ठायक देव दो स्थापित है।

मंदिर की 1.5'' बीघा जमीन है।

वार्षिक ध्वजा वैशाख सुदि 6 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देख-रेख जैन समाज की ओर से श्री मदनलाल जी पोखरना (मो. 9680925148) द्वारा की जाती है।

दर्शनावरणीय कर्म
आँखों से देखने की शक्ति कम करता हैं,
कानों से सुनने की शक्ति कम करता हैं,
नाक से सुंघने की शक्ति कम करता हैं,
जीभ के स्वाद करने की शक्ति कम करता हैं,
चमड़ी को स्पर्शकर पहचानने की शक्ति कम करता हैं।

श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर खारी का लाम्बा-311202, तहसील हुरड़ा

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 70 किलोमीटर ग्राम के मध्य में स्थित है। गुलाबपुरा रेल्वे स्टेशन से 6 किलोमीटर दूर है। यह मंदिर 200 वर्ष प्राचीन बतलाया गया है। प्राचीन प्रतिमा जो मंदिर में स्थापित है।

इस पर सं. 1889 का लेख उत्कीर्ण है, उससे स्वतः करीब 200 वर्ष हो जाते है। उल्लेखानुसार इस मंदिर का निर्माण सं. 1900 में हुआ है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री शांतिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 18'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री संभवनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 15'' ऊंची प्रतिमा है।

(3) श्री श्रेयांसनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 15'' ऊंची है।

(4) श्री शांतिनाथ भगवान की (मूलनायक के नीचे) श्वेत पाषाण की 10'' ऊंची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर सं. 1889 का लेख है।

उत्थापित धातु की चल प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री कुथुनाथ भगवान की 8'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1436 का लेख है।

(2) श्री जिनेश्वर भगवान की 8'' ऊंची प्रतिमा हैं इस पर सं. 2038 आ. शु. 5 का लेख है।

(3) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 5'' का है। इस पर सं. 2038 का लेख है।

बाहर आलियों में :

(1) श्री गरूड़ यक्ष की श्वेत पाषाण की 11'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री निर्वाणीदेवी की श्वेत पाषाण की 11'' ऊंची है।

सभा मण्डप :

(1) श्री माणिभद्र देव की श्वेत पाषाण की 12'' ऊंची प्रतिमा है।

(2) अधिष्ठायक देव की मूर्ति स्थापित है।

मंदिर का निर्माण बाहरी संस्था से प्राप्त धन व स्थानीय समाज के सहयोग से कराया गया।

वार्षिक ध्वजा ज्येष्ठ मुदि. 2 को चढ़ाई जाती है।

पास में उपाश्रय है व बोली का फण्ड है। उससे मंदिर की व्यवस्था की जाती है।

मंदिर की व्यवस्था जैन समाज हुरड़ा द्वारा की जाती है। दैनिक कार्य श्री भँवरलाल जी कावड़िया व श्री भागचन्द जी कावड़िया देखते है। सम्पर्क सूत्र : 01483-223694

नाम कर्म

किसी को रूपवान शरीर होता हैं,
किसी को कुरूप शरीर होता हैं,
किसी को मजबूत शरीर होता हैं,
किसी को कमजोर शरीर होता हैं,
यह सब नाम-कर्म की करामात है,
कोई काला, कोई गोरा, कोई पीला, कोई लाल,
कोई जाड़ा, कोई पतला, कोई ऊँचा, कोई नीचा,
यह सब नाम-कर्म के खेल हैं।

र्वनाथ भगवान का मंदिर रूपाहेली कलां-305626, तहसील हुरड़ा

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 48 व तहसील मुख्यालय से 18 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर करीब 550 प्राचीन बतलाया गया। जिसकी पुष्टि मूलनायक श्री पार्श्वनाथ पर लेख सं. 1545 से होती है। जीर्ण-शीर्ण होने से अंतिम जीर्णोद्धार सं. 2029 में कराया। इस मंदिर का निर्माण सं. 1800 के लगभग होने का उल्लेख है। यह तृतीय श्रेणी का ठिकाना था। यहां के शासक राव जयमल राठौड़ के प्रपौत्र श्यामलाल के तीसरे पुत्र साहबसिंह के वंशज है।।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 17" ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1545 आषाढ़ सुदि 3 का लेख है।

(2) श्री शीतलनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 9" ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2029 माघ सुदि 5 का लेख है।

(3) श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 9" ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1578 का लेख है।

(4) श्री सुमतिनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 8" ऊंची है। इस पर कोई लेख नहीं है।

उत्थापित प्रतिमाएं :

(1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 4" ऊंची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

(2) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 4'' प्राचीन प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

धातु की :

(1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 3.5'' ऊंची प्रतिमा है। इस सं. 169 – (अस्पष्ट) का लेख है।

(2) श्री सुमतिनाथ भगवान की 6'' ऊंची पंच तीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1579 वै. सुदि 3 का लेख है।

(3) श्री शांतिनाथ भगवान की 7'' ऊंची पंच तीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1512 वै..... का लेख है।

(4) श्री अजितनाथ भगवान की 9'' ऊंची पंच तीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1581 जेष्ठ सुदि 15 का लेख है।

(5) श्री श्रेयांसनाथ भगवान की 7'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1533 ज्येष्ठ वदि 5 का लेख है।

(6) श्री कुंथुनाथ भगवान की 6'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 1521 का लेख है।

दोनों ओर आलियों में :

(1) श्री पार्श्व यक्ष की श्वेत पाषाण की 9'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2029 माघ सुदि 13 का लेख है।

(2) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 4'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2029 माघ सुदि 13 का लेख है।

सभा मण्डप के एक आलिए में दो अधिष्ठायक देव की मूर्ति स्थापित है।

प्राचीनता का शिलालेख

मंदिर की वार्षिक ध्वजा माघ सुदि 13 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की 4 बीघा कृषि भूमि है जो पुजारी के पास है। उपाश्रय है।

मंदिर की व्यवस्था स्थानीय जैन समाज की ओर से श्री शिवराज जी रांका द्वारा की जाती है।
सम्पर्क सूत्र :- 01483-228534

श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर कवलियास-311302, तहसील हुरड़ा

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 45 व तहसील मुख्यालय से 20 किलोमीटर ग्राम के मध्य में स्थित है। इस स्थान पर जहां वर्तमान में मंदिर है वह प्राचीन मंदिर था जो 300 वर्ष प्राचीन बतलाया गया।

जीर्ण-शीर्ण होने के कारण इस स्थान पर वि. सं. 2005 में नूतन मंदिर बनवा कर प्रतिष्ठा कराई, लेकिन ग्राम व परिवार में कुछ व्यवधान आने से मंदिर के पीछे भूमि क्रय कर जितेन्द्र मुनि जी म.सा. द्वारा प्रतिष्ठा सम्पन्न कराई।

प्राचीन प्रतिमा श्री आदिनाथ भगवान की है और साधारण बोलचाल की भाषा में महावीर भगवान का मंदिर कहलाता है। वर्तमान में श्री मुनिसुव्रत भगवान की प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री मुनिसुव्रत भगवान की (मूलनायक) श्याम पाषाण की 27" ऊंची प्रतिमा है। इस पर सं. 2061 माघ कृष्णा 9 का लेख है।

(2) श्री महावीर भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 11" ऊंची प्रतिमा है।

(3) श्री नेमिनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 11" ऊंची प्रतिमा है।

दोनों ओर के आलियों में :

(1) श्री माणिभद्र यक्ष की श्वेत पाषाण की 13" ऊंची प्रतिमा है।

(2) श्री दत्ता यक्षिणी देवी की श्वेत पाषाण की 13" ऊंची प्रतिमा है।

उत्थापित धातु की चल प्रतिमाएं व यंत्र :

(1) श्री शांतिनाथ भगवान की 8'' ऊंची पंच तीर्थी प्रतिमा हैं इस पर सं. 2061 मा. कृ. 9 का लेख है।

(2) सिद्धचक्रयंत्र गोलाकार 4'' का है। इस पर जितेन्द्रमुनि सुरिजी का लेख है।

बाहर आलियों में :

(1) श्री जिनेश्वर भगवान की 11'' ऊंची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

(2) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 13'' ऊंची है।

सभा मण्डप :

(1) श्री आदिनाथ भगवान की 15'' ऊंची (श्वेत परिकर सहित) प्राचीन प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

(2) अधिष्ठायक देव की मूर्ति स्थापित है। मंदिर के सामने उपाश्रय है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा माघ सुदि 8, 9 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की व्यवस्था स्थानीय जैन समाज की ओर से श्री अमोलकचंद जी सुराणा सम्पर्क सूत्र- 01483-236879 व श्री पारसमल जी लोढ़ा, सम्पर्क सूत्र- मो. 9799281978 द्वारा की जाती है।

अंतराय कर्म

तुम्हारे पास अच्छा भोजन हैं, फिर भी तुम खा नहीं सकते,
तुम्हारे पास अच्छे कपड़े हैं, फिर भी तुम पहन नहीं सकते,
तुम्हारे पास अच्छा घर हैं, फिर भी तुम रह नहीं सकते,
तुम्हारे पास अच्छी माँ है, फिर भी तुम उसके पास रह नहीं सकते,
इसका कारण जानते हो ?
इसका कारण अंतराय कर्म हैं।
यह कर्म तप नहीं करने देता, सेवा नहीं करने देता,
आलसी बनाता है, कंजुस बनाता है।

श्री सुमतिनाथ भगवान का मंदिर माण्डल-311403, जिला भीलवाड़ा

यह घूमटबन्द मंदिर जिला मुख्यालय से 15 किलोमीटर ग्राम के मध्य में चारभुजा जी बड़े मंदिर के पास मस्जिद के सामने स्थित है। मंदिर के पास खण्डित शिलालेख पड़ा हुआ जो खुदाई से प्राप्त हुआ उस पर सं. 1....उत्कीर्ण दिखता है तथा 5 खण्डित प्रतिमाएं भी है। इस आधार पर करीब 500 वर्ष प्राचीन मंदिर होना चाहिए। यह मंदिर देवरी में स्थापित है। इस पुराने मंदिर में नूतन प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा जितेन्द्र सूरि जी म. सा. द्वारा सम्पन्न हुई।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1) श्री सुमतिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री नेमिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है।

3) श्री महावीर भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण 15'' ऊँची प्रतिमा है।

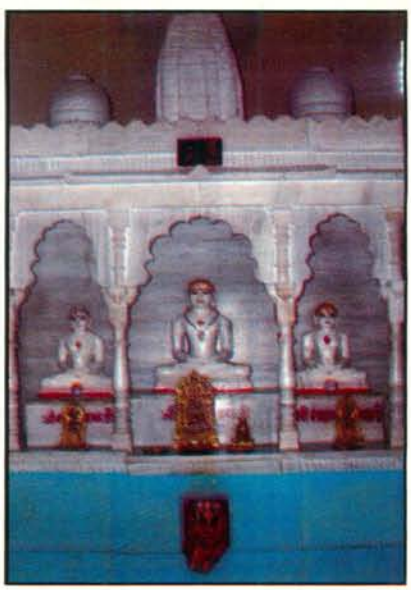

दाहिनी ओर आलिए में :

1) श्री गौतम स्वामी की श्वेत पाषाण की 8'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री पद्मावती देवी की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री महावीर भगवान की 8'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 2054 मा. सुदि 13 का लेख है।

2) श्री जिनेश्वर भगवान की 12'' ऊँची चतुर्विंशति प्रतिमा है। इस पर अचलगच्छे श्री सर्वोदय सागर जी का दिनांक 15/11/2008 का लेख है।

3) श्री धर्मनाथ भगवान 5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर जितेन्द्र सूरि जी ....द्वारा प्रतिष्ठित का लेख है।

4) श्री आदिनाथ भगवान की 8'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2054 माघ कृष्णा 13 का लेख है।

5) श्री सिद्धचक्रयंत्र गोलाकार 6'' का है । इस पर सं. 2054 वै. शु. 5 का लेख है।

6,7,8) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 4'' 4'' 4'' के है। इन पर सं. 2054 का लेख है।

9) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 5'' का है। इस पर चाँदी का पतरा चढ़ा है।

मंदिर के पास उपाश्रय के लिए जमीन है।

वार्षिक ध्वजा माघ शुक्ला 13 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की व्यवस्था श्री जैन मूर्तिपूजक संघ माण्डल की ओर से श्री पाल जी सेठिया द्वारा की जाती है। सम्पर्क सूत्र - 9413730103

श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, माण्डल (311403), तहसील माण्डल

यह पाटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 15 किलोमीटर है। यह निजी मंदिर है। यति परम्परा की अनुसार पीढ़ी दर पीढ़ी से चल रहा है।

इस मंदिर में श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर ''जीवराज जी'' अस्पष्ट लेख है।

वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है।

इस मंदिर की व्यवस्था श्री भोपालसिंह जी यति द्वारा देखी जाती है।

खेती की जमीन है।

श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर भगवानपुरा-311026, तहसील माण्डल

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 35 व तहसील मुख्यालय से 15 किलोमीटर दूर ग्राम कि मध्य में स्थित है। इस मंदिर के निर्माण के लिए श्री सम्पतलाल जी सिसोदिया ने उनकी दुकाने को गिराकर जमीन मंदिर को भेंट की तथा साथ में कुंआ, बावड़ी व 14 बीघा जमीन भी है, जो समाज के पंचो के नाम पर है। इससे प्राप्त आय मंदिर की व्यवस्था में काम आती है। यह पूर्व में आदिनाथ भगवान का मंदिर था। इसके पूर्व यह शान्तिनाथ भगवान का मंदिर होने का उल्लेख है। यह द्वितीय श्रेणी का ठिकाना रहा है। यहाँ के शासक सांगावत कहलाते थे।

इस मंदिर (उपाश्रय) में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक) श्याम पाषाण की 25'' की प्रतिमा है।
2) श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है।
3) श्री महावीर भगवान की(मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है।

इन तीनों प्रतिमाओं पर सं. 2037 का लेख है उत्कीर्ण है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान की 12'' ऊँची चतुर्विंशति प्रतिमा है। इस पर सं. 2037 माघ सुदि 5 का लेख है।

2) श्री शांतिनाथ भगवान की 7'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2037 का लेख है।

3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 2.5'' ऊँची प्रतिमा हैं।

4,5) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 6'' व 4.5'' का है। इन पर सं. 2037 का लेख है।

6) श्री देव की 3.7'' ऊँची प्रतिमा है।

बाहर आलियों में :

1) श्री धरणेन्द्र देव की श्याम पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है।

सभा मण्डप में (बाई ओर) :

1) श्री शान्तिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री चन्द्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

3) श्री महावीर भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

इन तीनों प्रतिमाओं पर कोई लेख नहीं है।

दाई ओर एक देवरी– सुंदर काँच की जड़ाई की बनी हुई उसमें श्री भोमिया की प्रतिमा विराजमान है।

निज मंदिर में काँच की सुंदर जड़ाई है तथा सभामण्डल के चार स्तम्भों पर भी काँच की जड़ाई हैं। मंदिर आकर्षक लगता है।

सभामण्डप में सभी तीर्थस्थलों के चित्रपट्ट लगे है।

वार्षिक ध्वजा ज्येष्ठ सुदि 9 को चढ़ाई जाती है।

स्थानीय स्तर पर कोई मूर्तिपूजक घर नहीं है तथा स्थानकवासी समाज के सदस्य है जिसके फलस्वरूप पूजा ढंग से नहीं होती है ।

सम्पत्ति का वर्णन ऊपर किया गया है।

मंदिर की व्यवस्था श्री पार्श्वनाथ श्वेताम्बर जैन ट्रस्ट भगवानपुरा की ओर से श्री मिश्रीलाल जी भण्डारी देखते है। सम्पर्क सूत्र - फोन 264306, 94278 4309

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर केरिया-311026, तहसील माण्डल

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 40 व तहसील मुख्यालय से 25 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर काफी प्राचीन होना बतलाया गया है। पूर्व में कच्चा मंदिर था जीर्ण-शीर्ण हो गया। कुछ भूमि का भाग श्री रोशनलाल जी सिंघवी (बाबेल) द्वारा भेंट की और कुछ भाग क्रय किया और मंदिर निर्माण करा सं. 2048 आषाढ़ वदि 6 को प्रतिष्ठा कराई। इस मंदिर का निर्माण सं. 1948 में होने का उल्लेख है । यह राणावत का ठिकाना रहा है।

इस मंदिर (उपाश्रय) में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री आदिनाथ (केशरिया जी) भगवान (मूलनायक) श्याम पाषाण की 9'' व परिकर सहित 27'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। परिकर पर सं. 2045 का लेख है। प्रतिमा पर कोई लांछण नहीं है।
2) श्री मुनिसुव्रत भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है।
3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

वेदी के दीवार के बीच पबासनदेवी की प्रतिमा है ।

आलियों में :

1) श्री गौमुख यक्ष की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है।
2) श्री चक्रेश्वरी देवी की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री वासुपूज्य भगवान की 8'' ऊँची प्रतिमा है।

2,3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 2'' व 1'' ऊँची प्रतिमा है।

4) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 6'' का है। इस पर सं. 2045 का लेख है।

5) श्री यक्ष देव की 2.5'' ऊँची प्रतिमा है।

6) श्री यक्षिणी देवी की 2.5'' ऊँची प्रतिमा है।

7) श्री अष्ठमंगल यंत्र 6''X3'' का है। इस पर सं. 2045 का लेख है।

सभा मण्डल में :

1) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2041 का लेख है।

2) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2041 का लेख है।

3) माणिभद्र देव की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

ऐसी भी जानकारी है कि प्राप्त हुई कि मंदिर की जमीन भी थी, जानकारी करने की आवश्यकता है । पर्याप्त फण्ड है उससे व्यवस्था होती है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा आषाढ़ वदि 6 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से रोशनलाल जी सिंघवी (बाबेल) द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र - 9414372424

जमीन और आसमान के बीच नाना प्रकार का दु:ख भोगने वाले प्राणी यदि धर्म का आश्रय लें, तो दु:ख और मृत्यु से बच जाते हैं। इसलिए सदा धर्म का आश्रय लेना चाहिये।

श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर बेमाली-311801, तहसील माण्डल

यह शिखरबंद मंदिर निर्माणाधीन है। यह जिला मुख्यालय से 50 व तहसील मुख्यालय से 45 किलोमीटर दूर है। इस प्राचीन मंदिर का एक शिलालेख था जो वर्तमान में नूतन निर्माणाधीन के बाहर लगाया है जिस पर वि. सं. 1043 आषाढ़ वदि का लेख उत्कीर्ण है। यह मंदिर सं. 1930 का निर्माण होने का उल्लेख है। यह द्वितीय श्रेणी का ठिकाना रहा है। इसके शासक जगावत कहलाते थे। दो छोटी श्वेत पाषाण की प्राचीन प्रतिमाएं थी।

वर्तमान में निम्न प्रतिमाएं अस्थायी रूप से स्थापित है :

1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1951 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1,2) श्री जिनेश्वर भगवान की 3.5'' व 1.5'' की ऊँची प्रतिमा है।

3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 2'' ऊँची प्रतिमा है।

4) ताम्र त्रिकोण यंत्र 5.5'' का है।

प्राचीन शिलालेख संवत् 1043 आषाढ़ वदि प्रतिपदा का मंदिर के बाहरी हिस्से पर लेख है

इस मंदिर की व्यवस्था का सम्पूर्ण कार्य श्री पार्श्वनाथ जैन मंदिर ट्रस्ट की ओर से श्री बाबूलाल जी नंगावत द्वारा की जाती है। सम्पर्क सूत्र 9414371983, 01482-236352

अब मंदिर तैयार हो गया है । प्रतिमाएं प्रतिष्ठित होकर बिराजमान की जावेगी ।

श्री अनन्तनाथ भगवान का मंदिर चाँदरास-311402, तहसील माण्डल

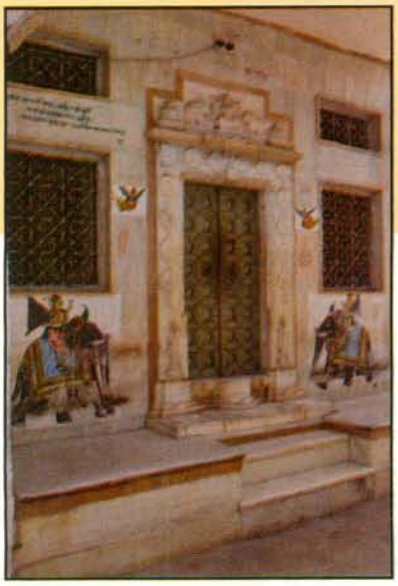

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 40 व तहसील मुख्यालय से 30 किलोमीटर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर करीब 150 वर्ष प्राचीन बतलाया गया है। खण्डहर होने के कारण सं. 2052 में नूतन मंदिर का निर्माण करा प्रतिष्ठा कराई। बाहर खुला चौक है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री अनन्तनाथ भगवान की (मूलनायका) श्याम पाषाण की 18" (परिकर सहित) ऊँची है। प्रतिमा पंचतीर्थी है। इस पर कोई लेख नहीं है।

2) श्री सम्भवनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 13" ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2049 मगसर सुदि 10 का लेख है।

3) श्री महावीर भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 13" ऊँची उत्थापित प्रतिमा है। इस पर 2051 का लेख है ।

4) श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13" ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2051 का लेख है।

दोनों ओर आलिओं में :

1) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 13" ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री चक्रेश्वरी देवी की श्याम पाषाण की 9" ऊँची प्रतिमा है। शत्रुंजय व सम्मेद शिखर जी के पट्ट बने हुए है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा ज्येष्ठ सुदि प्रतिपदा को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की व्यवस्था श्री जैन श्वेताम्बर समाज द्वारा की जाती है। समाज की ओर से श्री चांदमल जी वेलावत व श्री सुवालाल जी कोठारी (98293 20351) देखते है।

श्री विमलनाथ भगवान का मंदिर बागोर-311802, तहसील माण्डल

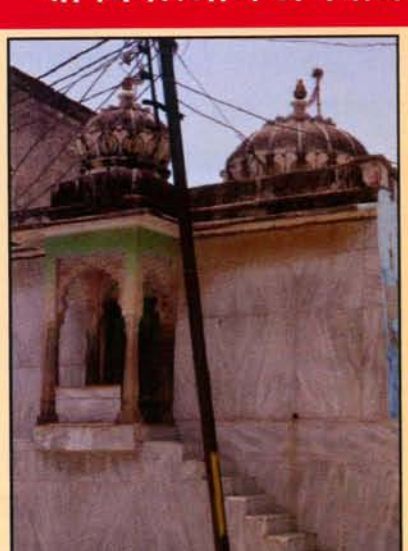

यह घुम्बटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 25 किलोमीटर व तहसील मुख्यालय से 25 किलोमीटर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर करीब 100 वर्ष प्राचीन बतलाया गया। पूर्व में श्री मल्लीनाथ भगवान का मंदिर था, प्राचीन प्रतिमाएं दयालशाह के किले पर भेज दी गई। नूतन प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा मुनि श्री मनोहर विजय जी म.सा. की निश्रा में सम्पन्न हुई। इस मंदिर का निर्माण सं. 1900 में श्री गणेशचंद्र श्री यति द्वारा कराने का उल्लेख है। यह मेवाड़ का द्वितीय श्रेणी का ठिकाना रहा है। इसके शासक महाराणा संग्रामसिंह (द्वितीय) के दूसरे पुत्र नाथसिंह के वंशज थे, इनको महाराज की उपाधि दी थी लेकिन अंत में बागोर को महाराणा ने खालसा कर दिया।

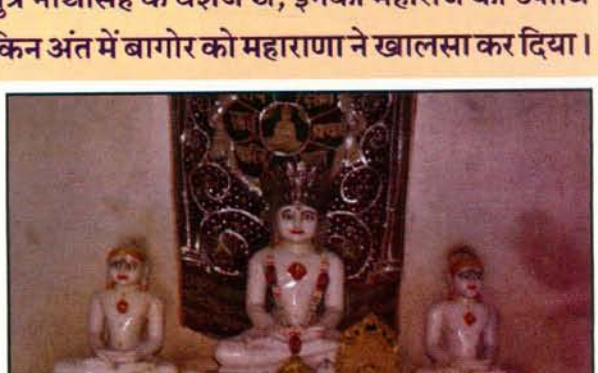

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री विमलनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 19'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2031 का लेख है।

2) श्री महावीर भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 15'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. श्री नेमिसूरिश्वर का लेख है।

3) श्री संभवनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 15'' की ऊँची प्रतिमा है।

उत्थापित धातु की चल प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री जिनेश्वर भगवान की 12'' ऊँची चतुर्विंशति प्रतिमा है। इस पर अचलगच्छीय समुदाय के मुनि ने दिनांक 15 / 11 / 08 का लेख है।

2) श्री शान्तिनाथ भगवान की 9'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 2031 का लेख है।

3) श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ स्त्रोत यंत्र 11' ऊँचा है। इस पर सं. 2047 का लेख है।

4) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 6'' का है।

5) श्री अष्ठमंगल यंत्र 6''x3.5'' का है। इस पर सं. 2031 का लेख है।

बाहर आलिओं में :

1) षष्टमुख यक्ष की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2032 कार्तिक सुदि 1 का लेख है।

2) विजया यक्षिणी की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2032 का लेख है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की व्यवस्था श्वेताम्बर संघ की ओर से श्री रोशनलाल जी सेठ (8769476110) व श्री मुकेश जी सेठ (9460967306) द्वारा की जाती है।

श्री महावीर भगवान का मंदिर, चिल्लेश्वर, तहसील माण्डल

यह शिखरबंद मंदिर राजाजी का करेड़ा से 13 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य स्थित है । यह नूतन मंदिर है । इस मंदिर की प्रतिष्ठा इसी वर्ष 25.2.2012 को पं. श्री पद्मभूषण विजय एवं प. श्री निपुणरत्नविजय जी म.सा. की निश्रा में सम्पन्न हुई ।

इस मंदिर की व्यवस्था समाज की ओर से श्री मिठालाल जी पोखरना करते है ।

सच्चा मित्र वहीं है, जो सुख में ही नहीं
दुःख में भी साथ रहे।
दुःख मिटा सकता हो तो मिटाये,
अन्यथा मित्र के साथ स्वयं
भी हँसते हुए दुःख भोगे।

श्री शान्तिनाथ भगवान का मंदिर राजाजी का करेड़ा-311804, तहसील माण्डल

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 55 किलोमीटर व तहसील मुख्यालय से 25 किलोमीटर व रायपुर से 20 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य स्थित है। यह मंदिर 650 वर्ष प्राचीन है। वर्तमान में स्थापित प्रतिमाएं ही प्रारम्भ से है जिस पर सवत् सं. 1416 का लेख उत्कीर्ण है। यह मंदिर यति द्वारा बनाया गया था। जीर्णोद्वार सं. 1800 में यति श्री जगविजय जी ने कराया।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री शान्तिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 31'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1426 ज्येष्ठ सुदि 7 का लेख है। श्री जिनवर्द्धन सुरि जी द्वारा प्रतिष्ठित है।

2) श्री अजितनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 13'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1426 का लेख है।

3) श्री महावीर भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 17'' की ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

4) श्री अनन्तनाथ भगवान (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 13'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

5) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 31'' की ऊँची खड़ी प्रतिमा दीवार पर है। इस पर सं. 1426 का लेख है तथा खतरगच्छे पढ़ने में आता है।यह प्रतिमा काउसग्ग मुद्रा में स्थित है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री शान्तिनाथ भगवान की 12'' ऊँची चतुर्विंशति प्रतिमा है। इस पर वीर सं. 2505 का लेख है।

2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 1.5'' ऊँची प्रतिमा है।

3) श्री अष्ठमंगल यंत्र 6''x3'' का है। इस पर सं. 2040 का लेख है।

श्री गरूड़ यक्ष की श्वेत पाषाण की 23'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2052 वै. सुदि 12 का लेख है।

4) श्री निर्वाणीदेवी की ओर से श्वेत पाषाण की 23'' ऊँची प्रतिमा है । इस पर सं. 2052 वै. सुद 12 का लेख है।

आलियों में :

1) एक श्वेत पाषाण की 16''x13'' चौकी पर त्रिमूर्ति प्रतिष्ठित है। इस पर सं. 1682 का लेख है।

2) श्री गणेश की पिंक पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है।

बाहर :

श्री भैरव की पिंक पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है।

प्रथम तल पर :

श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर परिकर बना हुआ है। परिकर की ऊँचाई 51'' है। इस पर सं. 1682 का लेख है।

प्रतिमा पर सं. 1883 का लेख है। गुरूमूर्ति श्वेत पाषाण की 5'' ऊँची प्रतिमा है। नेत्र नहीं है। पास में रत्न प्रभ सूरि आराधना भवन है और कमरा बना हुआ है। सामने नोहरा है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा वैशाख सुदि 12 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख श्री शान्तिनाथ जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक समिति की ओर से श्री हीरालाल जी महात्मा करते है। सम्पर्क सूत्र - 94609 69277

श्री नमिनाथ भगवान का मंदिर राजाजी का करेड़ा-311804,तहसील माण्डल

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 55 व तहसील मुख्यालय से 25 किलोमीटर व रायपुर से 20 किलोमीटर ग्राम के मध्य में स्थित है। इस ग्राम का प्राचीन नाम आका का खेड़ा था। यह मंदिर वि.सं. 1429 में मारू परिवार द्वारा निर्मित है। सम्भव है कि शान्तिनाथ भगवान के मंदिर के जिर्णोद्वार कराते हुए इसका भी जिर्णोद्वार कराया हो और बाद में पुनः सं. 2052 में जिर्णोद्वार हुआ।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री नमिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 31'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री धर्मनाथ भगवान की (मूलनायक के दांए) श्वेत पाषाण की 19'' की ऊँची प्रतिमा है।

3) श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 19'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2052 का लेख है।

4) श्री सुमतिनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 19'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2052 का लेख है।

5) श्री मुनिसुव्रत भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 19'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2049 का लेख है।

वेदी के बीच में पबासन देवी स्थापित है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री मल्लिनाथ भगवान की 9'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 2035 वै. सुदि 3 का लेख है।

2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 1.5" ऊँची प्रतिमा है।

3) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 5" का है। इस पर सं. 2040 का माघ वदि 1 (प्रतिपदा) का लेख है।

बाहर आलियों में :

1) श्री भृकुटि यक्ष की श्याम पाषाण की 15" ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2052 का लेख है।

2) श्री गंधारी यक्षिणी की श्याम पाषाण की 13" ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2052 का लेख है।

सभा मण्डप में :

दाहिनी ओर-(आलिए में)

1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 10" ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 9" ऊँची प्रतिमा है।

3) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 9" ऊँची प्रतिमा है।

बाई ओर (आलिए में)

श्री रत्नप्रभ सूरि जी की श्वेत पाषाण की 9" ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2052 का लेख है।

प्रवेश द्वार के बाहर दोनों ओर :

1) श्री माणिभद्र देव की श्वेत पाषाण की 23" ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2052 वै.शु. 12 का लेख है।

2) श्री नाकोड़ा भैरव की श्वेत पाषाण की 21" ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2052 का लेख है।

चार मंगल मूर्तियां स्थापित है।

सभा मण्डप में शत्रुंजय, सम्मेद शिखर जी, पावापुरी के चित्रपट्ट है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा वैशाख सुदि 12 को चढ़ाई जाती है।

पूर्व में यह विशाल मंदिर था, पास में कोई मकान नहीं थे। अब मकानों के बीच में है।

मंदिर की देखरेख श्री शान्तिनाथ जैन श्वेताम्बर मंदिर समिति द्वारा श्री हीरालाल महात्मा द्वारा की जाती है। सम्पर्क सूत्र - मो. 9460969277

श्री वासुपूज्य भगवान का मंदिर उमरी-311803, तहसील माण्डल

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 90 व तहसील मुख्यालय से 70 किलोमीटर व रायपुर से 7 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर 7 वर्ष ही प्राचीन है अर्थात् नूतन मंदिर है। यह एक धर देरासर है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमा स्थापित हैं :

1) श्री वासुपूज्य भगवान की पीत पाषाण की 21'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2058 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री नेमिनाथ भगवान की 8'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2045 का लेख है।

2) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 5'' का है। इसकी प्रतिष्ठा आचार्य श्री जितेन्द्रसूरि जी द्वारा कराई गई।

बाहर आलियों में :

1) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री चक्रेश्वरी देवी की श्याम पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री शंकरलाल जी चंदनमल जी दक (जैन) ने अपनी भूमि मंदिर के लिए दान दी। उस पर नीचे कमरा जहाँ साधु-संतों के विश्राम के लिए और ऊपर प्रथम तल पर मंदिर का निर्माण कराया । श्री जितेन्द्र सूरि जी म.सा. द्वारा प्रतिष्ठा कराई गई।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा चैत्र सुदि 3 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख श्री शंकरलाल जी चन्दनमल जी जैन द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र : 02904 245227, 08094414905

श्री कुंथुनाथ भगवान का मंदिर, रायपुर-311803, तहसील रायपुर

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 80 किलोमीटर व तहसील से 3 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर करीब 200 वर्ष प्राचीन होना बतलाया गया है। जीर्ण-क्षीण अवस्था में होने के कारण वि.स. 2028 वैशाख सुदि 6 को आमूलचूल परिवर्तन कर प्रतिष्ठा कराई गई।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री कुंथुनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 21" ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2028 का लेख है।
2) श्री सुमतिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 15" ऊँची प्रतिमा है।
3) श्री सुविधिनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 15" ऊँची प्रतिमा है।

उक्त तीनों प्रतिमाओं पर वि.सं. 2028 वै. सुदि 6 का लेख है।

4) श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक भगवान के दाएं) धातु की 15" ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1853 का लेख है।
5) श्री ऋषभदेव भगवान की (मूलनायक भगवान के बाएं) धातु की 13"ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1853 का लेख है।

दोनों ओर आलियों में दाहिनी ओर :

1) श्री सम्भवनाथ की धातु की 11" ऊँची प्रतिमा है। इस पर श्री लक्ष्मण सागर जी म.सा. पढ़ने में आता है।

बाई ओर :

1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की धातु की 11" ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1948 का लेख है।

2) श्री ऋषभदेव भगवान की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री नेमिनाथ भगवान की धातु की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1526 का लेख है।

2) श्री जिनेश्वर भगवान की 12'' ऊँची चतुर्विशंति प्रतिमा है।

इस पर अचल गच्छीय मुनि श्री सर्वोदय सागर जी द्वारा प्रतिष्ठित दिनांक 15.11.2008 का लेख है।

3) श्री नेमिनाथ भगवान की 12'' ऊँची की प्रतिमा है। इस पर सं. 1169 वै. सुदि 2 का लेख है।

4) श्री पार्श्वनाथ भगवान की धातु की 5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1192 का लेख है।

5) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 1.7'' ऊँची धातु की प्रतिमा है।

6) श्री गुरूमूर्ति 3.5'' ऊँची है।

7) श्री गुरूमूर्ति 2.5 ऊँची है । इस पर सं. 1614 का लेख है।

8,9) श्री गुरूमूर्ति देव मूर्ति 2.5'', 1.7 ऊँची है।

10) श्री देवी मूर्ति 2.5'' ऊँची है।

11,12) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 6'' व 4.5'' का है। इस पर वै. सं. 2498 का लेख है।

13) श्री अष्ठमंगल यंत्र 5''X 2.5'' का है। यह 2064 में भेंट में प्राप्त हुआ।

बाहर आलियों में (दोनो ओर) :

1) श्री शासन देव (गन्धर्वदेव) की श्वेत पाषाण कह 14'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री शासन देवी (बलादेवी) की श्वेत पाषाण की 14'' ऊँची प्रतिमा है।

सभा मण्डप में :

1) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

3,4) माणिभद्र की (अधिष्ठायक देव) की विभिन्न माप की स्थापित है।

5) श्री माणिभद्र की श्वेत पाषाण की 14'' ऊँची प्रतिमा है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा वैशाख सुदि 6 को चढ़ाई जाती है।

प्राचीन उपाश्रय बना हुआ है।

मंदिर की देखरेख स्थानकवासी समाज की ओर से श्री करणसिंह व नरेन्द्र कोठारी द्वारा की जाती है। सम्पर्क सूत्र : 98284 50918

श्री केसरियानाथ भगवान का मंदिर, बोराणा-311803, तहसील रायपुर

यह शिखरबंद (निर्माणाधीन) मंदिर जिला मुख्यालय से 85 किलोमीटर व तहसील मुख्यालय से 3 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर पूर्व में पहाड़ी के नीचे स्थित था। मंदिर 200 वर्ष प्राचीन है। ग्राम में कच्चा मंदिर जीर्ण-शीर्ण अवस्था में होने के कारण उसी स्थान पर नूतन मंदिर निर्माणाधीन है। वर्तमान में प्रतिमाएं उपाश्रय (स्थानक) में विराजित है। यह मंदिर सं. 1900 में निर्माण होने का उल्लेख है।

इस स्थानक में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1968 आषाढ़ सुदि 9 का लेख है।

2) श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक के बांएँ) श्याम पाषाण की 10''ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

3) श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 15''ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1968 का लेख है।

श्री पार्श्वनाथ भगवान की 4'' ऊँची धातु की (उत्थापित) प्रतिमा है।

उपाश्रय में ही :

प्रतिष्ठित व अन्जनशलाका की जाने वाली प्रतिमाएं भी है। इसका विवरण नहीं दिया जा रहा है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख ओसवाल समाज की ओर से निर्मित समिति श्री शांतिलाल जी ललवानी, श्री शांतिलाल जी नाहर व श्री भगवतीलाल जी हिंगड द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र - 01481 230535, मो. 91669 85881

श्री ऋषभदेव भगवान का मंदिर आशा होली-311801, तहसील रायपुर

यह घूमटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 50 व तहसील मुख्यालय से 20 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर 200 वर्ष प्राचीन बतलाया गया। प्राचीन मंदिर खण्डहर हो चुका था। नूतन मंदिर का निर्माण समाज द्वारा ही कराया जाकर प्राचीन प्रतिमाओं को इसी नूतन मंदिर में विराजमान कराई गई।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री ऋषभदेव भगवान की (मूलनायक) की श्याम पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।
2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 10''ऊँची प्रतिमा है।
3) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 5''ऊँची प्रतिमा है।
4) श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 6'' ऊँची खण्डित प्रतिमा है।

इसके अतिरिक्त कोई प्रतिमा नहीं है। ऐसी जानकारी है कि मंदिर की जमीन है, जानकारी करने की आवश्यकता है।

प्राचीन मंदिर का चित्र

मंदिर की वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है।

मंदिर की व्यवस्था स्थानीय तेरापंथ जैन समाज की ओर से की जाती है। समाज की ओर से श्री भेरूलाल जी सिंघवी कार्य देखते है।

सम्पर्क सूत्र - 01481 228010

श्री महावीर भगवान का मंदिर देवरिया (रायपुर), तहसील रायपुर

यह घूमटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 60 व तहसील मुख्यालय (रायपुर) से 17 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर 400 वर्ष प्राचीन है। कहा जाता है कि मंदिर में स्थापित प्रतिमाओं को सं. 1540 में बंजारा लोग घुमते हुए यहां तक लाए लेकिन पुनः जाते समय ये प्रतिमाएं वहाँ से हिली नहीं अतः यहाँ पर स्थापित कर प्रतिष्ठा कराई। यह मंदिर 1540 में निर्माण होने का उल्लेख है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री महावीर भगवान की (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1545 वैशाख सुदि 13 का लेख है।
2) श्री चन्द्रप्रभ भगवान की (मूलनायक के दाएं) की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 1545 वैशाख सुदि 13 का लेख है।
3) श्री शान्तिनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 14''ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1545 वैशाख सुदि 13 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं :

1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 7'' ऊँची प्रतिमा है। यह प्रतिमा भेंट स्वरूप प्राप्त हुई है।
2) श्री महावीर भगवान की 3'' ऊँची प्रतिमा है। यह प्रतिमा जमीन से निकली है।

बाहर आलिए में :

1) श्री अधिष्ठायक देव की 7'' ऊँची प्रतिमा है।

इस मंदिर के साथ 12 बीघा जमीन है जो पुजारी के पास है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा ज्येष्ठ वदि 6 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख ओसवाल समाज द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र - बसन्तीलाल जी व शान्तिलाल जी जैन, मो. 9828038290

श्री मल्लिनाथ भगवान का मंदिर मोखुन्दा-311801, तहसील रायपुर

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 75 व तहसील मुख्यालय से 13 किलोमीटर दूर है। मंदिर के नीचे हाल व उपाश्रय है। यह मंदिर 100 वर्ष से अधिक प्राचीन है। पूर्व का मंदिर पोखरना परिवार द्वारा निर्मित था। उसकी देखरेख भी पोखरना परिवार ही करते थे। वर्तमान में यह मंदिर समाज द्वारा निर्माण कराया गया है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री मल्लिनाथ भगवान की (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 21'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2015 माघ सुदि 10 का लेख है।

2) श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 17''ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2015 माघ सुदि 10 का लेख है।

3) श्री अनन्तनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 17''ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2015 माघ सुदि 10 का लेख है।

यह गम्भारा पूर्ण काँच का बना हुआ है।

आलियों में :

1) श्री नेमिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1915 का लेख है।

1) श्री चन्द्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2007 ज्येष्ठ सुदि 5 का लेख है।

उत्थापित चल प्रतिमाएं व यंत्र धातु की :

1) श्री जिनेश्वर भगवान की चतुर्विंशति 13'' ऊँची प्रतिमा है।
2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 7'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1152 वैशाख शु. 3 का लेख है।
3) श्री सम्भवनाथ भगवान की 6'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1525 वैशाख शु. 13 का लेख है।
4) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 1.5'' ऊँची प्रतिमा है।
5) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 5'' का है।
6) श्री अष्ठमंगल यंत्र 6.5''X3.5'' का है।

बाहर आलियों में :

1) श्री चतुर्थमुखी (कुबेर) यक्ष श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2055 माघ सुदि 10 का लेख है।
2) शासन देवी (वैरोट्या) की श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2055 का लेख है।

सभामण्डप में :

जैन तीर्थकरों के चित्र काँच में मंडित है। शत्रुंजय तीर्थ, गिरनार तीर्थ, सम्मेत शिखर तीर्थ, महावीर, पार्श्व व नेमिनाथ के भव चित्र लगे हैं।

श्री भैरव जी श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। ऊपर टाइल्स जड़ी हुई है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा वैशाख सुदि 6 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज द्वारा की जाती है। समाज की ओर से श्री सुखलाल जी पोखरना द्वारा की जाती है। सम्पर्क सूत्र - 9783549641

इसी प्रकार चिकित्सालय परिसर में श्री मल्लिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा स्थापित है। चिकित्सालय के 3 वर्ष पूर्व प्रतिष्ठा श्री गोकुलचन्द श्री हेमराज जी पोखरना ने कराई। इसकी देखरेख चिकित्सालय प्रशासन एवं कर्मचारी द्वारा की जाती है।

श्री महावीर व श्री आदिश्वर भगवान का मंदिर जड़ोल-311805, तहसील रायपुर

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 65 व तहसील मुख्यालय से 18 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह करीब 150 वर्ष प्राचीन बतलाया गया है। पूर्व में श्री ऋषभदेव भगवान का मंदिर रहा है। प्राचीन प्रतिमा प्रथम तल पर मूलनायक के रूप में विराजमान है। इस मंदिर का निर्माण सं 1930 में होने का उल्लेख है। जिणोद्धार सन् 2002 में (वि.सं. 2059) हुआ। प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। पुराना उपाश्रय खण्डहर अवस्था में है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री महावीर भगवान की (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 23'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर अचलगच्छे आचार्य श्री गुणसागर जी का लेख है।

2) श्री चन्द्रप्रभ भगवान की (मूलनायक के दाएं) की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2059 चैत्र सुदि 11 का लेख है।

3) श्री सुविधिनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2059 चैत्र सुदि 11 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री जिनेश्वर भगवान की चतुर्विंशति 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर अचलगछ का दिनांक 15/11/08 का लेख है।

2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 6'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1458 फा. वदि 10 का लेख है।

3,4,5) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 2'', 2'', 1.5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

6) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 6" का है । इस पर सं. 2010 माघ कृष्णा प्रतिपदा का लेख है ।

7) श्री अष्ठमंगल यंत्र गोलाकार 6.5X3.5" का है। इस पर कोई लेख नहीं है।

8) श्री अष्ठमंगल यंत्र 6.5X3.5" का है। इस पर सं. 2040 माघ कृष्णा प्रतिपदा का लेख है।

निज मंदिर के बाहर दोनो ओर आलियों में :

1) श्री मांतग यक्ष की श्वेत पाषाण की 11" ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री सिद्धायिका देवी की श्वेत पाषाण की 11" ऊँची प्रतिमा है।

सभा मण्डप में दाहिनी ओर :

1) श्री गौतम गणधर की श्वेत पाषाण की 11" ऊँची प्रतिमा है। इस पर 2059 का लेख है।

2) श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 15" ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2059 का लेख है।

बाई ओर :

1) श्री सुधर्मा स्वामी की श्वेत पाषाण की 11" ऊँची प्रतिमा है। इस पर 2059 का लेख है।

2) श्री घंटाकर्ण महावीर की श्वेत पाषाण की 15" ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2059 का लेख है।

सामने की ओर : (प्रवेश करते समय दोनो ओर)

1) श्री पद्मावती देवी की श्याम पाषाण की 11" ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री काली देवी की श्वेत पाषाण की 13" ऊँची प्रतिमा है।

आचार्य श्री गुणसागर सूरीश्वर जी म.सा. की श्वेत पाषाण की 13" ऊँची प्रतिमा है।

परिक्रमा क्षेत्र में तीन मंगल मूर्तिया स्थापित हैं।

प्रथम तल पर एक देवरी में :

1) श्री आदिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 15" ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

आलियों में :

1) श्री गौमुख यक्ष की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री चक्रेश्वरी देवी की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

मंदिर का उपाश्रय है।

150 वर्ष पूर्व नन्दराय के बाबेल परिवार द्वारा इसकी प्रतिष्ठा कराई।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा चैत्र सुदि 11 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख श्री भेरूलाल जी सेठ व श्री हीरालाल जी सेठ, पूरणमल जी सेठ, पारसमल जी सेठ व पन्नालाल जी सेठ द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र : 99287 20443, 99837 83479

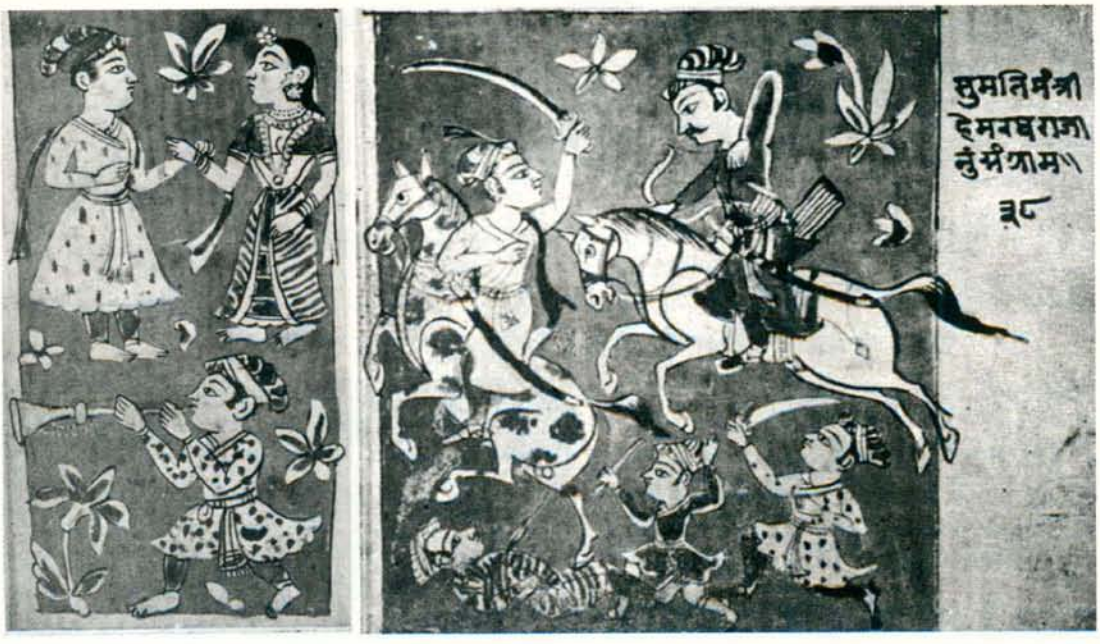

ये चन्द्ररास सूरत में तैयार पेन्ट किये गए है। ये चित्र गुजरात पेटर्न में 17 वीं शताब्दी में बनी है। ये किसी देवी महातम्य पुस्तक के चित्रों से मिलते जुलते है। इन सब चित्रों को लिखित में प्रकाशित नहीं किया है। इसके बाद श्रीपाल रास नामक चित्र आया है जो सूरत में सन् 1716 में चित्रित किया है जो लोक कला पर आधारित है। ये पुण्यविजय जी म.सा. द्वारा संग्रहित है।

श्री चन्द्रप्रभ भगवान का मंदिर, गंगापुर-311801, जिला भीलवाड़ा

यह शिखरबन्द मंदिर जिला मुख्यालय से 50 किलोमीटर पुराने नगर में स्थित है। यह मंदिर करीब 170 वर्ष प्राचीन है। गंगापुर कस्बे का नाम ग्वालियर की रानी गंगाबाई के नाम पर रखा गया। यह घटना सं. 1855 सं 1863 के बीच की है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1) श्री चन्द्रप्रभ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1890 का लेख है।

2) श्री पार्श्वनाथ भगवान (मूलनायक के दाएं) की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1890 का लेख है।

3) श्री जिनेश्वर भगवान (मूलनायक के दाएं) की श्याम पाषाण की 4'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

4) श्री पार्श्वनाथ भगवान (मूलनायक के बाएं) की श्वेत पाषाण की 13''' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1890 का लेख है।

5) श्री जिनेश्वर भगवान की(मूलनायक के बाएं) की श्वेत पाषाण की 5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

धातु की उत्थापित प्रतिमा एवं यंत्र :

1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1510 का लेख है।

2) श्री जिनेश्वर भगवान की 4'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

3) श्री सम्भवनाथ भगवान की 6'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1518 का लेख है।

4) श्री शान्तिनाथ भगवान की 6'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1507 का लेख है।

5) श्री ताम्बे का त्रिकोण यंत्र 4.5''x3'' का है। इस पर ऊँ ह्रीं का मंत्र पढ़ने में आता है।

6) श्री विमलनाथ भगवान की 12'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2045 वैशाख सुदि पूर्णिमा का लेख है।

7–8) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 4'' ऊँची सफेद धातु की प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

9) श्री जिनेश्वर भगवान की 2.5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

10) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 2'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

11) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 5'' का है। इस पर जैन मंदिर गंगापुर का लेख है।

12) श्री अष्ठमंगल यंत्र 6''x3.5'' का है। इस पर सं. 2045 का लेख है।

नीचे की वेदी पर :

1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 7'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

बाहर आलिए में – दाएं व बाएं :

1) श्री विजय देव की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री ज्वालादेवी की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

सभा मण्डप में दाई ओर :

1) श्री जिन कांति सूरीश्वर की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

2) इसी आलिए में घंटाकर्ण महावीर की 5'' ऊँची धातु की उत्थापित प्रतिमा है।

श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2059 का लेख है।

श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 7'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

बाई ओर :

1) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 14'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2059 का लेख है।

इसी आलिए में पद्मावती देवी की 3'' ऊँची धातु की प्रतिमा है।

मंदिर के गम्भारा, सभामण्डप के गुम्बज पर काँच का काम किया हुआ है।

बाहर :

एक आलिए में 17''X17'' के श्वेत पाषाण के पट्ट पर पादुका जोड़ी 5'' ऊँची बनी हुई है। इस पर सं. 1486 का लेख है।

दूसरे आलिए में :

श्री शान्तिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की प्राचीन पादुका 5'' की व श्री गौतम स्वामी की श्वेत पाषाण की 5'' ऊँची पादुकाएं है।

मंदिर से जुड़ा हुआ, प्रवेश करते समय दाई ओर एक कान्तिमणि नाम का एक उपाश्रय बना हुआ है। बरामदा में अधिष्ठायक देव की प्रतीक प्रतिमा 9'' ऊँची है। ऊपर एक कमरा बना हुआ है।

आलिएं में श्री नाकोड़ा भैरव व श्री चन्द्रप्रभ भगवान की प्रतिमा स्थापित है। इनकी प्रतिष्ठा वि. सं. 2055 आषाढ़ शुक्ला सप्तमी को सम्पन्न हुई। दीवार पर सम्मेद शिखर जी व 9 अन्य तीर्थ पट्ट बने हुए है।

मंदिर की बाजार में 11 दुकाने है जो किराए पर दी हुई है लेकिन किराया प्राप्त नहीं हो रहा है। कार्य करने में किसी की रूचि दिखाई नहीं दी।

वार्षिक ध्वजा आषाढ़ शुक्ला सप्तमी को चढ़ाई जाती है।

इस मंदिर की देखरेख जैन समाज द्वारा की जाती है। समाज की ओर से श्री सुरेश सिंघवी, मो. 9414740110 व नानालाल जी बापणा (फोन 01481-221124) द्वारा की जाती है।

नोट- मंदिर के पास में गंगा बाई की छतरी बनी हुई है। उदयपुर के महाराणा व देवगढ़ रावजी के बीच विवाद होने के कारण सुलह कराने के लिए ग्वालियर के महाराजा शिण्डे की पत्नी गंगाबाई सुलह करा कर वापस लौट रही थी, मार्ग में लालपुरा ग्राम में स्वर्गवास हो गया। उनका अंतिम संस्कार इसी स्थान पर हुआ। गंगाबाई की स्मृति में इस कस्बे का नाम गंगापुर नाम रखा गया।

श्री शान्तिनाथ भगवान का मंदिर लाखोला-311801 तहसील गंगापुर

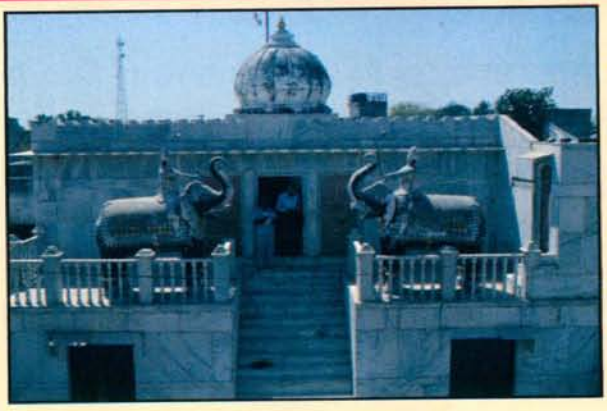

यह घूमटबंद मंदिर भीलवाड़ा-गंगापुर सड़क पर भीलवाड़ा से 50 व गंगापुर से 5 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह पूर्व में धर देरासर के रूप से रहा, पूर्व में प्रतिमाएं नीचे की ओर विराजमान थी, बाद में श्री हिमाचल सूरि जी म.सा. की प्रेरणा से समाज द्वारा मंदिर को ऊपर लेकर मंदिर का जीर्णोद्धार कर प्रतिमाएं विराजमान कराई। यह मंदिर 200 वर्ष प्राचीन बताया जाता है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री शान्तिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2023 माघ सुदि 6 का लेख है।

2) श्री अभिनन्दन भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 14'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2023 माघ सुदि 6 का लेख है।

3) श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 14'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2023 माह सुदि 6 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री सुमतिनाथ भगवान की 6.5'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1531 का लेख है।

2) श्री शान्तिनाथ भगवान की 6'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1535 फाल्गुन वदि 11 का लेख है।

3) श्री सुमतिनाथ भगवान की 5.5'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1604 फा.शु. 5 गुरूवार का लेख है।

4) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 3'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1703 का लेख है।

5) श्री जिनेश्वर देव की 3'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

6) श्री धरणेन्द्र देव की 3'' ऊँची प्रतिमा है।

7) श्री पद्मावती देवी 4.5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1513 वै. कृ. 10 का लेख है।

8) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 4.5'' का है। इस पर वीर सं. 2504 का लेख है।

9) श्री सिद्धचक्र यंत्र 4.4'' ऊँचा आयताकार है।

10) श्री अष्ठमंगल यंत्र 6'', 3'' का है। इस पर सं. 2025 का लेख है।

निज मंदिर के बाहर आलिएं में :

1) श्री गरूड़ यक्ष की श्याम पाषाण की 18'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2023 का लेख है।

2) श्री निर्वाणी देवी की श्याम पाषाण की 18'' ऊँची प्रतिमा है।

कमरानुमा परिक्रमा परिसर में तीन मंगल मूर्तिएं स्थापित है।

मंदिर में तीन दरवाजे है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा चैत्र सुदि 9 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की दो दुकाने हैं।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री बाबूलाल कोठारी व गोपाल जी कोठारी देखते हैं।

सम्पर्क सूत्र - 01481-220113

श्री केसरियानाथ भगवान का मंदिर कोशीथल-311805, तह. सहाड़ा (गंगापुर)

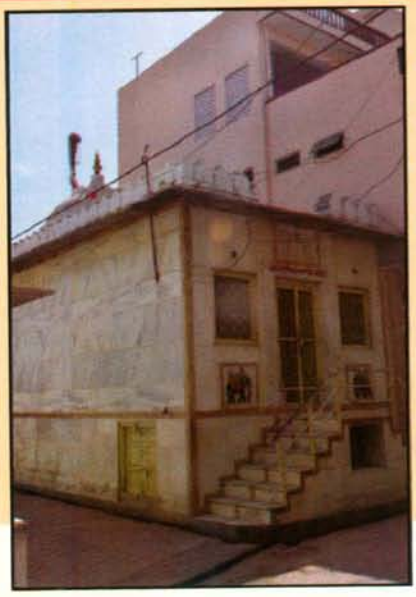

यह घुमटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 80 व तहसील मुख्यालय से 25 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर 400 वर्ष प्राचीन बतलाया गया। जीर्ण शीर्ण होने के कारण नूतन मंदिर की आवश्यकता थी। श्री जितेन्द्र विजय म.सा. का विहार करते हुए आगमन हुआ, जैनी लोगों ने सम्पर्क किया और मंदिर के बारे में वार्ता की और जीर्णोद्धार करा सं. 2039 आषाढ़ सुदि 4 को पूर्ण करा पुनः प्रतिष्ठा कराई। यह मंदिर पूर्व में कच्चा व केलूपोश था। यह मंदिर सं. 1500 में निर्माण होने का उल्लेख है। यह तृतीय श्रेणी का ठिकाना रहा है, इसके शासक जगावत कहलाते थे।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री केसरियानाथ भगवान की (मूलनायक) की श्याम पाषाण की 13" की ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

2) श्री जिनेश्वर भगवान की (पद्मप्रभ भगवान मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 13" ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

3) श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 13" ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

4) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 6" ऊँची प्रतिमा है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री जिनेश्वर भगवान की चतुर्विंशन्ति 12" ऊँची प्रतिमा है।
इस पर अचलगच्छीय साधु भगवत का लेख है।

2) श्री पद्मप्रभ भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इसमे जितेन्द्र सूरि जी का लेख है।

3) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 5'' का है। इस पर सं. 2044 का लेख है।

4) श्री अष्ठमंगल यंत्र 5''X2.5'' का है। इस पर सं. 2064 का लेख है।

5) श्री महावीर भगवान की 3'' ऊँची प्रतिमा है।

6) श्री जिनेश्वर भगवान की 1.7'' ऊँची प्रतिमा है।

7) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 2.5'' ऊँची प्रतिमा है।

बाहर दाहिनी ओर :

1) श्री गौमुख यक्ष की श्वेत पाषाण की 7'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री अधिष्ठायक देव की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

3) श्री माणिभद्र देव की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

4) श्री अधिष्ठायक देव की 8'' ऊँची प्रतिमा है।

बाई ओर :

चक्रेश्वरी देवी की 7'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री सम्मेद शिखर जी, शत्रुंजय तीर्थ के चित्रपट्ट लगे है।

मंदिर के पीछे उपाश्रय व एक नया उपाश्रय वर्धमान सेवा केन्द्र घोलका द्वारा बनाया जा रहा था, वह अपूर्ण है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा आषाढ़ शुक्ला 4 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की व्यवस्था जैन समाज द्वारा की जाती है।

समाज की ओर से श्री ओमप्रकाश जी, सुरेश जी व महावीर जी सेठिया द्वारा व्यवस्था देखी जाती है। सम्पर्क सूत्र - 01481-223009, मोबाइल : 94147 40743

धन और व्यवसाय में इतने भी व्यस्त मत बनिए कि, स्वास्थ्य, परिवार और अपने कर्तव्यों पर ध्यान न दे पाएँ।

श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर कांगणी-311801, तहसील सहाड़ा (गंगापुर)

यह घूमटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 60 व तहसील मुख्यालय से 7 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर केवल 15 वर्ष प्राचीन है। मंदिर के लिए भूखण्ड श्री जिवराज जी गोखरू ने भेंट में दिया और मंदिर का निर्माण करा प्रतिमा श्री जितेन्द्र सूरि जी म.सा. ने उदयपुर से मंगवाई और प्रतिष्ठा पं. श्री निपुणरत्न विजय जी म.सा. द्वारा सम्पन्न हुई।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री मुनिसुव्रत भगवान की (मूलनायका) श्वेत पाषाण की 19" ऊँची प्रतिमा है। इस पर वि. सं. 2052 का लेख है।

आलिओं में :

1) श्री माणिभद्र देव की श्वेत पाषाण की 13" ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री पद्मावती देवी की श्याम पाषाण की 11" ऊँची प्रतिमा है।

वेदी की दीवार के बीच प्रासाद देवी की श्वेत पाषाण की 7" ऊँची प्रतिमा है।

भीतर मकान की ओर कालाजी गोराजी का मंदिर है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा ज्येष्ठ विद 11 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख स्थानीय श्वेताम्बर तेरापंथ समाज द्वारा की जाती है। समाज की ओर से श्री मांगीलाल जी गोखरू द्वारा की जाती है। सम्पर्क सूत्र - 01481-226051

श्री चंद्रप्रभ भगवान का मंदिर, आमली-311801, तहसील सहाड़ा (गंगापुर)

यह घूमटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 60 किलोमीटर व तहसील मुख्यालय से 17 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर 100 वर्ष से अधिक का बतलाया गया। जिसको डांगी परिवार ने बनाया था। यह तृतीय श्रेणी का ठिकाना रहा है। यहाँ के शासक पंवार कहलाते थे।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री चन्द्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1964 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं :

1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 5'' ऊँची पंचीतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1677 का लेख है।
2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 3'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।
3) श्री जिनेश्वर भगवान की 3.5'' ऊँची प्रतिमा है।
4) श्री जिनेश्वर भगवान की 1.5'' ऊँची प्रतिमा है।
5) श्री मरूदेवी माता (हाथी पर सवार) की 3.5'' ऊँची प्रतिमा है।

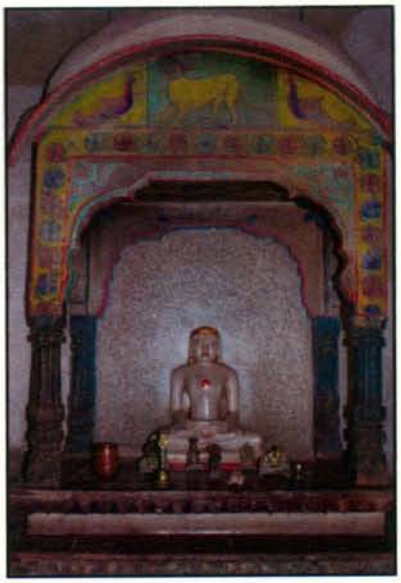

मंदिर की वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है।

मंदिर की व्यवस्था जैन श्वेताम्बर तेरापंथ समाज आमली द्वारा की जाती है। समाज की ओर से श्री गहरीलाल जी चपलोत व्यवस्था देखते है।
सम्पर्क सूत्र : 99295 78081

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर-311806 सहाड़ा, तहसील गंगापुर

यह घूमटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 48 व तहसील से 5 दूर किलोमीटर ग्राम के मध्य में स्थित है। पूर्व में श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर होने का उल्लेख है तथा करीब 200 वर्ष प्राचीन बतलाया जाता है। जीर्ण-शीर्ण हो जाने की अवस्था में जीर्णोद्धार हुआ है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री आदिनाथ भगवान (मूलनायक) की हल्के हरे रंग के पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1861 का लेख उत्कीर्ण है।

2) श्री कुंथुनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट लेख है। लेकिन श्री नेमिसूरीश्वर जी पढ़ने के आता है।

3) श्री मल्लिनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमा :

1) श्री आदिनाथ भगवान की प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट लेख है लेकिन वदि 6 पढ़ने में आता है। सवत् अस्पष्ट है।

बाहर आलिए में :

1) श्री यक्ष देव की श्वेत पाषाण की 5'' ऊँची प्रतिमा है।

2,3) अधिष्ठायक देव 6'' व 4'' ऊँची प्रतिमा है।

मंदिर के दो कमरे, धर्मशाला है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा माह सुदि 7 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी समाज द्वारा की जाती है। अध्यक्ष श्री मनोहरलाल जी संचेती है। सम्पर्क सूत्र - 01481-220324

श्री सुविधिनाथ भगवान का मंदिर पोटला (311810), तहसील गंगापुर

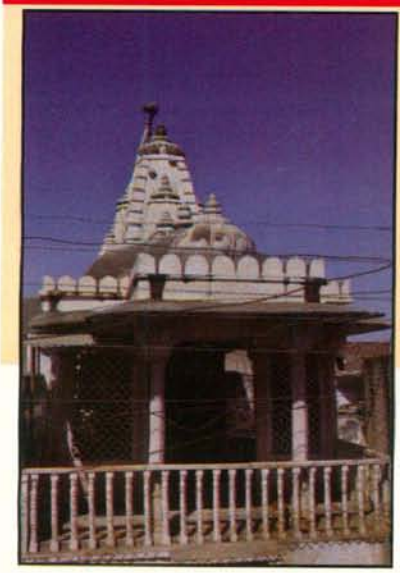

यह शिखरबंद मंदिर जिला मुख्यालय (भीलवाड़ा) से 55 किलोमीटर व तहसील मुख्यालय से 6 किलोमीटर दूर स्थित है। यह मंदिर पामेचा परिवार द्वारा बनाया गया बतलाया गया। पामेचा परिवार करीब 750 वर्ष पूर्व मारवाड़ से यहाँ आकर बसे तब मंदिर का निर्माण हुआ। पूर्व में यह मंदिर श्री मुनिसुव्रत भगवान का होने का उल्लेख है बाद में श्री सुविधिनाथ भगवान का मंदिर है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री सुविधिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 19'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर वि. सं. 2029 माह सुदि का लेख है।

मंदिर का जीर्णोद्धार कराया और सं. श्री मनोहर विजय जी म.सा. द्वारा प्रतिष्ठित है।

2) श्री सुमतिनाथ भगवान (मूलनायक के बाएं) की श्वेत पाषाण की 11'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख अस्पष्ट है।

3) श्री वासुपूज्य भगवान की (मूलनायक के दाएं) की श्वेत पाषाण की 11'' की ऊँची प्रतिमा है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2040 माघ कृष्णा प्रतिपदा का लेख है।

2) श्री महावीर भगवान की 9'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर लेख अस्पष्ट है। श्री प्रेमसूरि जी पढ़ने में आता है।

3) श्री सम्भवनाथ भगवान की 6'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1581 पोष सुदि 5 का लेख है।

4) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 4'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

5) श्री सुविधिनाथ भगवान की 3'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

6) ताम्र यंत्र 4.7''X3.8'' का है।

7) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 5'' का है। इस पर अस्पष्ट लेख है।

8) श्री अष्ठमंगल यंत्र 5.6X3'' का है। इस पर अस्पष्ट लेख है।

9) श्री आदिनाथ भगवान की 12'' ऊँची चतुर्विशंती प्रतिमा है। यह प्रतिमा चाँदी की बतलाई जाती है। इस पर सं. 1571 वैशाख सुदि पंचमी का लेख है।

बाहर अलियों में :

1) श्री अजितदेव की 7'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री सुतारका देवी की 7'' ऊँची प्रतिमा है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा आषाढ़ शुक्ल 13 को चढ़ाई जाती है।

पूर्व में 300 जैनी परिवार थे वर्तमान में केवल 10 परिवार रहते है।

मंदिर के पास रत्नप्रभ सूरि जी का उपाश्रय है।

मंदिर की देखरेख जैन समाज द्वारा की जाती है समाज की ओर से श्री सुशील जी पामेचा द्वारा की जाती है। सम्पर्क सूत्र - 99832 43881

प्राचीन मंदिर होने के कारण इसके साथ भूमि होनी चाहिए, इस बारे में जानकारी करनी चाहिए ।

धीरज मत खोओ।
हीनता और हताशा तुम्हें शोभा नहीं देती।
अपने आत्म-विश्वास को बढ़ाओं,
फिर से प्रयास करो,
तुम्हें सफलता अवश्य मिलेगी।

श्री वासुपूज्य भगवान का मंदिर पोटला-311810, तहसील गंगापुर

यह शिखर बंद मंदिर जिला मुख्यालय से 55 व तहसील मुख्यालय से 6 किलोमीटर दूर है। पूर्व में यह मंदिर श्री शान्तिनाथ भगवान का मंदिर होने का उल्लेख है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

1) श्री वासुपूज्य भगवान की (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची उत्थापित प्रतिमा है। इस पर वि. सं. 2035 चैत्र सुदि 3 का लेख है।

2) श्री आदिनाथ भगवान (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट लेख है।

3) श्री सुमतिनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

श्री जिनेश्वर भगवान की पाषाण की 3'' ऊँची उत्थापित प्राचीन है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1) श्री महावीर भगवान की 9'' की ऊँची उत्थापित प्रतिमा है। इस पर सं. 2056 माघ वदि 5 का लेख है।

2) श्री सुमतिनाथ भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर माघ वदि 5 का लेख है।

3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

4) श्री सम्भवनाथ भगवान की 9'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 2044 माघ सुदि 5 का लेख है।

5) श्री वासुपूज्य भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2056 माघ सुदि 5 का लेख है।

6) श्री शान्तिनाथ भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2056 माघ सुदि 5 का लेख है।

7) श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की 12'' ऊँची चतुर्विंशति प्रतिमा है। इस पर सं. 2056 माघ सुदि 5 का लेख है। लाछण शान्तिनाथ भगवान का है।

8) सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 6'' का है। इस पर सं. 2048 चैत्र वदि 3 का लेख है।

9) अष्ठमंगल यंत्र 6''X3''का है। इस पर सं. 2048 चैत्र वदि 3 का लेख है।

आलिए में बाएं :

(क) पद्मावती देवी की श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

(ख) श्री त्रिमूर्ति देव की प्रतिमा है।

(ग) श्री माणिभद्र देव की श्याम पाषाण 10'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 4'', 5'' व 5'' की ऊँची प्रतिमा है।

बाहर द्वार पर संगमरमर के (श्वेत) दो हाथी स्थापित है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा .. चढ़ाई जाती है। इसके साथ एक धर्मशाला होने का उल्लेख है।

इस मंदिर श्री सुनिल कुमार जी नाणेचा द्वारा की जाती है। सम्पर्क सूत्र - 9828647117

इसी मंदिर परिसर एक देवरी में रत्नप्रभ सूरि जी की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

देवरी के पीछे खुली जगह पर :

1) श्री मुनिसुव्रत भगवान की श्याम पाषाण की 24'' ऊँची प्रतिमा है।

2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 25'' ऊँची प्रतिमा है।
3) श्री कुंथुनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 18'' ऊँची प्रतिमा है।
4) श्री सम्भवनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।
5) श्री कुंथुनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है।
6) श्री आदिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 25'' ऊँची प्रतिमा है।
7) श्री मुनिसुव्रत भगवान की श्याम पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है।
8) श्री सम्भवनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है।
9) श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 23'' ऊँची प्रतिमा है।
10) श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।
11) श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है।
12) श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है।

घूमट के चारों ओर चार मंगल मूर्तियां स्थापित हैं।

कई प्रतिमाओं के नैत्र नहीं हैं। कोई लेख नहीं है। सम्भवतयाः ये प्रतिमाएं मेहमान के रूप में विराजमान हैं।

मंदिर की भूमि होने की जानकारी मिली है, वास्तविकता की जानकारी की आवश्यकता है ।

मंदिर की देखरेख एडवोकेट श्री सुनील जी नाणेचा करते है।

बच्चों पर निवेश करने की सबसे अच्छी चीज है
अपना समय और अच्छे संस्कार।
ध्याम रखें,
एक श्रेष्ठ बालक का निर्माण
सौ विद्यालय को बनाने से भी बेहतर है।

श्री नमिनाथ भगवान का मंदिर खाखला-311806, तहसील गंगापुर

यह निर्माणाधीन मंदिर भीलवाड़ा - उदयपुर सड़क (भीलवाड़ा जिले की सीमा पर) 65 किलोमीटर दूर तहसील मुख्यालय से 16 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। जानकारी के आधार पर यह यह मंदिर 400 वर्ष प्राचीन रहा है। मंदिर खण्डहर हो जाने से प. श्री निपुण रत्न विजय जी म. सा. की प्रेरणा से प्राचीन मंदिर के स्थान पर नूतन मंदिर समाज के द्वारा बनाया जा रहा है। वर्तमान में प्राचीन प्रतिमाएं निजी मकान में पदराई गई है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं :

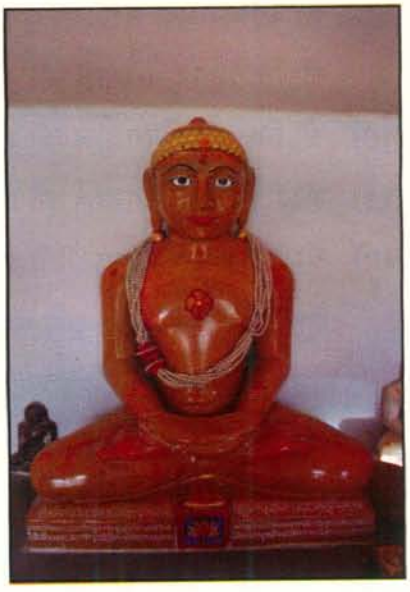

1) श्री नमिनाथ भगवान की (मूलनायक) पीत पाषाण की 19'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2038 माह सुदि 6 का लेख है। यह प्रतिमा बाहर से लायी गयी है।

2) श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 6'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1666 का लेख है।

3) श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 6'' की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1666 माह सुदि 5 का लेख है।

उक्त प्रतिमा नं. 2 व 3 प्राचीन मंदिर में ही स्थापित थी ।

नूतन मंदिर का निर्माण स्थल जहां पूजन किया गया है

उत्थापित धातु की प्रतिमाएँ व यंत्र :

1) श्री शांतिनाथ भगवान की 12'' ऊँची प्रतिमा है । इस पर सं. 2044 का लेख है ।

2) श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 4.5'' का है । इस पर सं. 2045 वै. शु. 5 का लेख है ।

3) श्री अष्टमंगल यंत्र 6"X3" का है। इस पर सं. 2045 वै. शु. 5 का लेख है ।

पूर्व में स्थापित मंदिर का स्थान जहां पर खाद मुर्हरत कर निर्माण कार्य प्रारम्भ किया जाना है ।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से निम्न सदस्य करते हैं :

श्री सोहनलाल जी चपलोत - 099505 29926

श्री बसंतकुमार जी धोखा - 098922 13978

श्री रमेश जी सिंघवी - 09821281301

यह समग्रहणी सूत्र जो गुजरात में सन् 1650 में बनाए गऐ हैं, इसे मुनि श्री पुण्यविजय जी म.सा. ने संग्रहित किया है ।

श्री महावीर भगवान का मंदिर नेवरिया, जिला चित्तौड़गढ़

यह घूमटबंद मंदिर जिला मुख्यालय से 45 किलोमीटर व हमीरगढ़ से 15 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में चारभुजा मंदिर के पास स्थित है। यह ग्राम चित्तौड़गढ़ जिले के अन्तर्गत है। चित्तौड़गढ़ जिले के मंदिरों के इतिहास के साथ इसका वर्णन नहीं हो सका।

मंदिर निर्माण के लिये बापना परिवार ने भूमि भेंट की और सभी सदस्यों के सहयोग से मंदिर का निर्माण उल्लेखानुसार सं. 1996 में हुआ।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

देवरी में :

(1) श्री महावीर भगवान की श्वेत पाषाण की 17" ऊंची अति प्राचीन प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

आलिये :

श्री चरण–पादुका श्वेत पाषाण की एक जोड़ी 4" के श्वेत पाषाण के 15" x 10" के पट्ट पर स्थापित है। इस पर सं. 1912 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं :

(1) श्री श्रेयांसनाथ भगवान की 6" ऊंची पंच तीर्थी प्रतिमा है।

वार्षिक ध्वजा वैशाख शु. 7 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख समाज की ओर से श्री मांगीलाल जी बापना व श्री शांतिलाल जी बापना द्वारा की जाती है। सम्पर्क सूत्र - 9414297024

ऋषभदेव भगवान के 100 पुत्रों के नाम

1. भरत
2. बाहुबलि
3. शंख
4. विश्वकर्मा
5. विमल
6. सुलक्ष
7. जमल
8. चित्रांग
9. ख्यात
10. वरदत्त
11. सागर
12. यशोधर
13. अमर
14. स्थवर
15. कामदेव
16. ध्रुव
17. वत्स
18. नंद
19. सूर
20. सुनंद
21. कुस
22. अंग
23. वग
24. कौशल
25. वीर
26. कलिंग
27. मागध
28. विदेह
29. संगम
30. दशार्ण
31. गम्भीर
32. वसुवर्मा
33. सुवमा
34. राष्ट्र
35. सुराष्ट्र
36. वृद्धिकर
37. विवेकधर
38. सुयशा
39. यशकीर्ति
40. यशस्कर
41. कीर्तिकर
42. सुरण
43. ब्रह्मसेन
44. विक्रांत
45. नरोत्तम
46. पुरूषोत्तम
47. चन्द्रसेन
48. महासेन
49. नामसेन
50. भानु
51. सुकांत
52. पुण्यसुत
53. श्रीधर
54. दुघर्ष
55. सुकुमार
56. दुर्जय
57. अजयमान
58. सुधर्मा
59. धर्मसेन
60. आनन्दन
61. आनन्द
62. नंद्र
63. अपराजित
64. विश्वसेन
65. हरिषेण
66. जय
67. विजय
68. विजयंत
69. प्रभाकर
70. विजयंत
71. मान
72. महाबाहु
73. दीर्घबाहु
74. मेघ
75. सुघोष
76. विश्व
77. वराह
78. सुसेन
79. सेनापति
80. कपिल
81. शैलविचारी
82. अरिजय
83. कुंजरबल
84. जयदेव
85. नागदत्त
86. काश्यप
87. बल
88. धीर
89. शुभमति
90. सुमति
91. पद्नाभ
92. सिंह
93. सुपारी
94. संजय
95. सुनाभ
96. नरदेव
97. चित्तहर
98. सुखर
99. दृढ़रथ
100. प्रभंजन

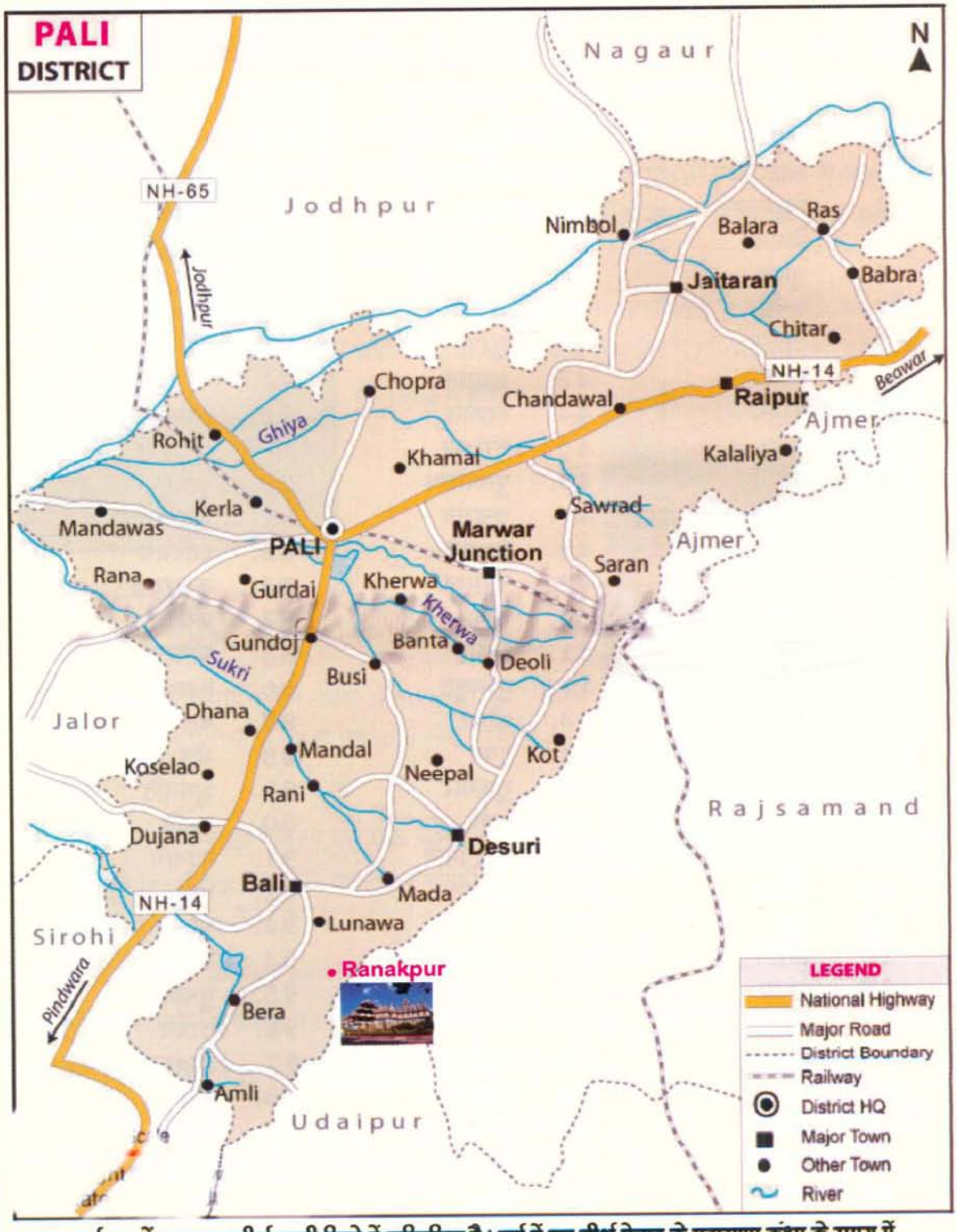

वर्तमान में राणकपुर तीर्थ पाली जिले में सम्मिलित है। पूर्व में यह तीर्थ मेवाड़ के महाराणा कुंभा के समय में मेवाड़ का ही अंग रहा है इसलिए इस तीर्थ को मेवाड़ के जैन तीर्थ में जोड़कर वर्णन किया गया है।

श्री आदिश्वर भगवान का मंदिर, राणकपुर-सादड़ी, तह. देसुरी, जिला पाली (राज.)

यह तीर्थ अरावली की पर्वतमाला के बीच प्राकृतिक सौदर्य से गिरा हुआ उदयपुर से 95 किमी फालना रेलवे स्टेशन से 35 किमी, सादड़ी नगर से 10 किमी दूर मघई नदी के तट पर स्थित है। इस नदी के बारे में मेह नामक यति द्वारा रचित स्तवन में इस नदी का नाम ''निरमल नीर बहई बीच गंगे पाप परवाल सु अंगे'' दिया है। यह मंदिर 48000 वर्ग फीट समानान्तर क्षेत्रफल में फैला हुआ है।

इस मंदिर के चार कलात्मक प्रवेश द्वार है तथा इसमें 1444 स्तम्भ है । चारों ओर छोटे बड़े स्तम्भ है इन स्तम्भों की विशेषता यह है कि किसी भी स्तम्भ के वहां खड़े होने पर भगवान की प्रतिमा के दर्शन होते है। मंदिर दो प्रकार के पत्थरों से निर्मित है पहला सादड़ी के संगमरमर का है दूसरा सोनाणा के पाषाण का है। मंदिर निर्माण करने के लिए महाराणा कुम्भा ने भूमि दान में दी इसलिए इस मंदिर को राणा कुम्भा के नाम से जाना जाता है। महाराणा कुम्भा ने राज्य कार्य सिंहासन पर बैठते ही प्रारम्भ कर दिया । अपने शासनकाल में ही उन्होने कई युद्धों को विफल किये और कई महत्वपूर्ण कार्य किए। वे कला प्रेमी थे, वे सभी कला कौशल से परिपूर्ण थे तथा वे धार्मिक प्रवृतियों को प्रोत्साहन देते थे। इनके समय काल का कलात्मक सौदर्य से परिपूर्ण रणकपुर मंदिर भी सम्मिलित है।

इस मंदिर की यह कहावत प्रसिद्ध है - ''आबू की कोरनी और रणकपुर की मांड़नी''

उत्कीर्ण शिलालेखों का उल्लेख आगे विभिन्न स्थानों पर प्रस्तुत करेंगे लेकिन शिलालेखों के अतिरिक्त शौधकर्ता ने कई महत्वपूर्ण साम्रगी प्रस्तुत की है जो पूर्ण रूप से विश्वसनीय है। डॉ. डी. आर. भण्डारकर आर्कियोलोजिकल सर्वे आफ इण्डिया एन्युनल रिर्पोट 1907–08 के पृष्ठ सं 205 से 218 पर उल्लेख है जिसका सांराश इस प्रकार है–

पोरवाल जाति के धरणाशाह व रत्ना शाह दो भाई थे । वे नांदिया ग्राम के निवासी थे एक बार माण्डवगढ़ के मुस्लिम बादशाह हुंसगशाह का पुत्र गजनी खॉ के बीच (पिता–पुत्र) कुछ कहासुनी होने पर पुत्र रूठ कर इधर आ गया । जहाँ इन दोनो भाइयों ने शरण दी और पुत्र को समझाकर पुनः बादशाह के पास भेज दिया लेकिन दरबारियों ने गलत अर्थ बताकर दोनो को अपराधी बताया और दोनो भाइयों को गिरफ्तार कर छः माह तक कैद में रखा । कुछ दिनों बाद भाइयों पर 84 सिक्कों का दण्ड दिया गया। दण्ड राशि का भुगतान कर वे

आजाद हुए, आजाद होकर वे अपने गांव (नांदिया) नही ही जाकर रणकपुर के दक्षिण से मालगढ नामक पहाड़ी पर बसे यहां आकर इन्होंने मादड़ी में एक मंदिर का निर्माण कराया जिसका नाम रणकपुर रखा गया रणकपुर रखने का कारण यह भी रहा कि मंदिर के लिए राणा कुम्भा ने भूमि दी इसलिए राणा अर्थात् रण व नगर का अर्थ पुर अर्थात् रणपुर नाम दिया तब सादड़ी की ओर से सभी 3000 जैन परिवार आकर बसे और बहुत बड़ा नगर बन गया जिसका प्रमाण आज भी खनन पर छोटी छोटी पहाड़ियों पर मकान के खण्डहर, चूल्हे, मूसल आदि देखे जा सकते हैं । पुनः इस नगर (मादड़ी) का बिखराव हो गया और एक भाई का परिवार भी सादड़ी व सादड़ी से घाणेराव जाकर बस गये। वर्तमान में एक भाई का परिवार उदयपुर व दूसरे भाई का परिवार घाणेराव रह रहा है । धरणा के दो पुत्र श्री जाखा व जावड़ (शिलालेखों व वंश परम्परा के आधार पर) थे। यहीं पर निर्माणकर्ता का शिलालेखों में उत्कीर्ण नाम में भिन्नता है। साधारण भाषा में निर्माणकर्ता धरणा शाह बतलाते है लेकिन उत्कीर्ण लेख की पंक्ति नं. 38 से 43 तक में निर्माणकर्ता के परिवार के नाम के साथ धरणाक उत्कीर्ण है। यह सम्भव है कि धरणाक उनका उपनाम हो जो उपाधि से संबंध रखता है। इसकी पुष्टि के लिए यह उदाहरण प्रस्तुत है :–

अजाहरि पिण्डरवाटक (पिण्डवाड़ा) और सालोर में स्थापित मंदिर का जिर्णोद्धार कराने में धरणाक नाम ही उत्कीर्ण है इसलिए स्पष्ट है कि रत्नाशाह का भाई धरणाशाह उर्फ धरणांक एक ही व्यक्ति है । इसके अतिरिक्त प्राग्वाट – इतिहास प्रथम खण्ड के धरणाशाह का नाम स्पष्ट है । इन्होंने ही रणकपुर मंदिर बनाया ।

इस मंदिर का निर्माण कार्य वि. सं. 1446 में प्रारम्भ हुआ और प्रतिष्ठा सं. 1498 में सम्पन्न हुई। मूलनायक की प्रतिमाओं की एक प्रतिमा पर सं. 1475 भी उत्कीर्ण है, सम्भव है कि सं. 1475 में अन्जनशलाका सम्पन्न हुई हो और उसके बाद प्रतिमाएं पूजनीय बनी।

मंदिर निर्माण के लिए भी भिन्न–भिन्न विचार है। पं. कवि मेघगणि ने यहा पर सात मंदिर होने का व श्री ज्ञानविमलसुरिजी म.सा. ने 5 मंदिर होने का उल्लेख किया है जबकि वर्तमान में तीन मंदिर ही विद्यमान है यह सम्भव है कि सूर्य मंदिर भी जो इसी परिक्षेत्र में है व द्वितीय व तृतीय मंजिल पर स्थापित चतुर्मुखी मंदिर को पृथक मंदिर का दर्जा दिया हो। इस प्रकार 5 मंदिर होते है। यदि चक्रेश्वरी देवी का मंदिर जो अलग है, इसको गिना कर कुल 7 मंदिर होते है।

रणकपुर नगरी सम्पूर्ण ध्वस्त हो गई, यह ध्वस्त कब हुई, इसका कोई इतिहास उपलबध नही है। ऐसा कहा जाता है कि उल्लेखानुसार औरंगजेब जब रणकपुर आया और मंदिर को काफी क्षति पहुँचाई। उसी रात्रि को औरंगजेब बीमार हो गया और उसकी बेगम ने स्वप्न में देखा कि उन्हें कोई कह रहा है कि मंदिर नष्ट करने का विचार त्याग दें अन्यथा उसका पति

ठीक नही होगा, दर्शन करेगा तो स्वस्थ हो जाएगा, ऐसा करने पर ही स्वस्थ हो पाया और उसने तीन मजार तीनो दिशाओं की ओर बनाई जो जिर्णोद्धार करते समय तोड़ दी गई। ध्यान से देखा जाए तो चिन्ह आज भी विद्यमान है। इसका मुख्य कारण यह है कि मजार को देख कोई भी मुस्लिम इस तीर्थ को क्षति नही पहुचा सकें।

मुस्लिम कट्टर शासक औरंगजेब जो मंदिरों को ध्वस्त करने में विश्वास करता था इस नगरी को भी ध्वस्त किया होगा। जैसा कि ऊपर वर्णन किया गया है कि पहाड़ियों पर प्राचीन बस्ती का होने का प्रमाण है आज भी इन पहाड़ियों के बीच धरणा विहार दिखाई देता है यह धरणा विहार दूसरा कोई नही यह जैन मंदिर ही है। इसको त्रेलोक्य दीपक प्रासाद, त्रिभुवन विहार, नलिनी गुल्म विमान नाम से भी पुकारा जाता है।

इस मंदिर (तीर्थ) का निर्माण का श्रेय प.पू.आ.श्री सोमसुंदरसूरीश्वरजी म.सा. को है। इनकी प्रेरणा से कुरपाल भार्या

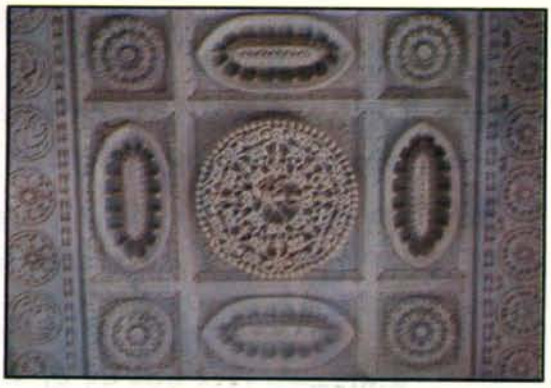

कामलदे के पुत्र रत्नाशाह के लघु भ्राता धरणाशाह के मन में धार्मिक भावना उत्पन्न हुई और मंदिर का निर्माण कराया। इस मंदिर के चारों दिशाओं की ओर चार मुख्य दरवाजे है, 84 देवकुलिकाएं है, 84 देवरिया बनाकर भावना यह रही हो कि 84 लाख योनियों से गुजरता भवसागर को पार कर सकें। चारों दिशाओं में चार विशाल व उन्नत मेघनाद मण्डप की रचना की।

मंदिर मे 40 फीट ऊँचे स्तम्भ बीच में लटकते हुए कलात्मक तोरण व मण्डप में देवियों की सजीव मूर्तियां और कलात्मक उभरती हुई कोरणी मन को लुभावनी लगती है ।

मंदिर की ओर प्रवेश करने से पूर्व बरामदें की छत की कारीगरी देखने योग्य है। पत्थर में भी फुल खिला दिये। बरामदें की पहली छत पर कुछ नग्न और अश्लील चित्र है जो वासना को प्रेरित करते है । मंदिर साधना के केन्द्र होते है वहां पर वासना से परिपूर्ण चित्र उचित नही लगते । यह कलाकार की कल्पना है उसके विचार थे । यह भी सम्भव है कि आधुनिक युग की तरह यौन शिक्षा का प्रचलन व प्रचार प्रसार का माध्यम यही होने से दीवारों पर प्रदर्शन कर पथ प्रदर्शन का कार्य का विचार हो।

भिति चित्र की अभिव्यक्ति सुदंर ढंग से हो सकती है । अंजता एलोरा में भी इसी प्रकार के चित्र है। इस प्रकार की कला का प्रदर्शन 15 वी शताब्दी के बाद कम हो गया है। मूल मंदिर के बाहर बरामदें के दाहिनी ओर दीवार पर भित्ति चित्र (भेरूजी व देवी की प्रतिमा) उत्कीर्ण है वे भी नग्न अवस्था की है। पूजा होती है पूजा करने वाले देवी मां की पूजा करते समय उनके गुप्तांग पर बरक चढ़ाते है यह विचारणीय है ट्रस्टीगण को देवी मां के लिए परिधान की व्यवस्था करनी चाहिए यह मेरी मान्यता है। मूल मंदिर (गम्भारे) में प्रवेश करते समय बाहर दीवार पर एक लेख (47 पंक्तियों का) उत्कीर्ण है।

उक्त लेख के प्रथम भाग में मेवाड़ के महाराणाओं के नामों का उल्लेख है। पंक्तियां सं. 38 से 43 तक निर्माणकर्ता का नाम दिया गया है। इस मंदिर मे जैन प्रतिमाएं स्थापित है श्री

स्वस्ति श्री चतुर्मुख जिन युगादीश्वराय नमः ॥

श्रीमद्विक्रमतः १४९६ संख्य वर्षे श्री मेदपाट राजाधिराज श्री बप्प १ श्री गुहिल २ भोज ३ शील ४ कालभोज ५ भर्तृभर ६ सिंह ७ सहायक ८ राज्ञो सुत युतस्व सुवर्णतुला तोलक श्रीखुम्माण ९ श्रीमदल्लट १० नरवाहन ११ शक्तिकुमार १२ शुचिवर्म १३ कीर्त्ति-वर्म १४ जोगराज १५ वैरट १६ वंशपाल १७ बैरिसिंह १८ वीरसिंह १९ श्री अरिसिंह २० चोड़सिंह २१ विक्रमसिंह २२ रणसिंह २३ क्षेमसिंह २४ सामंतसिंह २५ कुमारसिंह २६ मथनसिंह २७ पद्मसिंह २८ जैत्रसिंह २९ तेजस्विसिंह ३० समरसिंह ३१ चाहूमान श्रीकोतूक नृप श्रीअल्लावदीन सुरत्राण जैत्र बप्प वंश्य श्री भुवन सिंह ३२ सुत श्रीजय सिंह ३३ मालवेश गोगादेव जैत्र श्री लक्ष्मसिंह ३४ पुत्र अजयसिंह ३५ भ्रातु श्री अरिसिंह श्री हम्मीर ३७ श्री खेतसिंह ३८ श्री लक्षाहूयनरेन्द्र ३९ नंदन सुवर्ण तुलादिदान पुण्य परोपकारादि सारगुण सुरद्रुम विश्राम नंदन श्रीमोकल महिपति ४० कुलकानन पंचान-

नस्य। विषम तमाभंग सारंगपुर नागपुर गागरण नराणका अजयमेरु मंडोर मंडलकर बुंदी खाटू चाट सुजानादि नानादुर्ग लीलामात्र ग्रहण प्रमाणित जित काशिस्वाभि-मानस्य। निज भुजोर्जित समुपार्जितानेक भद्र गजेन्द्रस्य। म्लेच्छ महीपाल व्याल चक्रवाल विदलन विहंगमेंद्रस्य। प्रचंड दोर्दंड खंडिताभिनिवेश नाना देश नरेश भाल माला लालित पादारविंदस्य। अस्खलित ललित लक्ष्मी विलास गोविंदस्य। कुनय गहन दहन दवानलायमान प्रताप व्याप पलायमान सकल बलूस प्रतिकूल क्ष्माप श्वापद वृंदस्य। प्रबल पराक्रमाक्रांत ढिल्लिमंडल गूर्जरत्रा सुरत्राण दत्तातपत्र प्रथित हिन्दु सुरत्राण विरुदस्य सुवर्ण सत्रागारस्य षड्दर्शन धर्माधारस्य चतुरंगवाहिनी वाहिनी पारावारस्य कीर्त्तिधर्म प्रजापालन सत्रादि गुण क्रियमान श्रीराम युधिष्ठिरादि नरेश्वरानुकारस्य राणा श्री कुंभकर्ण सर्वोर्वीपतिसार्वभौमस्य ४१ विजयमान राज्ये तस्य प्रासद पात्रेण विनय विवेक धैर्योदार्य शुभ कर्म निर्मल शीलाद्यद्भुत गुणमणिमया भरण भासुर गात्रेण श्री मदहम्मद सुरत्राण दत्त फुरमाण साधु श्रीगुणराज संघ पति साहचर्य कृताश्चर्यकारि देवालयाडंबर पुरःसर श्री शत्रुंजयादि तीर्थ यात्रेण। अजा हरी पिंडर वाटक सालेरादि बहुस्थान नवीन जैन विहार जीर्णोद्धार पद स्थापना विषम समय सत्रागार नाना प्रकार परोपकार श्री संघ सत्काराद्य गण्य पुण्य महार्घ क्रयाणक पूर्यमाण भवार्णव तारण क्षम मनुष्य जन्म यान पात्रेण प्राग्वाट वंशावतंस स० सागर (मांगण) सुत स० कुरपाल भा० कामलदे पुत्र परमार्हत धरणाकेन ज्येष्ठ भ्रातृ सं० रत्ना भा० रत्नादे पुत्र सं० लाषा म(स)जा सोना सालिग स्व भा० स० धारल दे पुत्र जाझा जावडादि प्रवर्द्धमान संतान युतेन राणपुर नगरे राणा श्री कुंभकर्ण नरेन्द्रेण स्वनाम्ना निवेशिते तदीय सुप्रसादादेशतस्त्रैलोक्यदीपकाभिधानः श्री चतुर्मुख युगादीश्वर विहार कारितः प्रतिष्ठितः श्रीबृहत्तपा गच्छे श्रीजगच्चंद्र सूरि श्रीदेवेंद्रसूरि संताने श्रीमत् श्रीदेवसुन्दर सूरि पट्ट प्रभाकर परम गुरु सुविहित पुरंदर गच्छाधिराज श्रीसोमसुन्दर सूरिभिः ॥ कृतमिदं च सूत्रधार देपाकस्य अयं च श्रीचतुर्मुख विहारः आचंद्रार्कं नंदतात् ॥ शुभं भवतु ॥

आदीश्वर भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की चतुर्मुखी 72'' ऊँची प्रतिमाएं है। लेख है:-

वि. सं. 1498 फा. वदि 5 संघ धरणा के भातृन श्री रत्नाशाह लाखादे परिवारगण सुगादिदेवा तथा गच्छनायक सोमसुंदरसूरि की यह प्रतिमा चतुर्मुखी अर्थात् चारों दिशाओं में चार प्रतिमाएं स्थापित है।

मूलनायक के मध्य में एक कमल नाल है जो 9'' व्यास का एक स्तम्भ है जिसकी नीव यहां से बनाई गई है ऐसी जानकारी है इसके नीचे पानी बहता है। मूलमंदिर में मूलनायक के अतिरिक्त 17 प्रतिमाएं है एक अम्बिकादेवी की प्रतिमा व एक चरण पट्ट स्थापित है।

सभी मंदिर में कुल 372 प्रतिमाएं विराजमान है बाहर बरामदें आदि का वर्णन किया जा चुका है।

मूल बरामदें के सामने प्रथम द्वार के ऊपर श्री मरूदेवी माता हाथी पर विराजमान है हाथी पर माता मरूदेवी को केवल ज्ञान की प्राप्ति हुई थी ।

प्रवेश के बाई ओर की देवरियों के दर्शन करते हुए आगे बढ़ते है। जहाँ पर भी खुदाई का सुदंर कार्य किया हुआ है। इसके बाहर शंत्रुजय व गिरनार की पहाड़ी खुदी हुई है इस पर यह लेख है–

।।ऊँ।। सं. 1507 वर्षे माघ सु. 10 उकेश वंशे स. भीला भा. देवल सुत स. घर्मा स. केल्हा भा. हेमादे पुत्र स. तोल्हाषांगा मोल्हा कोल्हा आल्हा साल्हादिभिः सकुटुबैस्वश्रेयसे श्री राणपुर महानगर त्रेलोक्य दीपकाभिधान श्री युगादि देव आसादेधन्त महातीर्थ शत्रु जय श्री गिरनार तीर्थ द्वय पट्का कारिता प्रतिष्ठिता श्री सूरि पुरंदरैः तीर्थनामुत्तमंतीर्थे नागानामुत्तमा नमः। क्षेत्राणामुत्तमं क्षेत्रं सिद्धाद्रि श्री जि मं।। श्री रूसुपूजकस्य ।

इसके पास ही एक अपूर्ण स्तम्भ है जिसक लिए एक किवदंती है कि महाराणा ने मंदिर की ऊंचाई के बराबर स्तम्भ का असफल प्रयास किया। दूसरा कथन है कि धरणाशाह की कोठी रही है, यह राशि से भरी हुई रहती थी। इस मंदिर के निर्माण की राशि इसी से निकाली जाती थी। इसको "सहस्त्रकुट" भी कहते है। इसकी पट्टी पर निम्न लेख है : इसी प्रकार स्तम्भ की अन्य पट्टीयों पर कई प्रकार के लेख है

सं. 1551 व. वैशाख वदि 11 सोमे से. जावि मा. जिसमादे पु. गुणराज मा. सुगणादे पु. जगमाल मा. बच्छ करावित वा. गांगांदे नागरदात वा. साडापति श्री मूजा कारापिता श्री. नीवि. रामा. भा. कम।

मंदिर में प्रवेश करते समय दोंनो ओर तहखाने बने हुए है बहुत वर्षो पूर्व इन तहखानों का अवलोकन किया था । बाई ओर के तहखाना की अपनी छत कलात्मक रूप से निर्मित है ऐसा प्रतीत होता है कि कल्पवृक्ष का दृश्य दर्शाया गया है दूसरा तहखाना कलात्मक नही है। इसमें कई प्रतिमाएं विराजमान है। इसी प्रकार रायण वृक्ष के पास भी एक तहखाना है उसमें खण्डित प्रतिमाएं देखी

गई थी। इनको देखने के लिए टॉर्च साथ में ले गए थे । **वर्तमान में ये तहखाने बंद कर दिए गये है।**

रायण वृक्ष के पास स्तम्भों पर श्री नेमिमाथ भगवान के बारात के दृश्य उत्कीर्ण है। इसी प्रकार भिन्न भिन्न स्तम्भों पर विभिन्न तीर्थंकरो के जीवन चित्र है। देवरी नं. 22 से 34 तक की देवरियो के बीच के स्तम्भों पर लेख उत्कीर्ण है। इन पर सं. 1532 के लेख उत्कीर्ण है लेख के पट्ट इस प्रकार है :

तृतीय द्वार की ओर मूलनायक के पीछे निचले सभा मण्डप के एक स्तम्भ पर लेख उत्कीर्ण है।

सं. 1611 वर्षे वैशाख सुदि 13 दिने पातशाह श्री अकबर प्रदत्त जगद्गुरू विरूद धारक परम गुरू तपा गच्छाधिराज भट्टारक श्री हीर विजय सूरीणामुपदेशेन श्री राणपुर नगरे

चतुर्मुख श्री धरण विहार श्री महम्मदावाद नगर निकट वर्च्युसमापुर वास्तब्य प्राग्वाट ज्ञातीय सा. रायमल भार्या वरजू भार्या सुरूपदे तत्पुत्र खेता सा. नायकाभ्यां भावरआादि कुटुंब युताभ्यां पूर्व दिग् प्रतोल्या मेघनादाभिधो मण्डप कारितः स्व श्रेयोर्थं

यह शिलालेख यह प्रदर्शित करता है कि श्री तपागच्छ आचार्य श्री

हीरसूरिजी म.सा. के सदुपदेश हिंसा का प्रतिबन्ध करने की आज्ञा प्रसरित की जो यह तीर्थ स्थल पर यह प्रचलित लेख ही कहा जा सकता है। इस लेख के ऊपर मुस्लिम शासक की मूर्ति भी है।

दूसरा लेख सं. 1647 वर्षे फाल्गुन मासे शुक्लपक्षा पंचम्यां तिथौ गुरूवासरे श्री तपा गच्छाधिराज पातशाह श्री अकबरदत्त जगतगुरू विरूद धारक भट्टारक श्री श्री श्री हीर विजयसूरी णामुपदेशेन चतुर्मुख श्री धरण विहारे प्राग्वाट ज्ञातीय सुश्रावक सा. खेता नायकेन वर्द्धा पुत्र यशवंतादि कुटुम्बयुतेन अष्टचत्वारिशत प्रमाणानि सुवर्ण नाणकानि मुक्तानि पूर्व दिकसत्क प्रतोली निमितमिति श्री अहमदाबाद पार्श्वे उसमा पुरत

उसमापुर निवासी प्राग्वाट जाति के रवेता और नायको को अकबर बादशाह के प्रतिबोधित करने वाले विजयहीरसूरि जी ने उपदेश देकर राणपुर में धरणा द्वारा निर्मित मंदिर के पुर्व दिशा के द्वार के जिणोद्धार के लिये 48 मोहरें दी।

इसके आगे एक बड़ी देवरी अष्टापद तीर्थ की रचना उत्कीर्ण है। इसके बाहर सहस्त्राफणा पार्श्वनाथ का चित्र दीवार पर उत्कीर्ण है यह एक सुंदर कलावृति है। इस पर सं. 1903 का लेख है । इसके पास ही एक स्तम्भ पर स्याही से लिखा एक लेख है जो इस प्रकार है ।

सं. 1903 वैशाख सुदी 11 गुरू दिने परम पूज्य भट्टारक श्री कक्कसूरिभिः गण रा सहिता सफल यात्रा कृतः श्री कवलगच्छ प. शिवसुंदर मुनि श्री रस्तु श्री सं. 1903 वर्षे पं. वैशाख सूदि 11 श्री जिनेश्वर विष चरणे सु राणपुर शिवसुंदर मुनि के हस्ताक्षर है जो आज भी यथावत है।

द्वितीय खण्ड पर चतुर्मुखी के रूप में चार प्रतिमाओं में से एक श्री संभवनाथ की प्रतिमा पर सं. 1509 रत्नशेखरसूरिभि ।

सीढी पर चढकर जाने पर एक ऊंची वेदी पर चतुर्मुखी प्रतिमा विराजमान है। यहां पर एक छोटी बारी बनी हुई है इसको मोक्ष की बारी कहते है। इसके नीचे केवल धर्मात्मा व्यक्ति ही निकल सकता है। (उल्लेखानुसार) वर्तमान में यह बंद कर दी है। इसी प्रकार तृतीय खण्ड पर भी मंदिर में चतुर्मुखी प्रतिमाएं बिराजमान है ।

मंदिर के विभिन्न खण्डों (दीवार) में धरणा शाह व रत्ना शाह के वंशजों व अन्य जैन श्रद्धालुओं ने विभिन्न समय में अनेकों तीर्थकरों की प्रतिमाएं का निर्माण व प्रतिष्ठा विभिन्न

जैनाचार्यो द्वारा कराई गई है। निर्माण जिर्णोद्वार प्रतिष्ठा सं. 1500 सं. 1900 तक चलता रहा। कई प्रतिमाओं पर लेख उत्कीर्ण है जो इसकी पुष्टि करते है। कुछ उदाहरण इस प्रकार है :

सं. 1392 माघ वदि 1 (प्रतिपदा), 2. सं. 1304 ज्येष्ठ सुदि 9, सं. 1507 वर्षे माघ सुदि 10,

देवरियों में प्रथम खण्ड में श्री वासुपुज्य, श्री आदिनाथ, श्री आदिनाथ व श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमाओं पर स. 1506, 1507, 1509,1509 का लेख उत्कीर्ण है।

विभिन्न भागों व कक्षों में निम्नलिखित शिलालेख है :

सं. 1535 वर्षे फाल्गुन सुदि दिने, सं. 1552 वर्षे मगसर सुदि 9 गुरू, सं. 1556 वर्षे वै. शु. 6, सं. 1556 वर्षे वै. शु. 6

मूलनायक के उत्तर दिशा की ओर प्रतिष्ठित प्रतिमा सं. 1678 वर्षे वैशाख सुदि 11 बुधे मेघपाट राजाधिपती राणा श्री कर्णसिंह तत् पुत्र सा. हेमराज जीवन श्री कारित श्री रस्तु ।। इस मूर्ति की प्रतिष्ठा सं. 1678 में आचार्य विजयदेवसूरि के उपदेश से पं. वेला पं. जय विजय, पं. तेजहर्ष ने प्रतिष्ठा कराई । (उल्लेखानुसार)

उक्त प्रकार से प्रतिष्ठा जिर्णोद्धार का कार्य प्रारम्भ से लेकर से 1900 तक विभिन्न आचार्यो की निश्रा में होता रहा जिसका जैन साहित्य व शिलालेख में वर्णन है । उदारहण सं 1552 वर्ष मिगशर सुदि 9 गुरू, सं. 1556 वर्षे वै. सुदि 6 शनौ, सं. 1556 वर्षे वै. सुदि .... सं. 1501 ज्ये. सुदि 10, सं. 158– वर्षे माघ सुदि 10,

कई स्तम्भों पर लेख उत्कीर्ण है जो समय समय पर संघ आए उन्होने अपनी यादगार के लिए लेख उत्कीर्ण कराए।

चतुर्थ द्वार के ऊपर झरोखे के पास एक शिवलिंग के आकार का पाषाण पर एक खड़ी मूर्ति बनी हुई है जिसके लिए कहा जाता है कि वह मूर्ति रत्नाशाह की है। यह मेघनाथ मण्डप उनके द्वारा ही निर्मित है इस पर सं. 1743 का लेख है। इसका जिर्णोद्वार सं. 2009 में हुआ ।

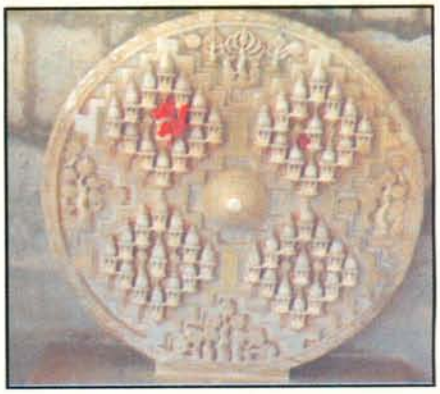

इसके दोनो ओर की दीवार पर नन्दीश्वर द्वीप व जम्मूद्वीप के चित्र उत्कीर्ण है जो काफी सुंदर कारीगरी का प्रतीक है

झरोखो के बाहरी ओर की दीवार पर एक प्राचीन व सुंदर सरस्वती देवी की आकृति उत्कीर्ण है। इसके सामने की ओर खुले स्थान पर एक देवरी बनी हुई है इसके बीच में चार दरवाजा का मंदिर है जिसके लिए यह बतलाया गया है कि मुस्लिम शासक में मूलनायक के पत्थर तोड़े गए थे, उन खण्डित परिकर को असली के रूप में जोड़ा गया है ।

द्वार के पास ही खण्डित तोरण परिकर पड़े हुए है जो मुस्लिम शासको द्वारा ध्वस्त किए हुए है।

उल्लेखानुसार निम्न लेख भी उत्कीर्ण है :

सं. 1551 वर्षे फाल्गुन सुदि दिने श्री उसवंशे मंहोरा गोत्रे सा. लाघा पुत्र सा.

बीरपाल भा. नेमलादे पुत्र सा. गयणाकेन भा मोतादे प्रमुख युतेन माता विमलादे पुण्यार्थ श्री चतुर्मुखी देव कुलिका कारिता

इसके अतिरिक्त भी आदिनाथ भगवान की प्रतिमा व चरण पट्ट की प्रतिष्ठा सं. 1551 में कराई जिसका लेख है–

सं. 1551 वर्षे माघ बदि 2 सोमे श्री मंडपाचल वास्तव्य श्री उश वंश शंगार सा. धर्म्मसुत सा. नरसिंग भा. मनकू कुक्षि स. सा. पूत नरदेव भार्या सोनाई पुत्ररत्न सा. संग्रासेन कायोत्सर्गस्थ श्री आदिनाथ बिंब कारित प्र. वृ. तपा श्री उदयसागर सूरिभि स्थापित श्री चतुर्मुखी प्रासादे धरण विहारे ।।श्री।।

रणकपुर मंदिर के प्रथम गुम्बज की भीतरी कलाकृति

श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, रणकपुर

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, रणकपुर के सामने श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर स्थापित है। ऐसा कहा जाता है कि इस मंदिर के मूल मंदिर को निर्माण करने वाले कारीगरों ने बची हुई सामग्री का उपयोग कर निर्माण किया है यह मंदिर भी मूल मंदिर (श्री आदिनाथ का) निर्माण होने के बाद ही निर्मित है। अत: करीब 600 वर्ष प्राचीन है।

इस मंदिर में श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की भव्य सुंदर परिकर के प्रतिमा है। यह मंदिर साधारण कृति का है भीतर कोई कलात्मक कार्य नही है लेकिन बाहर शिखर (परिक्रमा क्षेत्र) में अश्लील कलाकृति है। **इसको पातरियों का मंदिर भी कहा जाता है** इस कला का वर्णन पूर्व में किया जा चुका है। इसके बाहरी भाग में एक तहखाना भी है जिसमें तीर्थंकर भगवान की प्रतिमाएं होने का अनुमान है। इस मंदिर मे कुल 26 प्रतिमाएं व एक शत्रुंजय अवतार का पट्ट है।

मंदिर के बाहर ही पास एक परिसर में गणेश, हनुमान व अम्बिका आदि प्रतिमाएं स्थापित है ।

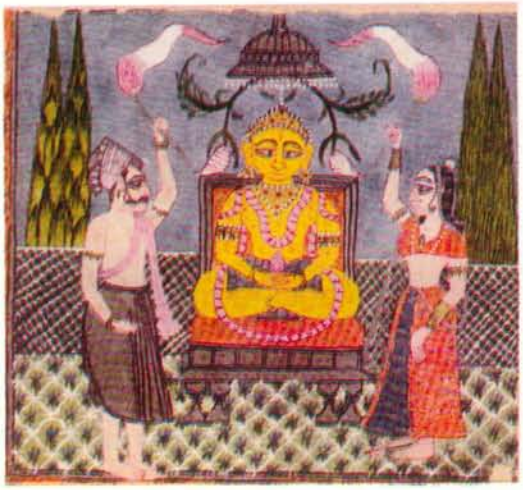

श्री जिनेश्वर भगवान का हस्तनिर्मित संग्रहित प्राचीन चित्र

श्री नेमिनाथ भगवान का मंदिर रणकपुर

श्री पार्श्वनाथ भगवान के मंदिर के पीछे ही यह शिखर बंद श्री नेमिनाथ भगवान का मंदिर स्थापित है इस मंदिर को भी श्री आदिनाथ भगवान मंदिर के निर्माण के बाद बची हुई साम्रगी से कारीगरों ने निर्माण किया है।

श्री नेमिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की प्रतिमा मय सुंदर परिकर के विराजमान है। बाहर सभामण्डप में कुल 17 प्रतिमाएं है। बाहर सभामण्डप (श्रृंगार चौकी) है जिसमें 17 स्तम्भ है इस मंदिर में भी कोई कलाकृति नही है केवल शिखर के नीचले भाग में अश्लील चित्रों की कला है। इसका पूर्ण विवरण प्रस्तुत किया जा चुका है।

मंदिर के कुछ ही दूरी पर शत्रुंजय तीर्थ की रचना की गई है अवलोकन से ऐसा प्रतीत होता है कि इसका कार्य अपूर्ण है कार्य करने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त भी करीब 1 किमी. दूरी पर चक्रेश्वरी देवी का मंदिर होने का उल्लेख है।

ध्वजा – मंदिर की वार्षिक ध्वजा फाल्गुन सुदि 5 को चढ़ाई जाती है। फाल्गुन सुदि 5 को यहां

मेला लगता है। ध्वजा परम्परा से निर्माणकर्ता (धरणाशाह) के परिवार के सदस्यों द्वारा चढ़ाई जाती है इस परिवार की जानकारी के आधार पर 16 वी पीढ़ी चल रही है। वर्तमान में एक सदस्य उदयपुर, तीन परिवार घाणेराव में है जो मूल में तीन भाईयों का परिवार है। श्री रत्नाशाह का परिवार माण्डलगढ़ चला गया यहाँ धरणाशाह के पुत्र जाखा के वंशज में राजा व खेता की संताने है । निर्माणकर्ता के वंशज को ध्वजा चढ़ाने का अधिकार होने से परिवार की भावी पीढ़ी सदस्यो में संस्कार के बीज अंकुरित होते रहे। वर्तमान में धरणाशाह के वंशज में सर्वश्री पुखराज के पुत्र विमलचंद, शांतिलाल, मांगीलाल पुत्र जुगराज, रमेशचन्द्र, दिनेश, शोभचंद के पुत्र सुरेश, प्रवीण तथा श्री कस्तुरचंद के पुत्र मिठालाल एवं सज्जनलाल, मिठालाल के पुत्र रविन्द्रकुमार, हरीश है। ये परिवार ही ध्वजा, पक्षाल पूजा व आरती करते हैं तथा एक दिन पूर्व की अर्थात चतुर्थी की आरती की यही परिवार करते आ रहे हैं।

इसी प्रकार पूजा करने वाले पुजारियों की भी 16 वीं पीढ़ी चल रही है यद्यपि पुजारियों की वंश परम्परा में चार भाई का परिवार है जो समय समय पर अपने अपने वारा (टर्न) के अनुसार पूजा करते है। इस मंदिर की विशेषता है कि यहां मंदिर में कोई भण्डार नही है केवल खुली थाली रखी जाती है जो भी सदस्य भावना सहित चढ़ाता है वे पूजारी व उनके परिवार का होता है इसमें पेढ़ी का कोई अधिकार नही रहता । यहाँ पर पुजारियों को कोई वेतन नही दिया जाता है।

यद्यापि ऐसा कोई साहित्य लेख शिलालेख उपलब्ध नहीं हुआ है कि पूजारी परम्परागत रूप से कार्य करेगे केवल यही व्यवस्था 650 वर्षो से निरन्तर चल रही है उसको झुठलाया भी नहीं जा सकता।

व्यवस्था– सर्व प्रथम इस मंदिर की व्यवस्था हमीर भाई हठीसिंह द्वारा की जाती थी वे भारत के कई जैन मंदिरों की व्यवस्था देखते थे परन्तु बाद में सादड़ी जैन समाज में इसकी व्यवस्था सम्भाली लेकिन आपसी सूझबूझ की कमी के कारण व्यवस्था समुचित नही रही। आंनदजी कल्याणजी की पेढी ने सम्भाली। प.पू. आचार्य श्री धर्मसूरिश्वरजी म.सा. के समझाने पर सादड़ी समाज को व्यवस्था दी लेकिन व्यवस्था समुचित नहीं हो सकी। पुनः वि.सं. 1965 में आंनदजी कल्याणजी पेढी ने सम्भाली जो अब तक चली आ रही है।

सम्पर्क सूत्र : राणकपुर फोन : 02934–285019

नोट :

1. धरणाशाह ने सर्वप्रथम मंदिर, धर्मशाला, अनेक चौक, कक्ष, भोजनशाला व प्रवचन हॉल बनाए । इन सभी की प्रतिष्ठा एक ही दिन सं. 1498 फागण वदी 5 को हुई ।
2. श्री शुभचंद्र (धरणाशाह वंशज) ट्रस्टी होने के साथ–साथ आनंद जी कल्याणजी की पेढ़ी के भी ट्रस्टी रहे, वे राणकपुर मंदिर के विकास के लिए समर्पित थे, वर्तमान का पेढ़ी कार्यालय का निर्माण श्री शुभचंद्र ने अपने स्वद्रव्य से कराया । इनका देहान्त भी राणकपुर में ही हुआ ।
3. वर्ष 2012 में ही दिनांक 19.12.12 से 26.12.12 तक का छःरि पालित संघ का आयोजन ट्रस्टी श्री मिठालाल ने किया जायेगा ।

जैन चित्रकला का इतिहास

भारतीय चित्रकला के इतिहास में जैन चित्रकला भी अपना एक स्वतन्त्र स्थान रखती है । मुगलकालीन समय के पूर्व भारत में चित्रकला का भाव रहा है लेकिन मेवाड़ जो स्वतंत्र राज्य था, चित्रकला में प्रसिद्ध रहा है। चित्रकला का प्रदर्शन राजमहल के दीवारों, ताड़पत्र पर अंकित की जाती थी ।जो आज भी कहीं कहीं दिखाई देती है ।

वर्तमान में जैन के कई शास्त्र जैसे कल्पसूत्र, उत्तराध्ययन, ज्ञातासूत्र के भी कुछ अंश चित्रों में प्रस्तुत हुए।यहां तक 15–16 वीं शताब्दी में हो काव्य भी भक्तामर काव्य, कथा आदि सचित्र प्रस्तुत है ।यहां तक भी अहमदाबाद में स्थित अहमदाबाद के ज्ञान भण्डार में सुरक्षित कल्पसूत्र का मूल्य एक लाख बताया गया है ।

जैन समाज मे आचार्यो का एक विशिष्ट स्थान रहा है ।उनको आमंत्रण पत्र भी सचित्र भेजा जाता रहा है जिसमें राजमहल, मंदिर, तालाब, त्यौहारों की झलक, मुख्य मार्गो का मुख्य स्थानों का सुंदर चित्रण का वर्णन किया है ।यह परम्परा सं. 1430 के पश्चात् सं. 1916 तक चलता रहा ।

मेवाड़ में मध्यकालीन भारत में चित्रकला का सूत्रपात हुआ ।सर्वप्रथम सन् 1260 में रचित सचित्र प्रतिक्रमण व चूणि नामक ग्रंथ में चित्रण किया। वि. सं. 1423 में देलवाड़ा (मेवाड़) में सचित्र "सुपारसनाचार्य" में आकृतियां गुजरशैली की है ।सन् 1536 का कल्पसूत्र सरस्वती भवन में संरक्षित है वह भी इसी शैली की है ।

आगम प्रभाकर श्री पुण्यविजय जी म.सा. एवं विद्धानों द्वारा संकलित संग्रहित किये हुए चित्र जो 11वीं शताब्दी से लेकर 16 वीं शताब्दी तक के हैं, उन्हें कतिपय मंदिरों की जानकारी के बाद अंत में सचित्र दर्शाया गया है ।

जीवन जीना और जीवन जीतना
यह दोनो अलग-अलग बात है
उनमें पहला काम तो समय ही कर देगा..
मगर दुसरा काम हमें स्वयं करना होगा...
जीवन जीतने की सही शैली को कहते हैं....

''संदर्भित पुस्तकों की सूची'

(1) उदयपुर राज्य का इतिहास – लेखक श्री गौरीशंकर ओझा।
(2) राजस्थान के प्रसिद्ध दुर्ग – लेखक दीनदयाल ।
(3) Mewar through Ages by D. L. Paliwal
(4) श्री सोहनलाल जी सुराणा निवासी सेवाणी द्वारा संकलित लेखन सामग्री।
(5) ऐतिहासिक स्थानावली लेखक विजयेन्द्र कुमार माथुर।
(6) जैन तीर्थ सर्व संग्रह – राजपूताना गजेटियर 1880 पृष्ठ 52 प्रकाशन सेठ आनंदजी कल्याणजी जवेरीवाड़, अहमदाबाद
(7) तीर्थ दर्शन – श्री जैन प्रार्थना मंदिर ट्रस्ट चैन्नई
(8) लेख संग्रह– श्री पुनमचंद नाहर
(9) More Docuemnt of Jain Painting & Gujrati Painting of Sixteen & Late
(10) स्थूलिभद्र संदेश – माह जुलाई, 2011
(11) कल्याण माह नवम्बर – माह जुलाई, 2011
(12) श्री नारायणलाल शर्मा शिक्षाविद् एवं लेखक द्वारा प्रदत्त लेखन सामग्री ।
(13) Enjoy Jainsim
(14) Diamond Diary
(15) Story & Story
(16) Life Style

आशीर्वाद –
प.पू. आचार्यश्री हेमचन्द्रसूरिश्वर जी म.सा.
सम्पादित
प.पू. आचार्यश्री कल्याणबोधिसूरिश्वर जी म.सा.

(17) भारतीय इतिहास में जैन स्त्रोत में प्रकाशित शोध पत्र द्वारा डॉ. बृजामोहन जावलिया
प्रकाशन : भारतीय इतिहास संकलन समिति, चित्तौड़गढ़
(18) जिनेन्दु साप्ताहिक पत्रिका दिनांक 7.7.12 का अंक
(19) कला मंदिर राणकपुर
(20) श्री सम्मे अ शैलं तमहं थुणामि – डॉ. शैफाली शाह
(21) प्रागवाट इतिहास – श्री दौलतसिंह लोढ़ा

मेवाड़ के जैन तीर्थ – भाग 1 में आवश्यक आवश्यक संशोधन

मटूण– पृष्ठ 164 मंदिर की वार्षिक ध्वजा सुदि के स्थान पर वदि पढ़ा जावे।

मेवाड़ के जैन तीर्थ भाग–2 में आवश्यक संशोधन

अरनोद– पृष्ठ 252 मंदिर का निर्माण लक्ष्मीचंद के स्थान पर श्री रतनलाल पुत्र लक्ष्मीचंद जी

पृष्ठ 79 मूलनायक की प्रतिमा श्याम न होकर श्वेत है। अतः श्याम के स्थान पर श्वेत पढ़ा जावें।

पृष्ठ 128 मूलनायक की प्रतिमा श्याम के स्थान पर श्वेत पढ़ा जावे।

पृष्ठ 267 बड़ी सांखली मंदिर ''सभामण्डप के बिन्दु नोट पर ''मंदिर की 80 बीघा जमीन के स्थान पर 13 बीघा पढ़ी जावे।

लेखक का परिचय

नाम
मोहनलाल बोल्या

माता-पिता
स्व. श्रीमती गुलाब कुँवर
स्व. श्री रोशनलाल जी बोल्या

जन्म स्थल
उदयपुर

जन्म दिनांक
15 जून, 1936

शिक्षा
एम. ए. (समाजशास्त्र)

व्यवसाय
राज्य सेवा से सेवानिवृत अधिकारी

धर्म, सम्प्रदाय
जैन धर्म, श्री मूर्तिपूजक समाज

प्रकाशित-सम्पादित पुस्तकों की सूची

1. श्री उदयपुर नगर के जैन श्वेताम्बर मंदिर एवं मेवाड़ के जैन तीर्थ
2. मेवाड़ का प्राचीन तीर्थ- देलवाड़ा के जैन मंदिर
3. श्री जैन श्वेताम्बर तीर्थ श्री केसरिया जी
4. णमोकार महामंत्र-स्मारिका (सह संपादन)
5. मेवाड़ के जैन तीर्थ-1
5. मेवाड़ के जैन तीर्थ-2
6. णमोकार महामंत्र- (मौन साधना मंत्र)